[श्री टोडरमल ग्रन्थमाला का उन्नीसवां पुष्प]

वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका



लेखक व सम्पादक :

डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच.डी.

ए-४, टोडरमल स्मारक भवन, बापूनगर, जयपुर ३०२०१५

प्रकाशक :

मंत्री, पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-४, बापूनगर, जयपुर ३०२०१५ (राज०)

प्रथम तीन आवृत्ति ६२००

चतुर्थ आवृत्ति २२००

दिनांक ९ फरवरी १९८६ (कविवर [illegible] स्मृति)

मूल्य ५ ०० रुपये

मुद्रक
इण्डिया प्रिन्टर्स
दिल्ली-६

निवेदन

(प्रथमावृत्ति)

पडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा गठित पाठ्यक्रम समिति ने कोमलमति वालकों को तत्त्ववोध कराने के उद्देश्य से एक नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया था एवं तदनुरूप पाठ्य-पुस्तकें भी तैयार कराईं तथा उनकी परीक्षा लेने हेतु वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की भी स्थापना की गई।

कुशल अध्यापन हेतु अध्यापक बन्धुओ को प्रशिक्षित करने के लिये भी प्रशिक्षरण-शिविर की एक योजना तैयार की गई—जिसके माध्यम से ग्रीष्मावकाश मे २० दिन के शिविरो द्वारा उनको अध्यापन की प्रायोगिक और सैद्धान्तिक पद्धति से परिचित कराया जाता है।

अभी तक दो प्रशिक्षरण-शिविर हो चुके हैं। प्रथम शिविर जून, १९६९ मे श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर मे हुआ। इसमे भारत के विभिन्न प्रान्तो से समागत ५० अध्यापक बन्धुओ ने वालवोध-प्रशिक्षरण प्राप्त किया। दूसरा शिविर जून, १९७० मे विदिशा (मध्यप्रदेश) मे हुआ कि जिसमे विभिन्न प्रान्तो से समागत ७० अध्यापको ने वालवोध-प्रशिक्षरण एव ३२ अध्यापको ने प्रवेशिका प्रशिक्षरण प्राप्त किया।

सस्था के सुयोग्य एवं उत्साही सयुक्तमत्री श्री पं० हुकमचन्दजी शास्त्री ने स्वय ही प्रशिक्षरण-शिविर की योजना तैयार की थी एव तदर्थ स्वतन्त्र रूप से आवश्यक नोट्स आदि तैयार करके २ वर्ष तक उन्ही नोट्स के आधार पर अध्यापन किया। उपरोक्त प्रशिक्षणकाल मे यह अनुभव किया गया कि आवश्यक निर्देश लिखने-लिखाने मे वहुत-सा अमूल्य समय व्यर्थ चला जाता है, अत. अगर एक पाठ्यपुस्तक तैयार हो जावे तो ऐसे बहुमूल्य समय का विशेष उपयोग हो सके।

उक्त दोनो शिविरों की अभूतपूर्व सफलता से उत्साहित होकर हमने इस वर्ष १९७१ के मई-जून मे होने वाले शिविर में जिनवाणी के प्रबल प्रचारक पूज्य श्री कानजी स्वामी से पधारने का सविनय अनुरोध किया। उनकी पावन स्वीकृति मिल जाने से अति उत्साहित होकर समिति ने विचार किया कि इस वर्ष ही प्रशिक्षण की पाठ्यपुस्तक तैयार करके प्रकाशित की जावे और यह गुरुत्तर भार श्री प० हुकमचंदजी को सौपा गया। परिणामस्वरूप प्रस्तुत कृति आपके सामने है।

श्री पं० रतनचन्दजी शास्त्री ने हमारे प्रशिक्षण-शिविरो के संभालने मे बहुत सहयोग दिया तथा गत वर्ष के शिविर में तो स्वतन्त्र रूप से बालबोध-प्रशिक्षण का अध्यापन कार्य संचालन कर हमारे भार को हल्का किया। उक्त दोनों महानुभावों के हम बहुत आभारी हैं।

आशा है, अध्यापक बंधु इस निर्देशिका से लाभ उठा कर हमारे प्रयास को सार्थक बनावेंगे।

निवेदक :

नेमीचन्द पाटनी	पूरणचन्द गोदीका
मन्त्री	अध्यक्ष

प्रकाशकीय

जैसा कि प्रथमावृत्ति के निवेदन से स्पष्ट है, प्रशिक्षण-शिविरों के माध्यम से धार्मिक तत्त्वज्ञान के अध्यापन में अध्यापक बंधुओं को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रशिक्षण-शिविरो की पावन परम्परा में स्व० पूज्य श्री कानजी स्वामी के सान्निध्य में सम्पन्न तृतीय प्रशिक्षण-शिविर के पुनीत अवसर पर दिनांक १६ मई, १९७१ ई० को प्रस्तुत पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था।

उसके बाद अब तक आगरा, विदिशा, मलकापुर छिन्दवाड़ा कोटा, सोलापुर, ललितपुर, प्रस्तिान, उदयपुर, अजमेर; वाशिम, फिरोजाबाद, इन्दौर, भीलवाड़ा, भिण्ड, सागर एवं अहमदाबाद में - इस प्रकार कुल २० प्रशिक्षण शिविर लग चुके हैं जिसमें ३६४६ अध्यापक प्रशिक्षित हो चुके है। उक्त शिवरों में प्रस्तुत पुस्तक का पूरा-पूरा उपयोग हुआ है तथा इसकी उपादेयता एव उपयोगिता देख कर सर्वत्र इसकी सराहना व स्वागत हुआ है।

संस्था के सुयोग्य संयुक्तमन्त्री व प्रशिक्षण-शिविरों के कुशल संचालक डॉ० हुकमचन्द जी भारिल्ल द्वारा संशोधित एवं परिवर्धित द्वितीय सस्करण सन् १९७५ में प्रकाशित किया गया था, जिसमे गत प्रशिक्षण शिविरो मे प्राप्त अनुभवो के साथ-ही-साथ प्रशिक्षण-शिविरो के प्रशिक्षक पण्डित रतनचन्द जी शास्त्री, न्यायतीर्थ, एम० ए०, बी०एड० द्वारा उसी समय प्राप्त बी० एड० के प्रशिक्षण का भी पूरा-पूरा लाभ लिया गया है, अतः हम उनके अत्यन्त आभारी है। डॉ० भारिल्लजी का तो क्या आभार मानें वे तो इस संस्था के व प्रशिक्षण-शिविरों के प्राण ही हैं।

तृतीय संस्करण भी समाप्त हो जाने के कारण कविवर बनारसीदास जी के ४०० वें जन्म दिवस समारोह के अवसर पर यह चतुर्थ संस्क्रण आपके समक्ष प्रस्तुत है।

आशा है पुस्तक की सहायता से प्रशिक्षित अध्यापकों के माध्यम से जन-जन वीतराग-विज्ञान के संस्कारों से अनुप्राणित होगा।

मन्त्री पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-४ बापूनगर, जयपुर-१५

विषय-सूची

वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १—२—३ की आदर्श पाठ-योजनाओं व पाठ-निर्देशों की तालिका

पाठ संख्या	वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १		वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २		वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३	
	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-निर्देश	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-निर्देश	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-निर्देश	पृष्ठ संख्या
१	आदर्श पाठ-योजना १	९५	पाठ-निर्देश ८	१३७	पाठ-निर्देश १७	१४९
२	पाठ-निर्देश १	१२८	आदर्श पाठ-योजना २	१०६	पाठ-निर्देश १८	१५०
३	पाठ-निर्देश २	१२९	पाठ-निर्देश ९	१३८	पाठ-निर्देश १९	१५२
४	पाठ-निर्देश ३	१३२	पाठ-निर्देश १०	१४०	पाठ-निर्देश २०	१५३
५	पाठ-निर्देश ४	१३३	पाठ-निर्देश ११	१४२	आदर्श पाठ-योजना ३	११७
६	पाठ-निर्देश ५	१३५	पाठ-निर्देश १२	१४३	पाठ-निर्देश २१	१५४
७	पाठ-निर्देश ६	१३६	पाठ-निर्देश १३	१४४	पाठ-निर्देश २२	१५५
८	पाठ-निर्देश ७	१३६	पाठ-निर्देश १४	१४५	पाठ-निर्देश २३	१५६
९	—	—	पाठ-निर्देश १५	१४६	पाठ-निर्देश २४	१५८
१०	—	—	पाठ-निर्देश १६	१४८	पाठ-निर्देश २५	१५९
११	—	—	—	—	पाठ-निर्देश २६	१६१

बालबोध पाठमाला भाग १—२—३ के पाठों की आदर्श पाठ-योजनाओं व पाठ-निर्देशों की तालिका

पाठ संख्या	बालबोध पाठमाला भाग १		बालबोध पाठमाला भाग २		बालबोध पाठमाला भाग ३	
	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-निर्देश	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-निर्देश	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-निर्देश	पृष्ठ संख्या
१	पाठ-निर्देश १	६६	पाठ-निर्देश ८	७१	आदर्श पाठ-योजना २	३३
२	पाठ-निर्देश २	६७	पाठ-निर्देश ९	७२	आदर्श पाठ-योजना ३	४२
३	पाठ-निर्देश ३	६७	पाठ-निर्देश १०	७३	पाठ-निर्देश १५	७७
४	पाठ-निर्देश ४	६८	आदर्श पाठ-योजना ४	५१	पाठ-निर्देश १६	७८
५	पाठ-निर्देश ५	६९	पाठ-निर्देश ११	७४	पाठ-निर्देश १७	७९
६	पाठ-निर्देश ६	७०	पाठ-निर्देश १२	७४	आदर्श पाठ-योजना १	२३
७	आदर्श पाठ-योजना ५	५९	पाठ-निर्देश १३	७५	पाठ-निर्देश १८	८०
८	पाठ-निर्देश ७	७०	पाठ-निर्देश १४	७६	पाठ-निर्देश १९	८०



वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका

मंगलाचरण

दोहा—आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान ।
विश्वशान्ति का मूल है, वीतराग-विज्ञान ।।१।।

वीतराग-विज्ञानमय, स्वातम का धरि ध्यान ।
बने बनेंगे, बन रहे, वीतराग भगवान ।।२।।

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक मे सार ।
वीतराग-विज्ञान का, घर घर होय प्रसार ।।३।।

सोरठा—घट घट आतमज्ञान, प्राप्ति हेतु यह लिख रहा ।
वीतराग-विज्ञान, प्रशिक्षण निर्देशिका ।।४।।

विषय-प्रवेश

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ का उद्देश्य वीतराग-विज्ञान को घर-घर पहुँचाना है । यह शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है । तदर्थ देश मे अनेक स्थानो पर जैन स्कूलों व पाठशालाओ मे वीतराग-विज्ञान का शिक्षण चल रहा है व स्थान-स्थान पर नई वीतराग-विज्ञान पाठशालाएँ खुल रही हैं ।

वैसे तो प्रत्येक कार्य को ही सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए व्यवस्थित वैज्ञानिक विधि और तत्संबंधी कार्यकुशलता आवश्यक है, किन्तु शिक्षा के क्षेत्र मे यह अनिवार्य है। आधुनिक शिक्षा-पद्धति मे अनेक वैज्ञानिक परिवर्तन हुये हैं और निरन्तर हो रहे है। वीतराग-विज्ञान की शिक्षण-पद्धति मे भी तदनुरूप परिवर्तन अपेक्षित है।

आज हमे ऐसे योग्य अध्यापकों की आवश्यकता है जो (१) बालकों मे वीतराग-विज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर सकें (२) उन्हे सामान्य तत्त्वज्ञान करा सके तथा (३) सदाचार से युक्त नैतिक जीवन विताने के लिए प्रेरित कर सकें।

लौकिक शिक्षा-पद्धति मे कुशलता प्राप्त करने के लिये एक या दो वर्ष का प्रशिक्षण-काल रहता है, किन्तु धार्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये इतना समय देना आज के व्यस्त जीवन मे असंभव-सा लगने लगा है। अत. ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय २० दिन के शिविरो के द्वारा वीतराग-विज्ञान के अध्यापकों को प्रशिक्षण देने का काम चालू किया गया है। यह प्रशिक्षण निम्न तीन शिविरो के माध्यम से पूरा होने का है :—

(१) बालबोध प्रशिक्षण
(२) प्रवेशिका प्रशिक्षण
*(३) प्रशिक्षण विशारद

प्रशिक्षण की सुविधा की दृष्टि से इस योजना को पुस्तकाकार लिपिबद्ध करना आवश्यक प्रतीत हुआ, तदर्थ बालबोध व प्रवेशिका प्रशिक्षण से सम्बन्धित यह प्रथम प्रयास है।

यह पुस्तिका तीन अध्यायो मे विभाजित है —

प्रथम अध्याय मे प्रशिक्षण सम्बन्धी सामान्य जानकारी है।

द्वितीय अध्याय मे बालबोध प्रशिक्षण सम्बन्धी विश्लेषण एवं तत्संबंधित पाठ-योजनाएँ तथा पाठ-निर्देश है।

तृतीय अध्याय प्रवेशिका प्रशिक्षण से सम्बन्धित है।

द्वितीय व तृतीय अध्याय के एक-एक परिशिष्ट अन्त मे दिये गये हैं जिनमें तत्संबंधित विशेष जानकारी है।

---

* 'प्रशिक्षण विशारद' सम्बन्धी पुस्तिका बाद मे प्रकाशित करने की योजना है।

अध्याय प्रथम

प्रशिक्षण संबंधी सामान्य ज्ञान

शिक्षण त्रिमुखी प्रक्रिया है। उसके तीन केन्द्र विन्दु होते हैं—शिक्षक, छात्र और विषय। इन तीनो मे सवध स्थापित करना ही शिक्षण है। इस सवध को स्थापित करने का पूरा-पूरा दायित्व शिक्षक पर है। अत. शिक्षण की सफलता सुयोग्य शिक्षको पर निर्भर है।

स्वयं ज्ञानार्जन करना अलग बात है और प्राप्त ज्ञान को दूसरो तक पहुँचाना दूसरी बात है। नितान्त अनभिज्ञ छात्रो को वाछित विषय हृदयगम करा देना सहज कार्य नही है। इसके लिए अध्यापक का जागरूक, मननशील व मनोवैज्ञानिक होना आवश्यक है। एक कुशल अध्यापक को निम्नलिखित बातो को सदैव ध्यान मे रखना चाहिये .—

(१) कक्षा मे सर्वप्रथम बोर्ड पर नाम कक्षा, विषय, प्रकरण एव दिनाक लिख देना चाहिये।

(२) कक्षा मे अध्यापक की दृष्टि छात्रो पर रहनी चाहिये।

(३) अध्यापक को न तो अति मद स्वर मे ही बोलना चाहिये, न अति तेज मे। सब छात्र आसानी से सुन सके, इस प्रकार के मध्यम स्वर मे स्पष्ट बोलना चाहिये।

(४) छात्रो के स्तर एवं पूर्व-ज्ञान को आधार मानकर [illegible] बात समझानी चाहिये।

(५) विषय को इस तरह उठाना चाहिये कि छात्रों मे प्रस्तुत विषय को जानने की जिज्ञासा जागृत हो।

(६) सरलता से कठिनता की ओर जाना चाहिये। जैसे–जीव और अजीव का भेद-विज्ञान कराते समय पहले स्पष्ट अजीव–टेवल, कुर्सी आदि का ज्ञान कराना, पश्चात् जीव के संयोग मे रहने वाले शरीर, इन्द्रियाँ आदि अजीव का ज्ञान कराना।

(७) उदाहरण से सिद्धान्त की ओर जाना चाहिये।

(८) ज्ञात से अज्ञात की ओर जाना चाहिये। जैसे–बिल्ली के माध्यम से शेर की पहचान कराना। अथवा चित्र के माध्यम से व्यक्ति की पहचान कराना।

(९) मूर्त्त से अमूर्त्त की ओर जाना चाहिये। जैसे–सात तत्त्व को समझाने के लिये पहले स्थूल मूर्त्त नाव पर घटित करना, पश्चात् आत्मा पर घटित करके समझाना।

ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र मे ही कुछ अपने अलग पारिभाषिक शब्द होते हैं, जिनको जाने विना तत्सबंधी विशेष कथन का भाव भासित होना सभव नही है। शिक्षण-पद्धति में भी कतिपय विशेष शब्दो का विशेष अर्थ में प्रयोग होता है, जिनका ज्ञान प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को होना अत्यावश्यक है। वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण मे प्रयोग मे आने वाले प्रमुख पारिभाषिक शब्द निम्न प्रकार हैं :—

१. पाठ-योजना
२. प्रकरण
३. उद्देश्य
   (क) सामान्य उद्देश्य
   (ख) विशेष उद्देश्य
४. उद्देश्य कथन
५ पूर्व-ज्ञान
६. सामग्री
   (क) आवश्यक सामग्री
   (ख) [illegible] सामग्री
७. प्रस्तुतीकरण
८. आदर्श वाचन
   (क) संवाद शैली
   (ख) गद्य शैली
   (ग) पद्य शैली
९. अनुकरण वाचन
१०. सामान्यार्थ विवेचन
११. विचार-विश्लेषण

१२. प्रश्नोत्तर
(क) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(ग) मूल्यांकन प्रश्नोत्तर
(i) समापन मूल्यांकन
(ii) पूर्व-पाठ मूल्यांकन

१३. सारांश कथन
१४. समापन
१५. गृहकार्य
१६. अध्यापक कथन
१७. आधार-परिचय

उपरोक्त पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण व उनके विशेष निर्देशो को स्पष्टतया समझ लेना आवश्यक है। इनका विशेष स्पष्टीकरण निम्नानुसार है :—

१. पाठ-योजना

पाठ-योजना कक्षाकार्य की वह पूर्व निर्धारित योजना है, जिसमें शिक्षक पाठ के प्रयोजन और उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयोग की जाने वाली विधियों को लिखित रूप में निश्चित करता है।

पाठ-योजना अध्यापक के कार्य को नियमित, नियोजित और व्यवस्थित करती है।

२. प्रकरण

पाठ के जिस अंश का ज्ञान छात्रो को देना हो उसे प्रकरण कहते है। प्राय: पाठ के नाम को ही प्रकरण समझ लिया जाता है। पाठ का नाम भी प्रकरण हो सकता है, पर सूक्ष्मता से विचार करने पर विस्तृत सीमा को लिये हुये पाठ के अन्तर्गत कई प्रकरण हो सकते हैं। उदाहरणत 'कषाय' वाले पाठ मे यदि एक दिन मे 'क्रोध और मान' ही पढाना हो तो प्रकरण 'क्रोध और मान कषाय' दिया जाना चाहिये।

३. उद्देश्य

प्रत्येक कार्य के पीछे एक लक्ष्य (उद्देश्य) होता है। यहाँ हम उद्देश्य को दो भागो मे विभाजित कर सकते है :—

(क) सामान्य उद्देश्य (ख) विशेष उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – सामान्य उद्देश्य सब पाठो मे समान रूप से पाये जाते हैं।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – विशेष उद्देश्य पाठ-विशेष से सबधित होते हैं। ये तात्कालिक पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किये जाते है।

४. उद्देश्य कथन

छात्रो को पढाना प्रारम्भ करने के पूर्व यदि पाठ का उद्देश्य बता दिया जाय तो वे उसे अधिक रुचिपूर्वक पढते है। अत पाठ प्रारम्भ करने के पूर्व उद्देश्य अवश्य बता देना चाहिये। इसको ही उद्देश्य कथन कहते है। उद्देश्य कथन सरल, सक्षिप्त और रोचक होना चाहिये।

५. पूर्व ज्ञान

प्रस्तुत पाठ को पढाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि बालको को उक्त विषय का पहले से कितना ज्ञान है, क्योकि यह ध्यान रखे बिना दिया गया ज्ञान छात्र ग्रहण नही कर सकेंगे। पूर्व-ज्ञान जानने के लिये पाठ्यक्रम की पूर्व-पुस्तको एव पूर्व-पाठो को आधार माना जाना चाहिये।

६. सामग्री

पाठ्य-विषय को पढाने से सबधित सामग्री की पहले से ही व्यवस्था हो जानी चाहिये। इसको दो भागो मे बाटा जा सकता है –

(क) आवश्यक सामग्री (ख) सहायक सामग्री

(क) **आवश्यक सामग्री** – प्रत्येक पाठ को पढाने के लिये जिस सामान की आवश्यकता होती है, उसे आवश्यक सामग्री कहते हैं। जैसे – बोर्ड, चाक, डस्टर आदि।

(ख) **सहायक सामग्री** – पाठ-विशेष को पढाने से सबधित सामग्री को सहायक सामग्री कहते हैं। जैसे–पाठ्यपुस्तक, पाठ से सबधित नक्शा, चार्ट आदि।

७. प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुतीकरण मे किसी भी पाठ को छात्रो के समक्ष प्रस्तुत करने से पूर्व अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह तय किया जाता है कि अमुक पाठ कितने दिन मे व एक दिन मे उसका कितना भाग पढाया जायेगा। यह भी तय कर लिया जाता है कि अमुक दिन

पढाया जाने वाला पाठ कितनी अन्वितियो मे विभाजित किया जावेगा व प्रत्येक अन्विति मे कौन-कौन से सोपान होंगे ।

८. आदर्श वाचन

कक्षा मे पाठ पढाते समय पाठ्यवस्तु को अध्यापक उचित आरोह-अवरोह के साथ जो स्वय वाचन करते हैं, उसे आदर्श वाचन कहते है । आदर्श वाचन करने से पूर्व छात्रो को पुस्तक की पृष्ठ सख्या वता देना चाहिये तथा उन्हे पाठ को देखने एव आदर्श वाचन को ध्यान से सुनने की प्रेरणा देने के साथ यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि जैसे मैं यह पाठ पढ रहा हूँ वैसे ही किसी भी छात्र को अभी इसका वाचन करना होगा । ऐसा कहने से छात्र अध्यापक द्वारा किये जाने वाले वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगे । आदर्श वाचन प्राय इन तीन शैलियो मे होता है —

(क) सवाद शैली (ख) गद्य शैली (ग) पद्य शैली

(क) संवाद शैली—इस शैली मे अध्यापक अपने स्वर को इस तरह साध कर वाचिक और आंगिक अभिनय के साथ पाठ का वाचन करते है कि मानो अलग-अलग पात्र बोल रहे हो । सवाद शैली मे अध्यापक एक तरह एकपात्रीय नाटक (मोनो ऐक्टिंग) करते हैं । यहा अभिनय का आशय कक्षा को नाटक का स्टेज बना देने से नही है, बल्कि पढाने के मूलभूत विषय के साथ भावात्मक आंगिक अभिनय से है ।

(ख) गद्य शैली—इस शैली मे विराम, अर्द्धविराम, और पूर्णविराम आदि का ध्यान रखते हुये वाचन किया जाता है ।

(ग) पद्य शैली—इस शैली मे अध्यापक आवश्यक उतार-चढाव के साथ तथा छदानुसार स्वर और लय के साथ गाकर पढते है । यदि गला अच्छा न हो तो पद्य को स्वर और लय के साथ बिना गाये ही पढना ठीक रहेगा ।

९. अनुकरण वाचन

जिस पाठ का अध्यापक ने आदर्श वाचन किया है, उसे उसी के अनुकरण पर छात्रो मे से किन्ही एक, दो या अधिक छात्रो से पृथक्-पृथक् वाचन कराने को अनुकरण वाचन कहते हैं । अनुकरण वाचन

में छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों मे अध्यापक छात्रो द्वारा आवश्यक सुधार कराते हैं और अन्त मे स्वय आवश्यक निर्देश देते हैं।

संवाद शैली मे वाचन पात्रो के अनुसार एकाधिक पात्रो से सवाद के रूप मे कराना चाहिये। पर ध्यान रहे कि अनुकरण वाचन सामूहिक कभी नही कराना चाहिये, क्योकि सामूहिक अनुकरण वाचन मे छात्रों के वाचन की अशुद्धियों का पता नही चल पाता।

छोटी कक्षाओं मे पाठो को एक साथ बोलने का अभ्यास कराने के लिये अलग से सामूहिक वाचन कराया जा सकता है।

१०. सामान्यार्थ विवेचन

अनुकरण वाचन के बाद पाठ के पठित पद्याश का सामान्य अर्थ बताने को सामान्यार्थ विवेचन कहते हैं। सामान्यार्थ विवेचन मे शब्दार्थ पर विशेष जोर न दिया जाकर भावार्थ को पकडा जाता है, क्योकि भाषा-ज्ञान हमारा उद्देश्य नही है—हमे तो विषय-ज्ञान देना है। आवश्यक शब्दार्थ सामान्यार्थ के साथ-साथ यथास्थान बता देना चाहिये।

११. विचार-विश्लेषण

अनुकरण वाचन के पश्चात् पाठ के पठित गद्याश या सवादाश मे प्रतिपादित विचारो को सुबोध व सरल भाषा मे छात्रो को समझाना ही विचार-विश्लेषण है। यह तर्कसगत एव सोदाहरण होना चाहिये।

१२. प्रश्नोत्तर

पाठ व उसमे आये हुये सिद्धान्त-वाक्यो, परिभाषाओ एव तथ्य-वाक्यो का स्पष्ट ज्ञान व उनमे निहित भावो का बोध कराने व याद कराने के लिये एवं पढाया हुआ पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही अथवा पूर्व-दिन पढाये गये पाठ को छात्रो ने तैयार किया या नही—इनकी जाच के लिये प्रश्न व उत्तर अध्यापक को घर से बनाकर लाना चाहिये—इनको प्रश्नोत्तर कहते हैं। प्रश्नोत्तर तीन प्रकार के होते हैं —

(क) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(ग) मूल्यांकन प्रश्नोत्तर

(क) **बोधगम्य प्रश्नोत्तर** :—जिन सिद्धान्तों, तथ्यों एवं परिभाषाश्रो का वोध छात्रो को कराना है, उन्हे प्रश्नोत्तर में अध्यापक द्वारा लिपिवद्ध करके लाना बोधगम्य प्रश्नोत्तर कहलाता है। इस प्रकार के प्रश्न व उत्तर की शैली से छात्र विषय को सहजता से पकड सकेंगे।

(ख) **वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर** :—(1) इस पद्धति मे प्रश्नोत्तर द्वारा मौखिक अभ्यास कराया जाता है। इसमे निम्न चार सोपान रखने से पाठ तैयार कराने मे सुविधा रहती है :—

(१) है या नही ?
(२) इनमे से क्या है या कौन है ?
(३) इसको क्या कहते है ?
(४) किसे कहते है या क्या है ?

प्रयोग :—

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते हैं।	१ छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते हैं या नही ?	१ कहते हैं।
	२. छह द्रव्यो का समूह विश्व है या गुण या पर्याय ?	२. विश्व।
	३. छह द्रव्यो के समूह को क्या कहते हैं ?	३. विश्व।
	४. विश्व किसे कहते हैं ?	४. छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते हैं।

नोट—किसी-किसी परिभाषा या सिद्धान्त-वाक्य आदि से चारो सोपान लगाना सभव न हो तो तीन या दो सोपानो से अभ्यास कराया जाना चाहिये।

(11) लम्बी परिभाषाओ के तैयार कराने मे वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान न लगाकर उसे निम्नानुसार कई खण्ड-वाक्यो में विभाजित करके तैयार कराना चाहिये :—

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो गृहस्थपना त्याग कर मुनिधर्म अगीकार करके निज स्वभाव साधन द्वारा चार घाति कर्मो का नाश कर अनन्त चतुष्टय प्राप्त करते हैं उन्हे अरहन्त कहते हैं।	१ क्या त्याग कर अरहत बनते हैं ?	१ गृहस्थपना।
	२ क्या अगीकार करके अरहत बनते है ?	२ मुनिधर्म।
	३. किस साधन द्वारा अरहत बनते है ?	३ निज स्वभाव साधन द्वारा।
	४ किनका नाश करके अरहत बनते हैं ?	४ चार घाति कर्मो का।
	५ क्या प्राप्त करके अरहत बनते हैं ?	५ अनत चतुष्टय

अन्त मे परिभाषा के पाचो वाक्यो को एक साथ जमा कर परिभाषा स्पष्ट कर देनी चाहिये।

(ग) **मूल्यांकन प्रश्नोत्तरः**—पढाया गया पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही एव पूर्व-दिन पढाये गये पाठ को छात्रो ने तैयार किया या नही, इसकी जाच के लिये बनाये गये प्रश्नोत्तर मूल्याकन प्रश्नोत्तर कहलाते हैं। ये दो प्रकार के होते है —

(i) समापन मूल्याकन (ii) पूर्व-पाठ मूल्याकन

(i) **समापन मूल्यांकन**—पाठ समाप्त करने के पूर्व पढाया गया पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही, यह जानने के लिये किये गये प्रश्नोत्तरो को समापन मूल्याकन प्रश्नोत्तर कहते है।

(ii) **पूर्व-पाठ मूल्यांकन**—पूर्व दिन पढाया हुआ पाठ छात्रो ने तैयार किया है या नही, इस दृष्टि से किये गये प्रश्नोत्तरो को पूर्व-पाठ मूल्याकंन प्रश्नोत्तर कहते हैं

मूल्याकन प्रश्न पूछते समय वस्तुनिष्ठ पद्धति मे प्रयुक्त चार सोपानो को उलटा प्रयोग मे लाना चाहिये, क्योकि पढाते समय

सरलता से कठिनता की ओर जाते हैं तो मूल्याकन के समय कठिनता से सरलता की ओर जाते है, यथा :—

(४) किसे कहते है या क्या है ?

(३) इसको क्या कहते है ?

(२) इनमें से क्या है या कौन है ?

(१) है या नही ?

प्रयोग :—

परिभाषा	प्रश्न
छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते हैं।	४. विश्व किसे कहते हैं ? ३. छह द्रव्यो के समूह को क्या कहते हैं ? २. छह द्रव्यो का समूह विश्व है या गुण या पर्याय ? १ छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते हैं या नही ?

ध्यान रहे उक्त प्रयोग करते समय ४ नम्वर का प्रश्न पूछने पर यदि छात्र प्रश्न का उत्तर न दे सकें तभी नं० ३ का प्रश्न पूछा जाना चाहिये। इसी प्रकार आगे नम्वर २ व नम्वर १ के प्रश्न भी तभी पूछे जाने चाहिये जब पूर्व प्रश्नो का उत्तर देने मे छात्र असमर्थ रहे। पूर्व-प्रश्नो का उत्तर दे देने पर आगे के प्रश्न पूछना निरर्थक है।

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि समापन के मूल्याकन सम्वन्धी प्रश्नो मे और पूर्व-पठित पाठ सबधी मूल्याकन सबधी प्रश्नों मे मूलभूत अन्तर यह रहता है कि समापन सम्वन्धी प्रश्न तो पढाया गया पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही, इस लक्ष्य से किये जाते हैं और पूर्व-पाठ मूल्याकन सबधी प्रश्न छात्रो ने पाठ तैयार किया या नही, इस लक्ष्य से पूछे जाते है। अत. पूर्व-पाठ मूल्याकन प्रश्नों मे छात्रो से याद करके लाये गये छन्द भी सुने जा सकते हैं। समापन सम्वन्धी प्रश्नो के उत्तर यदि छात्र न दे सके तो पुस्तक मे से देखकर उत्तर देने को कहा जावे।

१३. सारांश कथन

अन्त मे पाठ्यवस्तु का सक्षेप साराश बताना चाहिये तथा परिभाषाओ व मूल सिद्धान्तो को दुहरा देना चाहिये। यह साराश कथन कहलाता है।

१४. समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व पढाये गये पाठ मे से छात्रो से कुछ मूल्याकन प्रश्न किये जाने चाहिये जिनसे पता चल सके कि अभीष्ट वस्तु छात्रो की समझ मे आई है या नही। यदि सतोषजनक उत्तर न मिले तो उक्त विषय को अगले दिन विशेष स्पष्ट करना चाहिये। ध्यान रहे कि मूल्याकन प्रश्नोत्तर पद्धति मे वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो का उलटा प्रयोग होता है।

१५. गृहकार्य

पाठ की समाप्ति पर पाठ से सम्बन्धित आवश्यक कार्य अगले दिन करके लाने के लिये दिया जाना चाहिये। गृहकार्य की जाँच अवश्य होनी चाहिये ताकि छात्र इस ओर उदासीनता न बरतें। पाठ मे आईं आवश्यक परिभाषाएँ, सिद्धान्त-वाक्य, भेद-प्रभेद एव छन्द आदि याद करके लाने को भी कहा जाना चाहिये।

१६. अध्यापक कथन

अध्यापक पाठ-योजना मे समझाने के लिये जो आवश्यक कथन यथास्थान नोट करते हैं, उन्हे अध्यापन कथन कहते हैं, इनके नोट करने से समझाया जाने वाला विषय व्यवस्थित हो जाता है। इसकी आवश्यकता प्राय सामान्यार्थ विवेचन, विचार-विश्लेषण, साराश कथन, समापन एव गृहकार्य आदि मे पडती है।

१७. आधार-परिचय

वीतराग-विज्ञान पाठमालाओ मे जो पाठ प्रतिष्ठित आचार्यो एव विद्वानो द्वारा रचित महान् ग्रथो के आधार पर लिखे गये हैं, उन पाठो को पढाते समय उनके आधारग्रथो एव ग्रथकारो का परिचय देना ही आधार-परिचय है।

अध्याय द्वितीय

बालबोध प्रशिक्षण

बालबोध प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की बालबोध परीक्षा मे निर्धारित बालबोध पाठमालाओ के अध्यापन की पद्धति मे अध्यापक बन्धुओ को प्रशिक्षित करना एव उसमे प्रतिपादित प्रमुख तात्त्विक सिद्धान्तो की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना है ।

बालबोध प्रशिक्षण सम्बन्धी उद्देश्य दो भागो मे विभाजित किए जा सकते है —

(क) सामान्य उद्देश्य (ख) विशेष उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य—सामान्य उद्देश्य वे हैं जो बालबोध मे पढाये जाने वाले सभी पाठो मे सामान्य रूप से रहते है । वे मुख्यत: निम्नानुसार है :—

(i) छात्रो मे आत्महितकारी शास्त्रो के पढने की रुचि जाग्रत करना ।

(ii) तत्त्वज्ञान और सदाचार सम्बन्धी ज्ञान कराना ।

(iii) चारो अनुयोगो का समन्वित ज्ञान देना ।

(iv) अपने धर्म-पूर्वजो के संबध मे सामान्य जानकारी देना ।

(v) सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(vi) बालको का सदाचार से युक्त नैतिक जीवन बनाना।

(vii) प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दों मे व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न करना।

(ख) विशेष उद्देश्य—विशेष उद्देश्य पढाये जाने वाले पाठ से सम्बन्धित होते हैं। अत. ये प्रत्येक पाठ के अलग-अलग होते हैं एव पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किये जाते है। इन्हे यथास्थान स्पष्ट किया जावेगा।

बालबोध पाठमालाओ के पाठो का पद्य, गद्य और सवाद के रूप मे तीन प्रकार से एवं अनुयोगो के रूप मे चार प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है तथा आदर्श पाठ-योजनाएँ बनाते समय बालबोध पाठमालाओ के तीनो भागो का प्रतिनिधित्व होना भी आवश्यक है। इन सब बातो का ध्यान रखते हुये इस अध्याय मे निम्न पाँच पाठ-योजनाएँ दी जा रही हैं :—

(१) द्रव्य गुण पर्याय

(२) देवदर्शन

(३) पचपरमेष्ठी

(४) सदाचार

(५) भगवान आदिनाथ

वैसे तो प्राय. सभी पाठो की योजना बनाने की विधि मे कोई विशेष अन्तर नही रहता है किन्तु विषय-विलक्षणता की दृष्टि से कुछ परिवर्तन तो हो ही जाते हैं। जैसे कि पद्य-पाठो मे सामान्यार्थ विवेचन किया जाता है तो गद्य और संवाद-पाठो मे विचार-विश्लेषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वैसे तो पद्य-पाठो मे भी विचारो का विश्लेषण आवश्यकतानुसार किया ही जाता है और गद्य-पाठो में भी सामान्यार्थ बता दिया जाता है, पर मुख्यत और गौणता की अपेक्षा [illegible] है। यत गद्य और संवाद पाठो मे विचार-विश्लेषण [illegible] दिया गया है और पद्य-पाठो मे उसके स्थान पर सामान्यार्थ विवेचन।

आदर्श पाठ-योजना १

(द्रव्य गुण पर्याय)

स्थान—श्री महावीर दि. जैन उ. माध्यमिक विद्यालय, जयपुर,

कक्षा—बालबोध तृतीय खंड

प्रकरण—"द्रव्य गुण पर्याय"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य**—तत्त्वज्ञान संबंधी सामान्य जानकारी देना और उससे होने वाले लाभ बताकर उसके प्रति रुचि उत्पन्न करना।

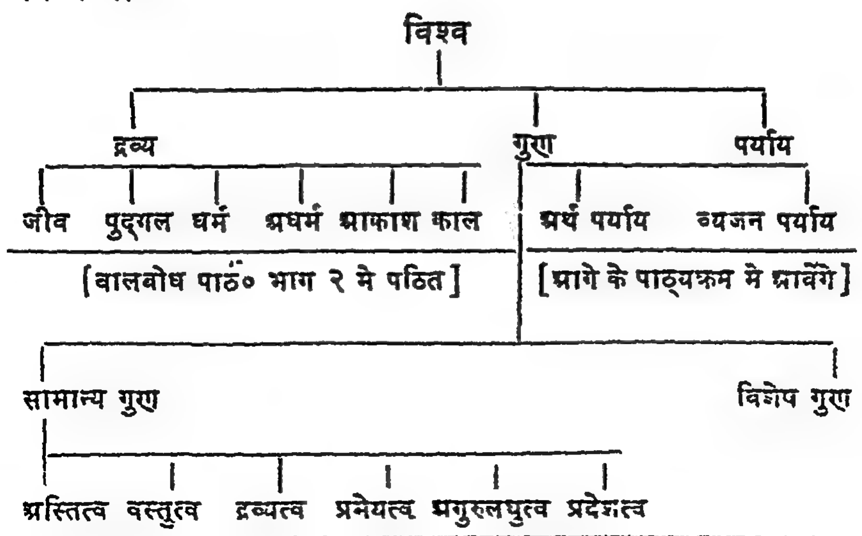
(ख) **विशेष उद्देश्य**—द्रव्य गुण पर्याय का स्वरूप समझाना।

पूर्व-ज्ञान

छात्र छह द्रव्यों का स्वरूप बालबोध पाठमाला भाग २ मे पढ चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर द्रव्य गुण पर्याय का दिग्दर्शक निम्न चार्ट :—



उद्देश्य कथन

आज हम द्रव्य गुण पर्याय के बारे मे समझेंगे ।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनो मे पढाया जावेगा । प्रत्येक दिन के पाठ को दो-दो अन्वितियो मे विभक्त किया जावेगा । प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे.—

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"छात्र—गुरुजी आज ''''   ''''ज्ञानमय कहा जाता है ।"

आदर्शवाचन

अध्यापक स्वय सवाद-पद्धति मे एकपात्रीय अभिनयपूर्वक उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श वाचन करेंगे ।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा अनुकरण वाचन संवाद-विधि से ही करावेंगे । एक छात्र से छात्र वाले पाठ का एवं दूसरे छात्र से अध्यापक वाले पाठ का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करावेंगे तथा किसी तीसरे छात्र द्वारा या स्वय उसमे आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

अध्यापक अनुकरण वाचन के पश्चात् प्रस्तुत अन्विति मे आये हुये विचारो, सिद्धान्तो और परिभाषाओ को निम्न प्रकार विश्लेषण करके समझावेंगे :—

अध्यापक कथन—देखो भाई ! हमने जो अंश अभी पढा है उससे निम्न निष्कर्ष निकलते हैं —

(१) विश्व का कभी नाश नही होता ।
(२) छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते है ।
(३) गुणो के समूह को द्रव्य कहते है ।
(४) द्रव्य—गुण और पर्याय वाला होता है ।
(५) गुणो मे होने वाले प्रति समय के परिवर्तन को पर्याय कहते है ।
(६) जो द्रव्य के सम्पूर्ण भागो मे और उसकी सम्पूर्ण अवस्थाओ मे रहता है, उसको गुण कहते है ।

नोटः—इसके वाद अध्यापक प्रत्येक निष्कर्ष को अलग-अलग स्पष्ट करेंगे ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ विश्व किसे कहते हैं ?	१. द्रव्यों के समूह को ।
२ द्रव्य किसे कहते हैं ?	२. गुणो के समूह को ।
३ गुण किसे कहते है ?	३. जो द्रव्य के सब भागो और सब अवस्थाओ मे रहें ।
४ पर्याय किसे कहते हैं ?	४ गुणो के परिणमन को ।
५ क्या विश्व का कभी नाश हो सकता है ?	५ नही ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नो के उत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा अध्यापक बालको को हृदयगम करावेंगे ।

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
गुणो के समूह को द्रव्य कहते है ।	१. गुणो के समूह को द्रव्य कहते हैं या नही ?	१ कहते हैं ।
	२ गुणो के समूह को द्रव्य कहते हैं या पर्याय ?	२. द्रव्य ।
	३. गुणो के समूह को क्या कहते हैं ?	३. द्रव्य ।
	४. द्रव्य किसे कहते हैं ?	४ गुणो के समूह को द्रव्य कहते हैं ।

नोट—इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ को तैयार कराया जायगा ।

साराश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे परिभाषाओ और सिद्धातो को सक्षेप मे सरल भाषा मे दुहरा दिया जायगा ।

द्वितीय अन्विति

"छात्र-आत्मा मे ऐसे कितने ···· विशेष गुण हुआ ।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत् ।

विचार विश्लेषण— पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन—बालको ! प्रत्येक द्रव्य मे अनन्त गुण है । आत्मा भी एक द्रव्य है, उसमे भी अनन्त गुण है । पर ऐसा नही है कि द्रव्य अलग और गुण अलग हो, द्रव्य तो गुणमय ही है । आत्मा ज्ञानादि गुणो का पिंड है, भण्डार नही ।

गुण दो प्रकार के होते है —

(१) सामान्य गुण
(२) विशेष गुण

अस्तित्व गुण सब द्रव्यो मे पाया जाता है, अत वह सामान्य गुण है और ज्ञान गुण आत्मा मे ही पाया जाता है, अत वह आत्मा का विशेष गुण हुआ । इसी प्रकार रूप, रस आदि पुद्गल मे ही पाये जाते है, अत वे पुद्गल के विशेष गुण हुये ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सामान्य गुण किसे कहते हैं ?	१ जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है ।
२ विशेष गुण किसे कहते है ?	२ जो गुण सब द्रव्यो मे न रहकर अपने-अपने द्रव्य मे रहते हैं ।
३. आत्मा ज्ञानादि गुणो का पिण्ड है या भण्डार ?	३. पिण्ड ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है उन्हे सामान्य गुण कहते हैं।	१ जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है उन्हे सामान्य गुण कहते है या नही ?	१ कहते है।
	२ जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है उन्हे सामान्य गुण कहते है या विशेप गुण ?	२ सामान्य गुण।
	३ जो गुण सब द्रव्यो मे रहने है उन्हे क्या कहते हैं ?	३ सामान्य गुण
	४. सामान्य गुण किसे कहते है ?	४. जो गुण सब द्रव्यो मे रहते हैं।

नोटः—इसी प्रकार आगत सभी परिभापाओ और सिद्धान्त-वाक्यो को तैयार कराया जायगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे परिभापाओ और सिद्धान्तो को दुहरा दिया जायगा।

समापन

पाठ का समापन करते हुये अध्यापक निम्नलिखित प्रश्न करेगे —

(१) छह द्रव्यो के समूह को क्या कहते है ?
(२) जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है—वे कौनसे गुण हैं ?
(३) आत्मा ज्ञानादि गुणो का पिण्ड है या भण्डार ?

गृहकार्य

पठित पाठ मे से अगले दिन के लिये अध्यापक गृहकार्य देंगे।

अध्यापक कथन—तो वालको ! तुम्हे कल निम्नलिखित परिभापाएँ याद करके लाना है :—

विश्व, द्रव्य, गुण, पर्याय, सामान्य गुण विशेष गुण।

द्वितीय दिन

स्थान—श्री महावीर दि० जैन उ० मा० विद्यालय, जयपुर

कक्षा—बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण—"सामान्य गुणो के भेद"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य—. पूर्ववत् ।

(ख) विशेष उद्देश्य—सामान्य गुणो के भेद बताना तथा अस्तित्व, वस्तुत्व और द्रव्यत्व आदि छहो सामान्य गुणो को विशेष स्पष्ट करना ।

पूर्व-ज्ञान

छात्र छह द्रव्यो का ज्ञान बालबोध पाठमाला भाग २ मे प्राप्त कर चुके हैं तथा द्रव्य गुण पर्याय का सामान्य स्वरूप एव गुण के सामान्य और विशेष भेद इसी पाठ के पूर्वांश मे पढ चुके हैं ।

सहायक सामग्री— पूर्ववत् ।

उद्देश्य कथन

बालको ! अब हम सामान्य गुणो के भेदो को समझेंगे ।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियो मे समाप्त होगा तथा इसमे प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेगे ही, पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नामक एक सोपान और होगा ।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमे प्रथम दिन का पाठ छात्रो ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न किये जावेंगे :—

(१) द्रव्य किसे कहते हैं ?
(२) सामान्य गुण किसे कहते हैं ?
(३) विशेष गुण किसे कहते हैं ?

प्रथम अन्विति

"छात्र–सामान्य गुण कितने होते है।···· यह बताता है।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत्।

विचार विश्लेषण— पूर्ववत्।

अध्यापक कथन—बालको ! अभी हमने तीन सामान्य गुणो के बारे मे पढा। जिससे हम निम्न निष्कर्ष पर पहुँचे है :—

(१) प्रत्येक द्रव्य की सत्ता अनादि अनन्त है। उसे किसी ने बनाया नही है और न कोई उसे मिटा ही सकता है, क्योकि प्रत्येक द्रव्य मे अस्तित्व नाम का गुण है।

(२) कोई भी वस्तु लोक मे बेकार नही है। प्रत्येक वस्तु कुछ न कुछ स्वयं का प्रयोजन लिये हुये है, क्योकि प्रत्येक द्रव्य मे वस्तुत्व नाम का गुण है।

(३) प्रत्येक द्रव्य परिणमनशील है। उसमे निरन्तर अपने आप परिणमन हुआ करता है, क्योकि उसमे द्रव्यत्व नाम का गुण है।

अतः अस्तित्व गुण वस्तु की सत्ता, वस्तुत्व गुण सार्थकता एव द्रव्यत्व गुण परिणमनशीलता सिद्ध करता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. अस्तित्व गुण किसे कहते हैं ?	१ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो।
२ वस्तुत्व गुण किसे कहते है ?	२. जिस शक्ति के कारण द्रव्य मे अर्थक्रिया हो।
३ द्रव्यत्व गुण किसे कहते हैं ?	३ जिस शक्ति के कारण द्रव्य की अवस्था निरतर बदलती रहती हो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे अस्तित्व गुण कहते है ।	१ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे अस्तित्व गुण कहते है या नही ?	१. कहते हैं ।
	जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे अस्तित्व गुण कहते है या वस्तुत्व या द्रव्यत्व ?	२ अस्तित्व गुण ।
	३ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे कौनसा गुण कहते हैं ?	३ अस्तित्व गुण ।
	४. अस्तित्व गुण किसे कहते हैं ?	४ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो ।

नोट :—इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ और सिद्धान्त-वाक्यो को तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे सभी परिभाषाओ को दुहरा दिया जायगा ।

द्वितीय अन्विति

"छात्र—प्रमेयत्व गुण ... अभाव हो जाता है ।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण— पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन—अभी हमने जो पाठ पढा है उसमे हमे कई बात मालूम हुई है :—

(१) ज्ञान से कुछ भी छिपा नही है, क्योकि प्रत्येक पदार्थ मे प्रमेयत्व नाम का गुण है जिसके कारण प्रत्येक पदार्थ किसी न किसी ज्ञान का विषय अवश्य बनता है।

(२) कोई भी द्रव्य एक दूसरे मे मिल नहीं सकता। इसी प्रकार कोई गुण भी दूसरे गुण रूप नही हो सकता तथा एक द्रव्य के अनन्त गुण बिखर कर अलग-अलग भी नही हो सकते, क्योकि प्रत्येक द्रव्य में अगुरुलघुत्व गुण है।

(३) प्रत्येक द्रव्य का कोई न कोई आकार रहता है। कोई द्रव्य बिना आकार का नही होता, क्योकि प्रत्येक द्रव्य मे प्रदेशत्व नामक गुण है।

(४) इन सब गुणों के जानने से दीनता, अभिमान और हीन-भावना निकल जाती है और हम निर्भय हो जाते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न		उत्तर	
१	प्रमेयत्व गुण किसे कहते हैं ?	१	जिस शक्ति के कारण प्रत्येक द्रव्य किसी न किसी ज्ञान का विषय हो।
२	अगुरुलघुत्व गुण किसे कहते हैं ?	२	जिस शक्ति के कारण द्रव्य का द्रव्यपना कायम रहे अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप व एक गुण दूसरे गुण रूप नही होता और द्रव्य मे रहने वाले अनन्त गुण बिखरते नही।
३.	प्रदेशत्व गुण किसे कहते है ?	३	जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो।
४	द्रव्य गुण पर्याय के जानने से क्या लाभ है ?	४.	दीनता, अभिमान और भय समाप्त हो जाते है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रदेशत्व गुण कहते हैं।	१ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रदेशत्व गुण कहते हैं या नही ?	१. कहते हैं।
	२. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रमेयत्व गुण कहते हैं या अगुरुलघुत्व या प्रदेशत्व ?	२ प्रदेशत्व गुण।
	३ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे कौनसा गुण कहते हैं ?	३ प्रदेशत्व गुण।
	४ प्रदेशत्व गुण किसे कहते है ?	४ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो।

नोट —इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ एव सिद्धात-वाक्यो को तैयार कराया जायगा।

समापन

पाठ का समापन करते हुए अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेंगे :—

(१) जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे कौनसा गुण कहते हैं ?

(२) जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो वह कौनसा गुण है ?

गृह कार्य— पूर्ववत्

अध्यापक कथन—तो बालको ! तुम्हे कल छहो सामान्य गुणो की परिभाषाये याद करके लाना है।



आदर्श पाठ-योजना २

(देव-दर्शन)

स्थान—श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, उदयपुर
कक्षा—बालबोध-तृतीय खण्ड
प्रकरण—"देव-दर्शन"
"अति पुण्य उदय ......" स्तुति के आरम्भ के दो छन्द ।

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य—सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एव बहुमान का भाव उत्पन्न करना ।

(ख) विशेष उद्देश्य—देव-दर्शन नामक स्तुति का भाव-ज्ञान छात्रो को देना एव स्तुति याद कराना ।

पूर्व-ज्ञान

देव के सामान्य स्वरूप की जानकारी बालको को है । बालबोध पाठमाला भाग २ के देव-स्तुति नामक पाठ मे देव के स्वरूप व स्तुति से तथा बालबोध पाठमाला भाग १ मे देव-दर्शन नामक पाठ मे देव-दर्शन की विधि से छात्र परिचित हो चुके हैं ।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि सम्भव हो तो श्री जिनेन्द्र भगवान का कलेंडर-साइज चित्र ।

उद्देश्य कथन

आज देव-दर्शन पाठ के माध्यम से हम दु खी क्यो हैं और देव-दर्शन से क्या लाभ है, यह समझेंगे ।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन मे पढाया जावेगा । प्रत्येक दिन दो छन्द पढाये जावेंगे । प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियो मे विभाजित करके पढाया जायगा । प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे :—

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) सामान्यार्थ विवेचन
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) साराश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"अति पुण्य उदय मम आया·· नहिं पान कर ।"

आदर्श वाचन

भक्ति का वातावरण उत्पन्न करने के लिये अध्यापक पद्य विधि से आवश्यक स्वर और लय के माथ उक्त छन्द का आदर्श वाचन करेगे ।

अनुकरण वाचन

अध्यापक छात्रो मे से किन्ही एक दो छात्रो से उक्त छन्द सस्वर वाचन करावेगे तथा उनके वाचन मे आवश्यक सुधार स्वयं या अन्य छात्रो से करावेगे ।

सामान्यार्थ विवेचन

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

छात्रो को छन्द मे आये भावो का बोध कराने के लिये अध्यापक स्वय के द्वारा घर से तैयार करके लाये हुए प्रश्नोत्तर करेगे।

प्रश्न	उत्तर
१ उक्त छद मे जीव के दुःखी होने के कितने कारण बताये है ?	१ पाच।
२ कौन-कौन से ?	२ (क) सच्चे देव की पहिचान न होना। (ख) जगत को अपना मानना। (ग) धर्म को नही पहिचानना। (घ) विषयो मे सुख मानना। (ङ) अपनी और पराये की पहिचान नही होना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त वस्तु को अध्यापक वस्तुनिष्ठ पद्धति के निम्नलिखित चार सोपानो द्वारा छात्रो को हृदयगम करावेगे —

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव दुःखी है।	१ सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव दुःखी है या नही ?	१ है।
	२ सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव सुखी है या दुःखी है ?	[illegible] खी है।
	३ सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव कैसा है ?	३ [illegible] है।
	४ जीव दुःखी क्यो है ?	४. [illegible] देव की [illegible]हिचान न होने से।

नोट —इस प्रकार जीव के दुःखी होने के शेष चारो कारणो को वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरो से तैयार कराया जाना चाहिये। तदुपरान्त जीव दुःखी क्यो है ? इस प्रश्न के उत्तर मे पाचो कारण स्पष्ट कर दिये जावेगे।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे जीव के दु खी होने के पाचो कारणो को बतावेगे ।

अध्यापक कथन—तो बालको ! उक्त छन्द मे जीव के दु खी होने के निम्न पाच कारण बताये गये है :—

(१) सच्चे देव की पहिचान न होना ।

(२) जगत को अपना मानना ।

(३) धर्म (वस्तु का स्वरूप) को नही पहिचानना ।

(४) विषयो मे सुख मानना ।

(५) अपनी और पराये की पहिचान न होना ।

द्वितीय अन्विति

"तव पद मम उर मे आये ···· मन दोप वादनतं भगै ।।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत् ।

सामान्यार्थ विवेचन

इसमे अध्यापक छन्द का सामान्यार्थ निम्नानुसार बतायेंगे –

अध्यापक कथन—भक्त भगवान से कह रहा है कि आज आपके चरण मेरे हृदय मे बस गये हैं, उन्हे देखकर कुबुद्धि और मोह भाग गये हैं । आत्मज्ञान की कला हृदय मे जागृत हो गई है और मेरी रुचि आत्महित मे लग गई है । सत्समागम मे मेरा मन लगने लगा है । अत. मेरे मन मे यह भावना जागृत हो गई है कि आपकी भक्ति ही मे रमा रहूँ ।

हे भगवान् ! यदि वचन बोलूँ तो आत्महित करने वाले प्रिय वचन ही बोलूँ । मेरा चित्त गुणीजनो के गान मे ही रहे अथवा आत्महित के निरूपक शास्त्रो के अभ्यास मे ही लगा रहे । मेरा मन दोपो के चिन्तन और वाणी दोपो के कथन से दूर रहे ।

इस प्रकार भक्त भगवान के समक्ष अपने भाव प्रगट कर रहा है ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. देवदर्शन (भगवान की पहिचान) से कितने लाभ प्राप्त होते हैं ?	१. पाँच।
२. कौन-कौन से ?	२ (क) मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव। (ख) आत्मज्ञान की प्राप्ति। (ग) आत्महित मे रुचि उत्पन्न होना। (घ) भगवान के प्रति बहुमान और सत्सग के प्रति प्रेम। (ड) विकथाओ से हटकर मन का वीतरागी शास्त्रो मे लगना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

सिद्धान्त-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान की पहिचान से मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव हो जाता है।	१ भगवान की पहिचान से मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव होता है या नही ?	१ होता है।
	२ भगवान की पहिचान मे मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान का अभाव होता है या सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान का ?	२ मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान का।
	३ भगवान की पहिचान से किसका अभाव होता है ?	३. मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान का।
	४ मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान का अभाव किससे होता है ?	४ भगवान की पहिचान से।

नोट—इसी प्रकार पाँचो सिद्धान्त-वाक्यो को तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे देव-दर्शन (भगवान की पहिचान) के पाचो लाभो को दुहरा दिया जायगा।

समापन

पठित वस्तु को छात्रो ने कितना हृदयगम किया है, यह जानने के लिये अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेंगे —

(१) यह जीव दु खी क्यो है ?

(२) देव-दर्शन से (देव की पहिचान से) क्या-क्या लाभ है ?

गृहकार्य

पठित पाठ मे से अगले दिन करके लाने के लिये अध्यापक निम्नलिखित कार्य देगे —

अध्यापक कथन—बालको ! आज का अपना पाठ समाप्त हो रहा है। तुम्हे आज पढाये गये स्तुति के छद व बोधगम्य प्रश्नो के उत्तर याद करके लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान—श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, उदयपुर

कक्षा—बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण—"देव-दर्शन"

"अति पुण्य उदय . . . " स्तुति के अन्तिम के दो छन्द।

उद्देश्य — पूर्ववत्।

पूर्व-ज्ञान — पूर्ववत्।

सहायक सामग्री— पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

आज हम देव-दर्शन नामक पाठ के माध्यम से—भगवान का सच्चा भक्त कैसा बनना चाहता है और भक्त से भगवान बनने का मार्ग क्या है—यह समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से इसमे प्रथम दिन के प्रस्तुतीकरण वाले सम्पूर्ण सोपान तो होंगे ही, साथ ही सबसे पहले पूर्व-पाठ मूल्याकन नामक एक सोपान और होगा।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमे प्रथम दिन का पाठ छात्रो ने कितना तैयार किया है यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न किये जावेगे —

(१) देव-दर्शन स्तुति का प्रथम छन्द सुनाइये।

(२) देव-दर्शन से होने वाले लाभ बताइये।

प्रथम अन्विति

"कब समता····· ··· ····· ·· ····· · · ····रिपुको निर्जरूँ।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत।

सामान्यार्थ विवेचन— पूर्ववत्।

अध्यापक कथन—भक्त कह रहा है कि मेरे मन से यह भाव जग रहे है कि वह दिन कब आयगा जब मैं हृदय मे समता भाव धारण करके, बारह भावनाओ का चिंतवन करके तथा ममता रूपी भूत को भगाकर वन मे जाकर मुनि दीक्षा धारण करूँगा। वह दिन कब आयगा जब मैं दिगम्बर वेप धारण करके अट्ठाईस मूलगुण धारण करूँगा, बाईस परीपहो पर विजय प्राप्त करूँगा और दश धर्मो को धारण करूँगा, सुख देने वाले बारह प्रकार के तप तपूँगा और आस्रव और बध भावो को त्याग नये कर्मो को रोक कर सचित कर्मो की निर्जरा कर दूँगा।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ ज्ञानी श्रावक क्या बनना चाहता है ?	१ ममता रहित व समता महित वनवासी मुनि।
२. वह कैसा मुनि बनना चाहता है ?	२ अट्ठाईस मूलगुण धारण करने वाला नग्न दिगम्बर भावलिंगी मुनि।
३ मुनि बनकर वह क्या करना चाहता है ?	३. आस्रव-बध का नाश तथा सवर-निर्जरा की प्राप्ति।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
ज्ञानी भक्त ममता रहित और समता सहित वनवासी मुनि बनना चाहता है ।	१ ज्ञानी श्रावक ममता रहित व समता सहित वनवासी मुनि बनना चाहता है या नही ?	१ बनना चाहता है ।
	२. ममता रहित व समता सहित वनवासी मुनि कौन बनना चाहता है—ज्ञानी श्रावक या अज्ञानी श्रावक ?	२. ज्ञानी श्रावक ।
	३. ममता रहित व समता सहित वनवासी मुनि कौन बनना चाहता है ?	३. ज्ञानी श्रावक ।
	४ ज्ञानी श्रावक क्या बनना चाहता है ?	४ ममता रहित व समता सहित वनवासी मुनि ।

नोट.—इसी प्रकार अन्य प्रश्नोत्तरो को भी तैयार कराना चाहिये ।

सारांश कथन

इसमे ज्ञानी भक्त क्या चाहता है यह सब छन्द के आधार पर सक्षेप मे निम्न प्रकार से बता दिया जायगा :—

अध्यापक कथन—ज्ञानी भक्त चाहता है कि वह दिन कब प्राप्त करू जब नग्न दिगम्बर साधु बनकर अट्ठाईस मूलगुण धारण करू बाईस परीषह सहूँ, दस धर्मो को धारण करूँ, बारह प्रकार के तप करके आस्रव और बंध को भेद दूँ, नवीन आते हुये कर्मो को रोक दूँ एव पुराने कर्मो की निर्जरा करदूँ ।

द्वितीय अन्विति

"कब धन्य सुअवसर पाऊँ...... ... ...भवसागर तरू"

आदर्श वाचन— पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत् ।

सामान्यार्थ विवेचन—

पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन—ज्ञानी भक्त कह रहा है कि वह धन्य घडी कब होगी जब मैं अपने में ही रम जाऊँगा । कर्त्ता-कर्म के भेद का भी अभाव करता हुआ राग-द्वेष दूर करूँगा और आत्मा को पवित्र बना लूँगा—जिससे आत्मा मे क्षायिक चारित्र प्रकट करके अनंत दर्शन, अनत ज्ञान, अनत सुख और अनंत वीर्य से युक्त हो जाऊँगा व आनद-कंद जिनेन्द्र पद प्राप्त कर लूँगा । मेरा वह दिन कब आवेगा जब इस दु ख रूपी भवसागर को पार कर अमर पद प्राप्त करूँगा ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ ज्ञानी भक्त क्या चाहता है ?	१. (क) आत्मा मे रमण करना । (ख) रागादि दूर करना । (ग) अनत चतुष्टय प्राप्त करना । (घ) जिनेन्द्र भगवान बनना ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

बोधगम्य प्रश्नो के चारो उत्तरो को प्रथम दिन की प्रथम अन्विति के प्रश्नोत्तरो के समान वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये ।

सारांश कथन

साराश कथन मे उपरोक्त प्रश्नोत्तरों को दुहरा दिया जायगा ।

समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेंगे —

(१) ज्ञानी भक्त कैसा मुनि बनना चाहता है ?

(२) ज्ञानी भक्त का अंतिम लक्ष्य क्या है ?

गृहकार्य

बालको ! तुम्हे कल सम्पूर्ण स्तुति के छद व बोधगम्य प्रश्नो के उत्तर याद करके लाना है ।

आदर्श पाठ-योजना 3

(पंच परमेष्ठी)

स्थान—श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, चौक, भोपाल
कक्षा—बालबोध तृतीय खण्ड
प्रकरण—"पच परमेष्ठी"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य**—तत्त्वज्ञान सबधी सामान्य जानकारी देना।

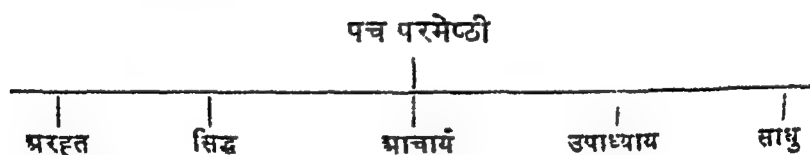
(ख) **विशेष उद्देश्य**—पच परमेष्ठी का स्वरूप समझाना।

पूर्व-ज्ञान

छात्र पच परमेष्ठी का नाममात्र ज्ञान बालबोध पाठमाला भाग १ के प्रथम पाठ से प्राप्त कर चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक लपेटफलक पर पच परमेष्ठी का निम्न चार्ट —



उद्देश्य कथन

आज हम पच परमेष्ठी के बारे मे विस्तार से समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

यह पाठ गद्य पाठ के रूप मे प्रस्तुत किया जायगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनो मे पढाया जायगा। प्रत्येक दिन के पाठ को दो-दो अन्वितियो मे विभक्त किया जायगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होंगे :—

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"णमो अरिहंताणं ...... अरहंत के गुण है।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वय गद्य विधि से अर्द्धविराम, पूर्णविराम का ध्यान रखते हुए स्पष्ट आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक एक, दो या अधिक छात्रो से अनुकरण वाचन करावेंगे तथा स्वय या अन्य छात्रो द्वारा आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

प्रस्तुत अन्विति मे आये हुए विचारो, सिद्धान्तो और परिभाषाओ का अध्यापक निम्न प्रकार विश्लेषण करेंगे —

अध्यापक कथन—बालको! अभी हमने णमोकार महामंत्र पढा। उसमे पूर्ण वीतरागी अरहंतो, सिद्धो और वीतराग मार्ग पर चलने वाले आचार्य, उपाध्याय और मुनिराजो को नमस्कार किया गया है।

उक्त पाचो को ही पच परमेष्ठी कहते हैं, क्योकि वे परमपद मे स्थित हैं। अरहंत भगवान पूर्ण ज्ञान, दर्शन, सुख और वीर्य के धारी होते है। वैसे शास्त्रो मे उनके ४६ गुण कहे गये है, पर वस्तुतः उनके उक्त ४ गुण है। बाकी कुछ तो शरीर से, कुछ पुण्य-सामग्री से सम्बन्धित हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ नमस्कार मन्त्र मे किनको नमस्कार किया गया है ?	१ पच परमेष्ठी को ।
२ अरहत परमेष्ठी किन्हे कहते हैं ?	२ (क) जो गृहस्थपना त्यागकर (ख) मुनिधर्म अगीकार करके (ग) निज स्वभाव साधन द्वारा (घ) चार घाति कर्मों का नाश करके (ङ) अनन्त चतुष्टय प्राप्त करते हैं ।
३ अरहन्त के कितने गुण होते है ?	३ शास्त्रो मे अरहन्त के ४६ गुणो का वर्णन है । उनमे अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य ये ४ गुण तो आत्माश्रित होने से वास्तविक उनके हैं । शेष ४२ व्यवहार से उनके कहे जाते हैं ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

लम्बी परिभाषाओ के तैयार कराने मे वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान न लगाकर उसे निम्नलिखितानुसार कई खण्ड-वाक्यो मे विभाजित करके तैयार कराना चाहिये .—

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो गृहस्थपना त्यागकर मुनिधर्म अगीकार करके निजस्वभाव साधन द्वारा चार घाति कर्मों का नाश करके अनन्त चतुष्टय प्राप्त करते हैं, उन्हे अरहत कहते हैं ।	(क) क्या त्यागकर अरहत बनते हैं ? (ख) क्या अगीकार करके अरहत बनते हैं ? (ग) किस साधन द्वारा अरहन्त बनते हैं ? (घ) किनका नाश करके अरहन्त बनते हैं ? (ङ) क्या प्राप्त करके अरहन्त बनते हैं ?	गृहस्थपना । मुनिधर्म । निज स्वभाव साधन द्वारा । चार घाति कर्मों का । अनन्त चतुष्टय ।

नोट—अन्त मे परिभाषा के पाँचो वाक्यो को एक साथ जमा कर परिभाषा स्पष्ट कर देनी चाहिये ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे पठित अश का सारांश बताना चाहिये तथा अरहंत की परिभाषा को दुहरा देना चाहिए ।

द्वितीय अन्विति

"जो गृहस्थ अवस्था का... ... ...अव्याबाध"

आदर्श वाचन — पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन — पूर्ववत् ।

विचार विश्लेषण — पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन--बालको ! हमने अभी सिद्ध की परिभाषा पढी तथा उनके आठ गुणो को जाना । सिद्ध की परिभाषा मे बहुत-सी बाते तो अरहत की परिभाषा के समान ही हैं । जैसे गृहस्थपना त्यागकर आदि । अरहत होने तक तो वही स्थिति है । इतना अन्तर है कि सिद्धो ने चार अघाति कर्मो का भी अभाव कर दिया है और लोक के अग्र भाग मे विदेह विराजमान हो गये है ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं ? या सिद्ध कैसे बनते है ?	१ (क) जो गृहस्थपना त्याग कर (ख) मुनिधर्म साधन द्वारा (ग) आठो घाति व अघाति कर्मो का नाश करके (घ) समस्त द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से रहित होकर (ङ) आत्मिक गुण प्रकट करके (च) लोक के अग्रभाग मे किंचित् न्यून पुरुषाकार विराजमान होते है उन्हे सिद्ध कहते है ।
२. सिद्धो के कितने गुण होते हैं ?	२ आठ गुण होते हैं ।
३ अरहन्त और सिद्धो मे क्या अन्तर है ?	३ (क) अरहंत शरीर सहित होते है। सिद्ध शरीर रहित होते है । (ख) अरहत भगवान ४ घाति कर्म रहित होते है । सिद्ध भगवान आठो कर्मो से रहित होते हैं ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

सिद्धो की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति मे प्रथम अन्विति मे आगत अरहत की परिभाषा के समान तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन— पूर्ववत्।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्याकन प्रश्न करेंगे –

(१) कितने कर्मो का अभाव करके सिद्ध बनते है ?

(२) सिद्ध भगवान के कितने गुण होते है ?

(३) अनन्त चतुष्टय किसे कहते है ?

गृहकार्य

अध्यापक अगले दिन करके लाने के लिये निम्न कार्य देंगे –

अध्यापक कथन—तो बालको ! तुम्हे कल अरहत और सिद्ध की परिभाषा व उनके गुण याद करके लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान—श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, चौक, भोपाल

कक्षा—बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण—"आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य— पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य—आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी का स्वरूप समझाना।

पूर्व-ज्ञान

बालबोध पाठमाला प्रथम भाग के आधार प पच परमेष्ठी का सामान्य ज्ञान एव कल के पाठ के आधार पर अरहत और सिद्ध परमेष्ठी का विशेष ज्ञान छात्रो को है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर निम्न चार्ट –

साधु

आचार्य साधु | उपाध्याय साधु | सामान्य साधु

उद्देश्य कथन

कल हम अरहंत और सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप तो अच्छी तरह समझ चुके है। आज आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी का स्वरूप समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियो मे समाप्त होगा। इसमे प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेंगे ही, पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्यांकन' नाम का एक सोपान और होगा।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमे प्रथम दिन का पाठ छात्रो ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्न मूल्यांकन प्रश्न किए जावेंगे –

(१) अरहंत किसे कहते है ?
(२) सिद्ध कैसे बनते है ?

प्रथम अन्विति

"आचार्य, उपाध्याय और साधु…… …आचार्य कहलाते है।"

आदर्श वाचन– पूर्ववत्।
अनुकरण वाचन– पूर्ववत्।
विचार-विश्लेषण– पूर्ववत्।

अध्यापक कथन–हमने अभी जो पढा है उससे पता चलता है कि आचार्य, उपाध्याय और साधु, साधुओ के ही भेद है। सामान्य से साधु उन्हे कहते है–जो विरागी होकर सम्पूर्ण परिग्रह छोडकर शुद्धोपयोगरूप मुनिधर्म अंगीकार करते है और आत्मा के अनुभव में लगे रहते है। यदि कभी शुभराग भी आवे तो उसे छोडने योग्य ही मानते है और अशुभ भाव तो उन्हे होते ही नही है। ऐसे नग्न दिगम्बर मुनिराज ही सच्चे साधु है।

उनमे जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनिसंघ के नेता हुये है, उन्हे आचार्य कहते है। वे भी निरन्तर आत्मलीन तो रहते ही है, पर जब शुभ राग होता है तो धर्मोपदेश देते है, योग्य विरागी व्यक्तियो को दीक्षा देते है एवं अपने दोष प्रकट करने वालो को प्रायश्चित्त देते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ आचार्य, उपाध्याय और साधुओ का सामान्य स्वरूप बताइये । अथवा सामान्य साधु का स्वरूप बताइये ?	१ जो विरागी होकर समस्त परिग्रह त्यागकर आत्मानुभव किया करते हैं और जिन्हे अशुभ भाव तो होता ही नही और जो शुभ भाव होता है उसे भी हेय मानते हैं, वे ही सच्चे साधु हैं ।
२ आचार्य परमेष्ठी किन्हे कहते हैं ?	२ जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनि सघ मे नेता पद को प्राप्त हुये हैं, मुख्यतया आत्मलीन रहते हैं, पर कभी-कभी धर्मोपदेश देते हैं, दीक्षा देते है, प्रायश्चित विधि से शुद्ध करते हैं ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनिसघ मे नेतापद को प्राप्त हुये है, मुख्यतया आत्मलीन रहते हैं, पर कभी-कभी धर्मोपदेश देते है, दीक्षा देते है, प्रायश्चित विधि से शुद्ध करते है— उन्हें आचार्य कहते हैं ।	१ जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनि सघ मे नेतापद को प्राप्त हुये है, उन्हे क्या कहते है ?	१. आचार्य परमेष्ठी
	२ जो मुख्यतया आत्मलीन रहते हैं पर कभी-कभी धर्मोपदेश देते हैं, दीक्षा देते है, प्रायश्चित विधि से शुद्ध करते है, उन्हे क्या कहते हैं ?	२ आचार्य परमेष्ठी

नोट – इसी प्रकार प्राप्त सभी प्रत्येक सभी परिभाषाओ को कई हिस्सो मे विभाजित करके वस्तुनिष्ठ पद्धति की यथासंभव विधियो का प्रयोग करके तैयार करना चाहिये ।

सारांश कथन— प्रांगत् ।

द्वितीय अन्विति

"जो बहुत जैन शास्त्रों .... अतः वे पूज्य है।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण— पूर्ववत्।

अध्यापक कथन—अभी हमने उपाध्याय और साधु परमेष्ठी के बारे में पढा। ध्यान रहे जो सामान्य साधु के संबध मे पढ चुके थे, वे सब गुण तो आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी मे पाये ही जाते है। उनकी अपेक्षा ये विशेपताएँ और रहती हैं।

उपाध्याय परमेष्ठी विशेप विद्वान् होते है, अत. उन्हे आचार्य संघ मे अध्यापन का कार्य सौंपते है। वे आत्मा मे तो लीन रहते ही हैं, पर शुभ भाव के काल मे शास्त्रो के अध्ययन और अध्यापन का कार्य करते है।

आचार्य, उपाध्याय के अतिरिक्त २८ मूलगुण धारी सम्पूर्ण अतरग-बहिरग परिग्रह से मुक्त, सदा आत्मध्यान मे लीन रहने वाले, सासारिक झझटो से दूर रहने वाले साधु ही, साधु परमेष्ठी है।

पाचो परमेष्ठी वीतराग-विज्ञानमय होते है। अरहत व सिद्ध पूर्ण वीतरागी और सर्वज्ञ होते है तथा आचार्य, उपाध्याय व साधु अल्प-वीतरागी एव आत्मज्ञानी होते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ उपाध्याय परमेष्ठी किन्हे कहते हैं?	१. जो साधु बहुत जैन श[illegible]ों के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा स[illegible] पठन-पाठन के लिये नियुक्त [illegible] हैं, उन्हें उपाध्याय परमेष्ठी कह[illegible]।
२. साधु की परिभाषा बताइये।	२. आचार्य एव उपाध्याय [illegible] छोड़कर जो मुनि २८ मूलगुणो [illegible] अखंडित पालन करते हैं, सम[illegible]त अतरग एव बहिरग परिग्रह से रहित होते हैं तथा सदा ज्ञान-ध्यान मे लवलीन रहते हैं, उन्हें साधु परमेष्ठी कहते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हें उपाध्याय परमेष्ठी कहते हैं।	१ जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हे उपाध्याय कहते हैं या नही ?	१ कहते हैं।
	२ जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हें उपाध्याय कहते हैं या शिक्षक या आचार्य ?	२ उपाध्याय।
	३ जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हे क्या कहते हैं ?	३ उपाध्याय।
	४ उपाध्याय किन्हे कहते हैं ?	४. जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं।

नोट—यदि उक्त परिभाषा लम्बी प्रतीत हो तो कई हिस्सो मे विभाजित करके वस्तुनिष्ठ पद्धति की यथासभव विधियो का प्रयोग करके तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन

अन्विति के अंत मे साराश कथन मे परिभाषाओ और सिद्धातो को सक्षेप मे सरल भाषा मे दुहरा दिया जायेगा।

समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेंगे :—

(१) मुनि सघ मे अध्यापन का कार्य कौन करते है ?

(२) मुनि सघ मे प्रायश्चित विधि से शुद्ध कौन करते है ?

गृहकार्य— पूर्ववत्।

अध्यापक कथन—तो बालको ! तुम्हे कल पाचो परमेष्ठियो का स्वरूप याद करके लाना है।

आदर्श पाठ-योजना ४

(सदाचार)

स्थान—श्री महावीर दि० जैन उ० मा० वालिका विद्यालय, जयपुर
कक्षा—वालवोध द्वितीय खण्ड
प्रकरण—"आंतरिक व वाह्य सदाचार"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य—सदाचार सबंधी ज्ञान कराना तथा सदाचारयुक्त जीवन बिताने की प्रेरणा देना।

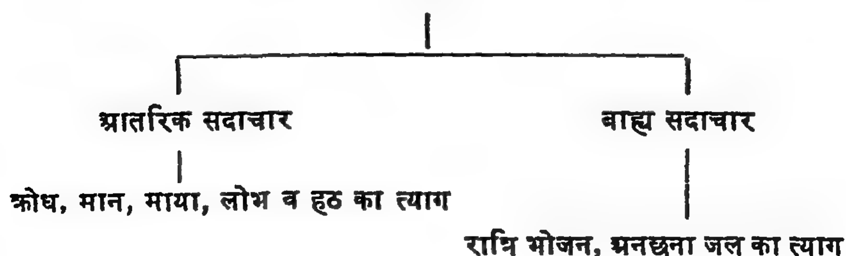
(ख) विशेष उद्देश्य—(१) क्रोध, मान, माया, लोभ और हठ छोडने की ओर प्रेरित करना व (२) रात्रि भोजन त्याग करने की प्रेरणा देना तथा (३) सभा-सचालन की पद्धति से परिचित कराना।

पूर्व-ज्ञान

वालवोध पाठमाला भाग २ के 'कषाय' नामक पाठ मे कषायो का सामान्य स्वरूप, वे कैसे उत्पन्न होती हैं और उनका अभाव किस प्रकार किया जा सकता है—इतना ज्ञान छात्र प्राप्त कर चके हैं।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर लिखा हुआ निम्नानुसार चार्ट :—



उद्देश्य कथन

वालको ! आज हम एक क्रोधी व हठी बालक की कहानी पढेंगे, जिसमे यह देखेंगे कि क्रोधी और हठी वालको की क्या दशा होती है।

प्रस्तुतीकरण

यह पाठ सवाद पाठ के अन्तर्गत वाल-सभा के रूप मे प्रस्तुत किया जायगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन मे पढाया जायगा। प्रत्येक दिन के पाठ को दो-दो अन्वितियो मे विभक्त किया जायगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे –

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार- वश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ड) साराश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"कक्षा चार के वालको···· · · · ग्रहण करता हूँ।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वयं सवाद-विधि से उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा अनुकरण वाचन करावेगे। एक छात्र अध्यक्ष सवधी पाठ का वाचन करेगा। दूसरा छात्र शान्तिलाल का पाठ पढेगा। अध्यापक स्वय या अन्य छात्र द्वारा उनमे आवश्यक सुधार करावेगे।

विचार-विश्लेषण

पठित पाठ मे कहानी के माध्यम से आये वि ' ' का विश्लेषण अध्यापक करेंगे।

अध्यापक कथन–हठी वालक की कहानी से हमे यह शिक्षा मिलती है कि जो वालक हठी, क्रोधी, मानी और लोभी होते है उन्हे सदा दु ख उठाना पडता है तथा भाई-वहिनो का आपस मे जरा-जरा सी वात पर झगड पड़ना भी अच्छी वात नही है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ हठी बालक मे कौन-कौन से दुर्गुण थे ?	१ हठी बालक क्रोधी, मानी और लोभी था। वह बात-बात पर भाई-बहिनो से लड पडता था तथा माता-पिता की आज्ञा नही मानता था।
२ इन दुर्गुणो का उसे क्या फल मिला ?	२. लड्डू भी नही मिला और बिच्छू ने भी काट खाया।
३ इस कहानी से हमे क्या शिक्षा मिलती है ?	३ हमे क्रोध, मान, लोभ और हठ नही करना चाहिये। आपस मे लडना-झगडना भी नही चाहिये तथा माता-पिता व गुरुजनो की आज्ञा माननी चाहिये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

यहा बोधगम्य प्रश्नोत्तरो को तैयार कराने के लिए वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान लगाना सम्भव नही। अत निम्नानुसार तथ्य-वाक्य को कई वाक्य-खण्डो मे विभाजित करके पाठ तैयार कराया जाना चाहिये —

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
हठी बालक क्रोधी, मानी और लोभी था। वह बात-बात पर भाई-बहिनो से लड पडता था तथा माता-पिता की आज्ञा नही मानता था।	हठी बालक मे कौन-कौन से दुर्गुण थे ?	१ वह क्रोधी, मानी, लोभी और हठी था। २. बात-बात पर भाई-बहिनो से लड पडता था। ३. माता-पिता की आज्ञा नही मानता था।

नोट —इसी प्रकार सभी बोधगम्य प्रश्नो को वस्तुनिष्ठ पद्धति की यथासम्भव विधि से तैयार कराया जाना चाहिये।

सारांश कथन

सारांश कथन मे हठी बालक के दुर्गुणो से होने वाली हानि बताकर छात्रो को दुर्गुणो के छोडने की प्रेरणा दी जायेगी।

अध्यापक कथन—बालको ! जो बालक व्यर्थ ही बात-बात मे अपने भाई-बहिनो से लड पडते हैं, बहुत क्रोध करते है, घमंडी होने के कारण माता-पिता की बात भी नही मानते हैं, हठ करते हैं—उनको जीवन मे बहुत दु ख उठाने पडते हैं। अत हमे उक्त दुर्गुण छोडकर अच्छे बालक बनना चाहिये।

द्वितीय अन्विति

"अध्यक्ष—(खडे होकर) ... ग्रहण करती हू।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र अध्यक्ष सम्बन्धी पाठ का व दूसरा छात्र निर्मला बहिन का पाठ पढेगा। अध्यापक स्वय या अन्य छात्र द्वारा उनमे आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण — पूर्ववत्।

अध्यापक कथन—बालको ! अभी तुमने सुना कि रात्रि मे भोजन करने से बहुत हानियां होती हैं। सूर्य-प्रकाश के अभाव मे कीडे-मकोडो की अधिकता होने से कीडे-मकोडो की हिंसा तो अधिक होती ही है, साथ मे कभी हमारा जीवन भी संकट में पड सकता है। रात्रि मे भोजन करने वालों को अनेक बीमारियां हो जाती हैं। एक बात और है कि रात्रि-भोजन मे राग की अधिकता होने से पाप बंध भी विशेष होता है। अत हमे रात्रि मे भोजन कभी भी नहीं करना चाहिये।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. रात मे भोजन करने वाले बेहोश क्यो हो गये ?	१ साग मे साप गिर गया था और अन्धेरा होने से दिखाई नही दिया।
२. रात्रि भोजन से क्या हानियाँ हैं ?	२ (क) अनेक बीमारियाँ तो हो ही जाती हैं, कभी जान की भी आ पड सकती है। (ख) राग की अधिकता होने से पाप बध भी अधिक होता है।
३ इस कहानी मे हमे क्या शिक्षा मिलती है ?	३. रात मे भोजन कभी नही करना चाहिये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त बोधगम्य प्रश्नो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा या यथासम्भव अन्य विधि से तैयार कराया जायगा।

साराश कथन

बरात वाली घटना का हवाला देकर अध्यापक रात्रि भोजन छोडने की प्रेरणा देंगे।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्याकन प्रश्न करेंगे –

(१) हठी बालक की कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

(२) रात्रि भोजन से क्या हानियाँ है ?

गृहकार्य

अध्यापक पठित अश मे से अगले दिन करके लाने के लिये कार्य देंगे।

अध्यापक कथन—तो बालको ! तुम्हे कल हठी बालक की कहानी अपने शब्दो मे याद करके लानी है तथा निर्मला बहिन ने अपने भाषण मे जो बात कही उसे भी याद करके लानी है।

द्वितीय दिन

स्थान—श्री महावीर दि०जैन उ०मा०बालिका विद्यालय, जयपुर
कक्षा—बालबोध द्वितीय खण्ड
प्रकरण—"पानी छानकर पीना"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य— पूर्ववत् ।
(ख) विशेष उद्देश्य—(१) पानी छान कर पीने की प्रेरणा देना व (२) सभा मे उठने-बैठने एव बोलने की पद्धति से परिचित कराना ।

पूर्व-ज्ञान— कुछ नही ।

सहायक सामग्री— पूर्ववत् ।

उद्देश्य कथन

हमे पानी छानकर ही काम मे क्यो लेना चाहिये तथा सभा मे कैसे बैठना, उठना और बोलना चाहिये, आज इसकी चर्चा करेगे ।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ दो अन्वितियो मे समाप्त होगा । इसमे प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेगे ही, पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहिले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नाम का एक सोपान और होगा ।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

प्रथम दिन का पढा हुआ पाठ छात्रो ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्न मूल्याकन प्रश्न किए जावेंगे —

(१) हठी बालक की कहानी सुनाइये ।
(२) निर्मला बहिन द्वारा वर्णित बरात का वर्णन कीजिये ।
(३) रात्रि-भोजन से क्या हानियाँ है ?

प्रथम अन्विति

"एक छात्र ....मे भी बाधक है ।"

आदर्श वाचन-- पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन

अध्यापक तीन छात्रो द्वारा अनुकरण वाचन करावेगे । एक छात्र अध्यक्ष का, एक छात्र--एक छात्र का व एक छात्र निर्मला का पाठ पढेंगे । अध्यापक स्वय या अन्य छात्रो द्वारा उसमे सुधार करावेगे ।

विचार-विश्लेषण-- पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन--वालको ! हमने अभी पढा कि अध्यक्ष की विना आज्ञा लिये छात्र वोलने लगा तो अध्यक्ष ने उसे डाट दिया । इससे मालूम पडता है कि सभा मे विना अध्यक्ष की आज्ञा के नही वोलना चाहिये ।

दूसरी वात यह है कि रात्रि भोजन से वाहरी हानि के अलावा रात्रि भोजन मे गृद्धता अधिक होने से राग अधिक होता है ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ सभा मे कैसे बोलना चाहिये ?	१. अध्यक्ष की आज्ञा लेकर ।
२ रात्रि भोजन से क्या आतरिक हानि है ?	२ रात्रि भोजन में गृद्धता अधिक होने से राग की तीव्रता रहती है, अत आत्मसाधना मे बाधा पहुचती है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त वोधगम्य प्रश्नोत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासभव सोपानो से तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

अध्यापक कथन--हमने आज दो वातें सीखी :--

(१) सभा मे विना अध्यक्ष की आज्ञा के नही बोलना चाहिये ।

(२) रात्रि भोजन मे राग की गृद्धता होने से पाप बंध विशेष होता है । अत रात्रि मे भोजन नही करना चाहिये ।

द्वितीय अन्विति

"अध्यक्ष (खडे होकर ... ... घोषणा करता हू ।"

आदर्श वाचन– पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन– पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण– पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन–अभी हमे अध्यक्ष महोदय के भाषण से एक बात का पता चला कि विना छने पानी मे असख्यात जीव होते हैं। खुर्दवीन से देखने पर वे साफ दिखाई देते है। अत हम सवको विना छना हुआ पानी कभी भी प्रयोग मे नही लाना चाहिये ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ विना छना पानी क्यो काम मे नही लेना चाहिये ?	१ विना छने पानी मे असख्यात त्रस जीव रहते हैं। अतःहमे विना छना पानी काम मे नही लेना चाहिये ।
२ यह कैसे जाना कि उसमे जीव रहते हैं ?	२. शास्त्रो मे लिखा है और खुर्दबीन से देखने पर साफ दिखाई देते हैं ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त वोधगम्य प्रश्नोत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासभव सोपानो से तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

अनछने पानी मे असख्यात जीव होते हैं, अत छना पानी ही काम मे लेने के लिये अध्यापक को साराश कथन मे प्रेरणा देनी चाहिये ।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्याकन प्रश्न करेंगे –

(१) विना छना पानी काम मे क्यो नही लेना चाहिये ?

(२) सभा मे कैसे वोलना चाहिये ?

गृहकार्य

अध्यापक कथन–तो वालको ! तुम्हें अगले दिन यह याद करके लाना है कि सभा का सचालन कैसे करना चाहिये तथा विना छना पानी प्रयोग मे लेने से क्या हानि है ।

आदर्श पाठ-योजना ५

(भगवान आदिनाथ)

स्थान—श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, विदिशा (म० प्र०)

कक्षा—बालबोध प्रथम खड

प्रकरण—"भगवान आदिनाथ"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य—अपने पूर्वजो के संबध में सामान्य जानकारी देना।

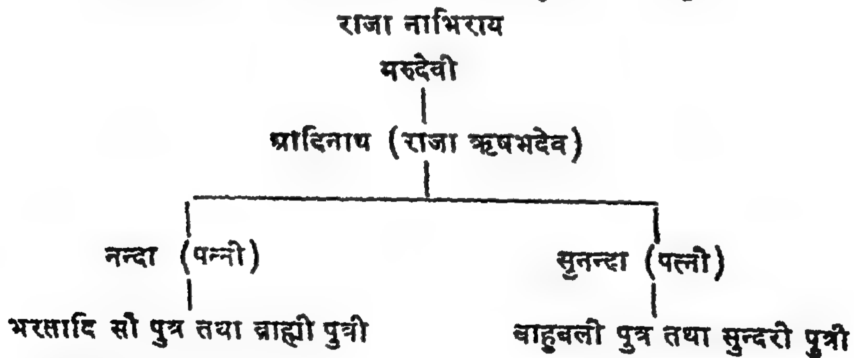
(ख) विशेष उद्देश्य—भगवान आदिनाथ का परिचय देना।

पूर्व-ज्ञान

बालबोध पाठमाला भाग १ के तृतीय पाठ से चौबीस तीर्थंकरो के नामो का ज्ञान छात्रो को है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर निम्नानुसार बना हुआ चार्ट —



उद्देश्य कथन

आज हम भगवान आदिनाथ के संबंध मे चर्चा करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनो मे पढ़ाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ एक-एक अन्विति मे ही पढाया जायगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होंगे :—

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

वोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. भगवान आदिनाथ की स्तुति कौन-से स्तोत्र मे की गई है ?	१. भक्तामर स्तोत्र मे ।
२. क्या वे जन्म से ही वीतरागी और सर्वज्ञ थे ?	२ नही, वीतरागता और सर्वज्ञता तो मुनि होने के वाद पुरुषार्थ से प्राप्त की थी ।
३ राजकुमार ऋषभ के माता पिता का क्या नाम था ?	३ मरुदेवी और नाभिराय ।
४. उनकी रानियो के क्या नाम थे ?	४ नदा और सुनदा ।
५ नदा से क्या सन्तान थी ?	५ भरत आदि सौ पुत्र एव ब्राह्मी पुत्री ।
६ सुनदा से क्या सतान थी ?	६ वाहुवली पुत्र और सुन्दरी पुत्री ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत वोधगम्य प्रश्नो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा वालको को तैयार करावेगे ।

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र मे की गई है।	१ भगवान आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र मे की गई है या नही ?	१ की गई है ।
	२ भगवान आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र मे की गई है या कल्याण मदिर स्तोत्र मे ?	२ भक्तामर स्तोत्र मे ।
	३ भगवान आदिनाथ की स्तुति किस स्तोत्र मे की गई है ?	३ भक्तामर स्तोत्र मे ।
	४ भक्तामर मे क्या है ?	४ भगवान आदिनाथ की स्तुति ।

नोट —इसी प्रकार सभी प्रश्नोत्तरो को तैयार कराया जाएगा ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे पठित पाठ का साराश दुहरा दिया जायगा।

अध्यापक कथन—तो आज हमने यह जान लिया कि अयोध्या के राजा नाभिराय की रानी मरुदेवी के उदर से बालक ऋषभदेव का जन्म हुआ था।

राजा ऋषभदेव की दो पत्नियाँ थी—नदा और सुनदा। नदा से भरतादि सौ पुत्र व ब्राह्मी पुत्री तथा सुनन्दा से बाहुबली पुत्र एव सुन्दरी पुत्री उत्पन्न हुये। वे ही राजा ऋषभदेव मुनि होकर पूर्ण ज्ञानी भगवान आदिनाथ वने। उन्ही की स्तुति भक्तामर स्तोत्र मे की गई है।

समापन

आज के पाठ का समापन करते हुये अध्यापक निम्न मूल्याकन प्रश्न करेंगे —

(१) क्या आदिनाथ जन्म से भगवान थे ?

(२) भक्तामर स्तोत्र मे किसकी स्तुति की गई है ?

गृह-कार्य

पठित पाठ मे अध्यापक अगले दिन करके लाने के लिये निम्न कार्य देंगे —

अध्यापक कथन—वालको ! तुम्हे कल निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर याद करके लाने है :—

(१) राजा ऋषभदेव के माता, पिता, पत्नी, पुत्र और पुत्रियो के नाम।

(२) भक्तामर स्तोत्र मे क्या है ?

द्वितीय दिन

स्थान—श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला, विदिशा (म० प्र०)

कक्षा—वालवोध प्रथम खड

प्रकरण—"भगवान आदिनाथ"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य— पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य— पूर्ववत्।

पूर्व-ज्ञान

पूर्ववत् तथा प्रथम दिन पढाये गये पाठ मे आदिनाथ के गृहस्थ जीवन की सामान्य जानकारी छात्र प्राप्त कर चुके हैं।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, पूर्वानुसार चार्ट।

उद्देश्य कथन

बालको ! कल हमने आदिनाथ के गृहस्थ जीवन का परिचय प्राप्त किया था। आज हम यह समझेंगे कि वे भगवान कैसे बने।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी एक अन्विति मे ही पूरा होगा। इसमे प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो होगे ही, पर द्वितीय दिन की अन्विति होने से सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' सबधी एक सोपान और होगा।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमे प्रथम दिन का पाठ छात्रो ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्न मूल्याकन प्रश्न किए जावेगे :—

(१) ऋषभदेव के गृहस्थ जीवन का परिचय दीजिये।
(२) ऋषभदेव के पुत्रो के क्या नाम थे ?
(३) उनकी कितनी पत्नियाँ थी ?
(४) क्या वे जन्म से भगवान थे ?

प्रथम अन्विति

"तो क्या भरत .... बन सकते हैं।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण— पूर्ववत्।

अध्यापक कथन—आदिनाथ का नाम राज्यावस्था मे ऋषभदेव था। नीलाजना की मृत्यु देखकर उन्हे वैराग्य हो गया और वे नग्न दिगम्बर साधु हो गये। छह माह के उपवास के उपरान्त छह मास तक उनके आहार की विधि नही मिली। करीब एक वर्ष बाद अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने उन्हे आहार दिया। उसी दिन से अक्षय तृतीया का महापर्व मनाया जाने लगा।

एक हजार वर्ष वाद उन्हे केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और उनके द्वारा सारे भारतवर्ष मे तत्त्वोपदेश हुआ। उनके द्वारा वताया गया मुक्ति का मार्ग आज भी हमे ज्ञानियो द्वारा प्राप्त है। उस मार्ग पर चल कर हम सव भगवान बन सकते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ अक्षय तृतीया के दिन क्या हुआ था ?	१ इस दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था।
२ भगवान आदिनाथ ने अपने उपदेशो मे क्या बताया ?	२ मुक्ति का मार्ग।
३ उनके सच्चे भक्त कौन हैं ?	३. जो उनके बताये मार्ग पर चलें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था।	१ अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था या नहीं ?	१ दिया था।
	२ अक्षय तृतीया के दिन राजा [illegible] आदिनाथ को आहार दान दिया था या राजा ऋषभदेव को या भगवान आदिनाथ को ?	२ मुनिराज आदिनाथ को।
	३ अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने किसको आहार दान दिया था ?	३ मुनिराज आदिनाथ को।
	४ अक्षय तृतीया के दिन क्या हुआ था ?	अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था।

नोट —इसी प्रकार अन्य पाठ [illegible] ।

सारांश कथन पूर्ववत्

अध्यापक कथन—आज हमने आदिनाथ के बारे में इतनी बातें जानी —

(१) नृत्य करते नीलाजना की मृत्यू देखकर ऋषभदेव को वैराग्य हुआ था।

(२) दीक्षा के एक वर्ष बाद राजा श्रेयांस ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था। तभी से अक्षय तृतीया पर्व चला।

(३) एक हजार वर्ष बाद उन्हे पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई।

(४) जो उनके बताये मार्ग पर चले, वही उनका सच्चा भक्त है।

(५) उनके बताये मार्ग पर चलकर हम सब भी भगवान बन सकते हैं।

समापन

आज का पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही, यह जानने के लिये निम्न मूल्याकन प्रश्न करेंगे —

[१] अक्षय तृतीया पर्व क्यो मनाया जाता है ?
[२] भगवान का सच्चा भक्त कौन है ?
[३] हम भगवान कैसे बन सकते है ?

गृहकार्य

बालको ! कल तुम्हे पूर्ववत् भगवान आदिनाथ का सक्षिप्त जीवन-परिचय याद करके लाना है।



पाठ-निर्देश

वालवोध पाठमालाओ मे आये हुये पाँच पाठो की आदर्श पाठ-योजनाये प्रस्तुत की। आगे शेष पाठो के पाठ-निर्देश दिये जा रहे हैं। पाठ-निर्देश का ध्यान रखते हुए अध्यापक बन्धुओ को प्रत्येक पाठ पढाने के पूर्व उपरोक्त पाठ-योजनाओ के अनुरूप पाठ-योजना तैयार करनी है। ध्यान रहे किसी भी पाठ की पाठ-योजना तैयार करते समय तत्सवधित पाठ-निर्देश मे दिये निर्देशो की अवहेलना नही की जानी चाहिये।

पाठ-निर्देश १

[वालवोध पाठमाला भाग १—पाठ १]

"णमोकार मंत्र"

आवश्यक निर्देश :—

[१] णमोकार मंत्र गाथा-रूप मे पद्य रचना है। अत इसका गाकर पद्य के रूप मे ही आदर्श वाचन व अनुकरण वाचन किया जायेगा। प्राय: इसे गद्य के रूप मे पढा जाता है, यह ठीक नही है।

[२] प्रत्येक पद का अर्थ अलग-अलग वताया जाना चाहिये। जैसे णमो अरहंताणं=अरहंतो को नमस्कार हो। आदि।

[३] "लोए सव्व" शब्द प्रत्येक पद के साथ लगता है।

[४] "सव्वपावप्पणासणो" का अर्थ—सब पापो का नाश करने वाला है। इसे स्पष्ट करना कि जिस काल मे णमोकार मंत्र द्वारा पंच परमेष्ठी का स्मरण करते है उस काल मे हिंसा, झूंठ, चोरी आदि पाप भावो की उत्पत्ति ही नही होती, यही पापो का नाश है।

पाठ-निर्देश २

(बालबोध पाठमाला भाग १—पाठ २)

"चार मंगल"

आवश्यक निर्देश :—

(१) "चत्तारि मंगल" आदि पाठ को शुद्ध बोलना सिखाने के लिये अध्यापक को स्वय आदर्श वाचन देख देख कर सावधानी से करना चाहिये तथा अनुकरण वाचन मे सावधानीपूर्वक अशुद्धियाँ ठीक करानी चाहिये।

(२) निम्न स्थानो पर विशेष अशुद्धिया हो जाती हैं :—

अशुद्ध	शुद्ध
अरहत मगल	अरहता मगल
सिद्ध मगल	सिद्धा मगल
केवली पण्णत्त धम्मो मगल	केवलिपण्णत्तो धम्मो मगल
केवली पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमा	केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो
केवली पणत्तो धम्मो शरण पव्वज्जामि	केवलिपण्णत्त धम्म सरणं पव्वज्जामि

(३) मगल, उत्तम, और शरण के अर्थ स्पष्ट करके वताना तथा उनकी परिभाषाये वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा तैयार करानी

पाठ-निर्देश ३

(वालवोध पाठमाला भाग १—पाठ ३)

"तीर्थङ्कर भगवान"

आवश्यक निर्देश :—

(१) तीर्थङ्कर और भगवान का अन्तर स्पष्ट करना।

"सभी तीर्थङ्कर भगवान होते है पर मभी भगवान तीर्थङ्कर नही"—इस तथ्य को अच्छी तरह स्पष्ट करना चाहिये।

[४] देव-दर्शन का लाभ बताते हुए देव-दर्शन से पाप भाव के अभाव पर जोर देना। उक्त तथ्य को तर्क व युक्ति से समझाना। जैसे—जब हम भगवान के दर्शन करेंगे तब पाप भाव उत्पन्न ही नही होंगे, यही पाप का नाश है।

[५] मूर्त्ति के माध्यम से मूर्त्तिमान अरहंतादिक का स्वरूप समझना, उनका गुण-स्तवन, चिन्तन करना देव-दर्शन है; मात्र मन्दिर मे ढोक देना ही नही।

[६] सुविधानुसार यथासमय छात्रो को मन्दिर मे ले जाकर देव-दर्शन की पद्धति का ज्ञान प्रयोगात्मक रूप से कराना।

पाठ-निर्देश ५

[बालबोध पाठमाला भाग १—पाठ ५]

"जीव-अजीव"

आवश्यक निर्देश :—

[१] जीव और अजीव का ज्ञान कराते समय जीव से एक क्षेत्रावगाह संबंध रखने वाले अजीव जैसे :—शरीर, आँख, कान आदि और आत्मा से पृथक् रहने वाले अजीव जैसे :—कुर्सी, टेबिल, कुत्ता आदि का पृथक्-पृथक् ज्ञान कराना।

[२] आत्मा मे एक क्षेत्रावगाह संबंध रखने वाले अजीवो को प्रश्नोत्तरो द्वारा विशेष स्पष्ट करना। जैसे —

प्रश्न—जब आँख देखती है तो वह अजीव कैसे ?

उत्तर—आँख थोड़े ही देखती है, आत्मा आँख द्वारा देखती है।

[३] जीव व अजीव की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

[४] जीव-अजीव के जानने से क्या-क्या लाभ हैं ? यह स्पष्ट करना।

पाठ-निर्देश ६

[बालबोध पाठमाला भाग १—पाठ ६]

"दिनचर्या"

आवश्यक निर्देश :—

[१] प्रात. से साय तक की दिनचर्या बनाकर छात्रो को बताना।

[२] सफाई दो प्रकार की होती है :—

[क] अतरग

[ख] बहिरग

दोनो का विशेष स्पष्टीकरण करना।

[३] अतरग सफाई में आत्मा-परमात्मा के चितवन एव तत्त्व-प्रचार पर जोर देना चाहिये।

[४] बाह्य सफाई मे स्नान, दाँतो की सफाई, नाखूनो की सफाई रखने आदि की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ-निर्देश ७

[बालबोध पाठमाला भाग १—पाठ ८]

"मेरा धाम"

आवश्यक निर्देश :—

[१]. आत्मा का परिचय निम्नानुसार कराना :—

[क] नाम— शुद्धात्मा

[ख] काम— मात्र जानना-देखना [पर का कुछ नही करना]

[ग] धाम— मुक्तिपुरी [मोक्ष]

[२] मेरा धाम कैसा है ? इसका ज्ञान कराना। जैसे :—

[क] वहाँ भूख और प्यास नही सताती।

[ख] खासी-जुकाम आदि शारीरिक रोग नही हैं।

[ग] चिता, भय आदि मानसिक रोग नही हैं।

[३] प्रश्न—करने योग्य क्या है ?

उत्तर—[क] स्वपर भेद-विज्ञान,
[अपनी पराये की पहिचान]
[ख] आत्म-ध्यान,
[ग] राग-द्वेष का त्याग,
[घ] आत्मानंद का पान ।

[४] मेरा धाम नामक कविता बच्चो को कण्ठस्थ [मुखाग्र] तयार कराके सामूहिक रूप मे एक साथ बोलने का अभ्यास कराना चाहिये एव प्रतिदिन इसे प्रार्थना के तौर पर बोलने की प्रेरणा देनी चाहिये ।

पाठ-निर्देश ८

[बालबोध पाठमाला भाग २—पाठ १]

"देव-स्तुति"

आवश्यक निर्देश :-

[१] सर्वप्रथम देव-स्तुति की पहली पक्ति के आधार पर सच्चे देव की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार करानी चाहिये ।

[२] स्तुति के सामान्यार्थ विवेचन के पश्चात् स्तुति मे आयें भावो को प्रश्नोत्तर मे तैयार कराना चाहिगे । जैसे :—

प्रश्न—ज्ञानी भक्त भगवान से क्या चाहता है ?

उत्तर—[क] पाचों पापो से दूर रहना,
[ख] जिन धर्म की सेवा करना,
[ग] कुरीतियो का नाश व सुरीतियों का प्रचार करना,
[घ] न्याय मार्ग पर चलना ।

प्रश्न—कुरीति क्या है ?

उत्तर—कुरीतियो को हम दो भागो मे बाट सकते हैं —

[१] धार्मिक कुरीति और [२] सामाजिक कुरीति।

धार्मिक कुरीति—भूत, प्रेत, व्यतर आदि की पूजा आदि से गृहीत मिथ्यात्व का सेवन करना।

सामाजिक कुरीति—दहेज प्रथा आदि।
धार्मिक कुरीतियां दूर करने पर अधिक बल देना चाहिये।

[३] इसी प्रकार पूरी स्तुति मे आये भावो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझना चाहिये।

[४] छात्रो को पूरी स्तुति कठस्थ तैयार कराना है तथा उसका सामान्य भाव भी तैयार कराना है।

पाठ-निर्देश ६

[बालबोध पाठमाला भाग २—पाठ २]

"पाप"

आवश्यक निर्देश :—

[१] मिथ्यात्व ही सबसे बडा पाप है। इस तथ्य को युक्तिपूर्वक समझाकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

[२] मिथ्यात्व और पाचो पापो की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

[३] हिंसा के द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा भेदो को समझाना।

[४] "क्या सत्य समझे बिना सत्य बोला जा सकता है"—उक्त तथ्य को सयुक्ति स्पष्ट करना।

[५] मिथ्यात्व और कषायें भी परिग्रह हैं—यह स्पष्ट करना।

[६] "सब पापो की जड मिथ्यात्व और कषाय ही हैं"—इसे भी स्पष्ट करना।

पाठ-निर्देश १०

(बालबोध पाठमाला भाग २ –पाठ ३)

"कषाय"

आवश्यक निर्देश :–

(१) निम्नलिखित परिभाषाओ को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझाना व तैयार कराना :–

विभाव, राग, द्वेष, कषाय, क्रोध, मान, माया, लोभ

(२) निम्नलिखित प्रश्नोत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझाकर तैयार कराया जाय :–

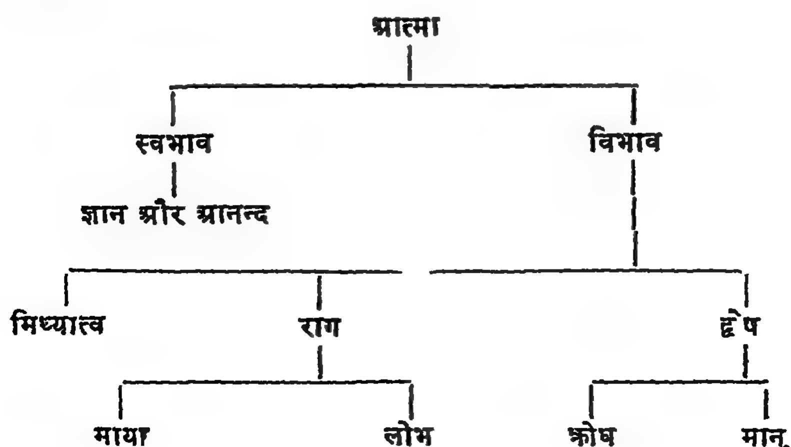
प्रश्न–कषाय क्यो उत्पन्न होती है ?

उत्तर–मुख्यतया मिथ्यात्व के कारण पर-पदार्थ इष्ट और अनिष्ट भासित होने से कषाय उत्पन्न होती है ।

प्रश्न–कषायो का अभाव कैसे हो ?

उत्तर–तत्त्वज्ञान के अभ्यास से जब पर-पदार्थ इष्ट और अनिष्ट प्रतिभासित न हो तो मुख्यतया कषाय भी उत्पन्न नही होती है ।

(३) कषाय और राग-द्वेष को निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :–



पाठ-निर्देश ११

[बालबोध पाठमाला भाग २ –पाठ ५]

"गतियाँ"

आवश्यक निर्देश :–

[१] गति और चारो गतियो की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

[२] "चारो गतियो मे दु ख ही दु ख है–सुख कही भी नही"– उक्त तथ्य की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करना।

[३] संसारी जीव की अवस्थायें तो बहुत हैं, पर उनका चार भागो मे वर्गीकरण किया गया है। इस तथ्य को स्पष्ट करना।

[४] कौन गति किस अपराध का फल है ? चारो गतियो के कारणो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

[५] "मनुष्य पर्याय मे होने से हम सब मनुष्य कहे जाते हैं वस्तुत. हैं तो हम सब जीव।"–इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना।

[६] निरपराध दशा क्या है ? –इसे विशेष स्पष्ट करना।

पाठ-निर्देश १२

[बालबोध पाठमाला भाग २ –पाठ ६]

"द्रव्य"

आवश्यक निर्देश :–

[१] विश्व, द्रव्य और छहो द्रव्यो की परिभाषा समझाना एवं वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

[२] द्रव्यो को दो-दो भेदो मे विभाजित करके समझाना –

[क] जीव द्रव्य – अजीव द्रव्य
[ख] रूपी द्रव्य – अरूपी द्रव्य
[ग] अस्तिकाय – नास्तिकाय

(३) परस्पर अन्तर स्पष्ट करना :–

(क) धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य मे ।

(ख) धर्म और धर्म द्रव्य मे ।

(ग) अधर्म और अधर्म द्रव्य में ।

(४) आकाश द्रव्य ऊपर नीचे सर्वत्र है तथा आकाश में रंग नही होता—उक्त तथ्यों को भली-भांति स्पष्ट करना ।

(५) निम्नलिखित प्रश्नो की तर्कसंगत जानकारी देना :–

(क) क्या कभी विश्व का नाश हो सकता है ?

(ख) भगवान जगत के जाननें वाले हैं या बनाने वाले?

पाठ-निर्देश १३

(बालबोध पाठमाला भाग २ –पाठ ७)

"भगवान महावीर"

आवश्यक निर्देश :–

(१) भगवान जन्मते नही, बनते है। इसे सतर्क स्पष्ट करना ।

(२) कोई भी व्यक्ति आत्मसाधना कर भगवान बन सकता है । इस पर विशेप बल देना ।

(३) भगवान महावीर के पाचो नामो की सार्थकता बताना ।

(४) बालक वर्द्धमान, राजकुमार वर्द्धमान, मुनि महावीर, भगवान महावीर शब्दो के यथास्थान प्रयोग का ज्ञान छात्रो को कराना ।

(५) महावीर का ही जन्मोत्सव क्यों मनाया जाता है—हमारा तुम्हारा क्यो नही ? इसका सतर्क उत्तर देना ।

(६) भगवान महावीर की शिक्षा न० १, २, ३, ४ एवं ११ पर विशेष बल देना ।

(७) महावीर जयन्ती और दीपावली पर्व का परिचय देना ।

(८, भगवान महावीर का सामान्य जीवन-परिचय अपने शब्दो मे तैयार कराना ।

पाठ-निर्देश १४

(बालबोध पाठमाला भाग २ —पाठ ८)

"जिनवाणी स्तुति"

आवश्यक निर्देश :—

(१) जिनवाणी स्तुति को कठस्थ तैयार कराना व उसका सामान्य भाव समझाना व याद कराना।

(२) स्तुति मे आये महत्त्वपूर्ण तथ्यो को प्रश्नोत्तरो द्वारा तैयार कराना। जैसे—

प्रश्न—जिनवाणी के श्रवण से क्या लाभ है?

उत्तर—(प्रथम छन्द के आधार पर)

(क) मिथ्यात्व का नाश।

(ख) ज्ञान का प्रकाश।

(ग) स्वपर भेद-विज्ञान।

(घ) छह द्रव्यों का सही ज्ञान।

(ङ) कर्म बन्ध की प्रक्रिया का ज्ञान।

(च) आत्मानुभव व आत्मज्ञान होना।

(छ) सच्चे सुख की प्राप्ति।

(३) "मस्तक नमो"—"जपो" का भाव स्पष्ट करना :—

'नमो' का अर्थ शारीरिक नमस्कार करना तो है ही, पर मात्र माथा झुकाना नही है। मुख्य रूप से जिनवाणी के महत्त्व को समझकर उसके प्रति बहुमान उत्पन्न होना है और उसके अभ्यास द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति करने को यत्नशील होना है।

'जपो' का अर्थ उसके नाम की माला फेरना नही, बल्कि उसका निरन्तर अभ्यास करना है।

पाठ-निर्देश १५

(बालबोध पाठमाला भाग ३—पाठ ३)

"अष्ट मूलगुण"

आवश्यक निर्देश :—

(१) निश्चय मूलगुण और व्यवहार मूलगुण की परिभाषा समझाना एवं वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) मद्य, मांस, मधु और पच उदुम्बर फलो के सेवन से बुराइयाँ स्पष्ट करना। जैसे :—

प्रश्न—मद्य सेवन से क्या हानियाँ है ?

उत्तर—(क) विवेक की हानि (ज्ञान दबना)।

(ख) जीवो का घात (हिंसा)।

(ग) बुद्धि की भ्रष्टता।

(घ) तत्त्वज्ञान प्राप्ति के प्रसंग की समाप्ति।

(३) कौन-कौन वस्तुएँ मांस में आती हैं ? कौन-कौन मद्य मे ? इसे स्पष्ट करना। जैसे :—

(क) अडा, मछली — मास

(ख) शराब, भांग — मद्य

(४) पच उदुम्बरो का ज्ञान कराना।

(५) अष्ट मूलगुण धारण करने की प्रेरणा देना।

(६) मद्य, मांस, मधु और पच उदुम्बर फल मूलगुण नही हैं, किन्तु इनका त्याग मूलगुण है। प्राय: बालक अष्ट मूलगुणों के नाम पूछने पर इस तरह उत्तर दे देते हैं कि मद्य, मास, मधु और पंच उदुम्बर फल। कहना ऐसा चाहिए कि मद्य त्याग, मास त्याग, मधु त्याग और पच उदुम्बर फल त्याग—ये श्रावक के अष्ट मूलगुण हैं।

उपरोक्त तथ्य को छात्रो को हृदयंगम कराना।

पाठ-निर्देश १६

(वालबोध पाठमाला भाग ३—पाठ ४)

"इन्द्रियाँ"

आवश्यक निर्देश :—

(१) जिन और जैन की परिभाषा बताना व वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) पाँचो इन्द्रियो की परिभाषा समझाकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना व प्रत्येक इन्द्रियो के कार्य को स्पष्ट करना।

(३) पाँचो इन्द्रियो का हाथ से इशारा करके ज्ञान कराना है।

(४) इस प्रकार के प्रश्न करना जिससे पता चल सके कि बालको को इन्द्रियो का सही ज्ञान हुआ है या नही। जैसे :—

प्रश्न—तुम्हारी चक्षु इन्द्रिय कहाँ है ? आदि।

(५) निम्नलिखित शकाओं का निम्नानुसार सतर्क समाधान करना है —

प्रश्न—इन्द्रियाँ तो ज्ञान मे सहायक है—उन्हे जीतना क्यो ?

उत्तर—ये भोगो मे उलझाने मे भी तो निमित्त है।

प्रश्न—इन्द्रिय-भोगो को छोडने की बात कहो—इन्द्रिय ज्ञान को तो नही छोडना ?

उत्तर—इन्द्रियाँ-मात्र पुद्गल को जानने मे ही निमित्त है। आत्मा के जानने मे तो वे निमित्त भी नही।

प्रश्न—जिसका जितना ज्ञान कराया उतना हो ठीक—उन्हे तुच्छ क्यो कहते हो ?

उत्तर—आत्मा का हित तो आत्मा के जानने मे है। पुद्गल के जानने मे नही। पुद्गल के जानने मे उलझा हुआ आत्मा आत्मज्ञान मे वञ्चित रह जाता है। अत इन्द्रिय ज्ञान तुच्छ कहा जायगा।

पाठ-निर्देश १७

(वालवोध पाठमाला भाग ३—पाठ ५)

"सदाचार"

आवश्यक निर्देश :–

(१) सदाचार को दो भागो मे बाँटना —

(क) अहिंसा मूलक—जिसमे हिंसा न हो।

(ख) सभ्यता मूलक—स्वास्थ्य व सामाजिक परपरा के अनुकूल हो। जैसे-वाजार में खडे-खड़े चलते-फिरते नही खाना, आदि।

(२) अभक्ष्यो को तीन भागो मे विभाजित करना .—

(क) हिंसा मूलक—(त्रसघात, वहुघात)

(ख) असभ्यता मूलक—(नशाकारक अनुपसेव्य)

(ग) अस्वास्थ्यकर—(अनिष्ट)

(३) अभक्ष्य व त्रसघात आदि पाचो अभक्ष्यो की परिभाषा पृथक्-पृथक् वस्तुनिष्ठ पद्धति स समझाना व तैयार कराना।

(४) पाचों प्रकार के अभक्ष्यो को इस प्रकार स्पष्ट करना जिससे वालको को उनकी पृथक्ता ध्यान मे आ जावे। जैसे —

निम्नलिखित मे वताइये कौन-कौनसा अभक्ष्य है ?

	×	✓
आलू	—त्रसघात,	वहुघात
	✓	×
वड का फल	—त्रसघात,	वहुघात
	✓	×
भांग	—नशाकारक,	अनुपसेव्य
	×	✓
लहसुन	—त्रसघात,	वहुघात
	×	✓
लार	—नशाकारक,	अनुपसेव्य
ब्लेड प्रेशर	×	✓
वाले को नमक	—वहुघात,	अनिष्ट

पाठ-निर्देश १८

(बालबोध पाठमाला भाग ३—पाठ ७)

"भगवान नेमिनाथ"

आवश्यक निर्देश :—

(१) भगवान नेमिनाथ का सामान्य जीवन-परिचय बालको को अपने शब्दो मे तैयार कराना।

(२) गिरनार क्षेत्र का सामान्य परिचय देकर उसका महत्त्व बताना।

(३) भगवान नेमिनाथ अपनी पत्नी राजुल को बिलखती हुई छोडकर चले गये थे। क्या यह सच है? यदि नही, तो लोग ऐसा क्यो कहते हैं? इसे पाठ के आधार पर अच्छी तरह स्पष्ट करना।

(४) नेमिनाथ का वैराग्य लेना राजुल की दृष्टि से अच्छा रहा—इसे सतर्क स्पष्ट करना।

पाठ-निर्देश १६

(बालबोध पाठमाला भाग ३—पाठ ८)

"जिनवाणी स्तुति"

आवश्यक निर्देश :—

(१) लोक मे गगा की पवित्रता धन-धान्य समृद्धिकारक होने से है। कवियो की अतिशयोक्तियो मे गगा को तीर्थ के रूप मे प्रदर्शित किया है। यहाँ स्तुतिकार ने जिनवाणी का रूपक गंगा के रूप में बाधा है। इसे बालको को स्पष्ट करना।

(२) दूसरे छन्द मे जिनवाणी का रूपक दीपक की शिखा से बाधा है—इसे भी स्पष्ट करना चाहिये।

(३) जिनवाणी स्तुति को बालको को कठस्थ कराना चाहिये।

(४) जिनवाणी स्तुति का सामान्यार्थ तैयार कराना चाहिये।

(५) जिनवाणी स्तुति मे आये भावो को प्रश्नोत्तर के माध्यम से समझाना एव तैयार कराना चाहिये। जैसे —

प्रश्न—जिनवाणी गगा कहाँ से निकलती है?

उत्तर—महावीर भगवान रूपी हिमालय से।

प्रश्न—यदि जिनवाणी रूपी दीप शिखा न होती तो क्या होता?

उत्तर—हम तत्त्वज्ञान प्राप्त नही कर पाते।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर-४ (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन शिविर परीक्षा, १९७५

बालबोध-प्रशिक्षण परीक्षा

प्रथम प्रश्न-पत्र (सैद्धान्तिक)

समय :– १ घण्टा पूर्णाङ्क : २५

१ निम्नलिखित मे से किन्ही आठ की परिभाषा लिखिए :—

तीर्थङ्कर, मगल, विश्व, हिंसा, परिग्रह, परमेष्ठी, द्रव्यत्व गुण, अरहन्त परमेष्ठी, मूलगुण और प्रमेयत्व गुण । ८

२ निम्नलिखित में से किन्ही ६ मे अन्तर स्पष्ट कीजिए :—

१ जीव और अजीव ।
२ अस्तित्व गुण और वस्तुत्व गुण ।
३ कषाय और पाप ।
४. धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य ।
५ जिन और जैन ।
६ राग और द्वेष ।
७ गुण और पर्याय ।
८. त्रसघात और बहुघात ९

३ निम्नलिखित मे से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :—

१. क्या कषाएँ भी पाप हैं ? सतर्क उत्तर दीजिए ।
२. क्या भगवान आदिनाथ की शादी हुई थी ? क्या उनके पुत्र-पुत्रिया भी थे ?
३ सामान्य साधु का स्वरूप लिखकर यह बताइए कि आचार्य और उपाध्याय मे क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं ?
४. श्रावक के मूलगुणों का वर्णन कीजिए ।
५. प्रत्येक गति के बध के पृथक्-पृथक् कारण बताइए । ८

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर-४ (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन शिविर परीक्षा, १९७५

बालबोध-प्रशिक्षण परिक्षा

द्वितीय प्रश्न-पत्र (शिक्षण पद्धति)

समय २ घण्टे पूर्णाङ्क : २५

१ निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए —

(क) एक कुशल अध्यापक को कक्षा मे किन-किन बातो का ध्यान रखना आवश्यक है ? ३

(ख) किन्ही तीन की परिभाषा दीजिए —
प्रकरण, पूर्वज्ञान, गृहकार्य, विचार-विश्लेषण । ३

(ग) किन्ही दो मे अन्तर स्पष्ट कीजिए —

(१) उद्देश्य और उद्देश्य कथन ।

(२) बोधगम्य प्रश्नोत्तर और वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर ।

(३) आदर्श वाचन और अनुकरण वाचन । ४

२ 'भगवान नेमिनाथ' अथवा 'गतियाँ' नामक पाठ [illegible]-योजना प्रस्तुत कीजिए । १०

३ निम्नलिखित मे से किसी एक पाठ का पाठ-निर्देश तैयार कीजिए:—
द्रव्य-गुण-पर्याय, सदाचार (बाल सभा), देव-दर्शन ।

परिशिष्ट १

(१) चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न

नाम तीर्थङ्कर	चिह्न	नाम तीर्थङ्कर	चिह्न
ऋषभदेव	वृषभ (बैल)	विमलनाथ	शूकर (सुअर)
अजितनाथ	हाथी	अनतनाथ	सेही
सभवनाथ	घोडा	धर्मनाथ	वज्रदण्ड
अभिनन्दन	बन्दर	शान्तिनाथ	हरिण
सुमतिनाथ	चकवा	कुन्थुनाथ	बकरा
पद्मप्रभ	कमल	अरनाथ	मच्छ
सुपार्श्वनाथ	साथिया	मल्लिनाथ	कलश
चन्द्रप्रभ	चन्द्रमा	मुनिसुव्रत	कछुआ
पुष्पदन्त	मगर	नमिनाथ	नील कमल
शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	नेमिनाथ	शख
श्रेयासनाथ	गेंडा	पार्श्वनाथ	सर्प
वासुपूज्य	भैंसा	महावीर	सिंह

(२) चौबीस परिग्रह

परिग्रह दो प्रकार के होते है :—
(१) अतरग और (२) बहिरग।

अतरग परिग्रह

१ मिथ्यात्व, २ क्रोध, ३. मान, ४ माया, ५. लोभ, ६ हास्य, ७. रति, ८. अरति, ९. शोक, १०. भय, ११. जुगुप्सा, १२. स्त्रीवेद, १३. पुरुषवेद, १४. नपुसकवेद। ये १४ अतरग परिग्रह है।

बहिरग परिग्रह

१. क्षेत्र (खेत), २. मकान, ३. चांदी, ४. सोना, ५. धन, ६. धान्य, ७. दासी, ८. दास, ९. वस्त्र, १०. वर्तन। ये १० बहिरग परिग्रह हैं।

(३) बाईस अभक्ष्य

ओरा घोरबरा निसिभोजन,
बहुबीजा बेंगन सधान ।
पीपर बर ऊमर कठूबर,
पाकर जो फल होई अजान ।।
कदमूल माटी विष आमिष,
मधु माखन अरु मदिरापान ।
फल अति तुच्छ तुसार चलित रस,
जिनमत ए बाईस अखान ।।

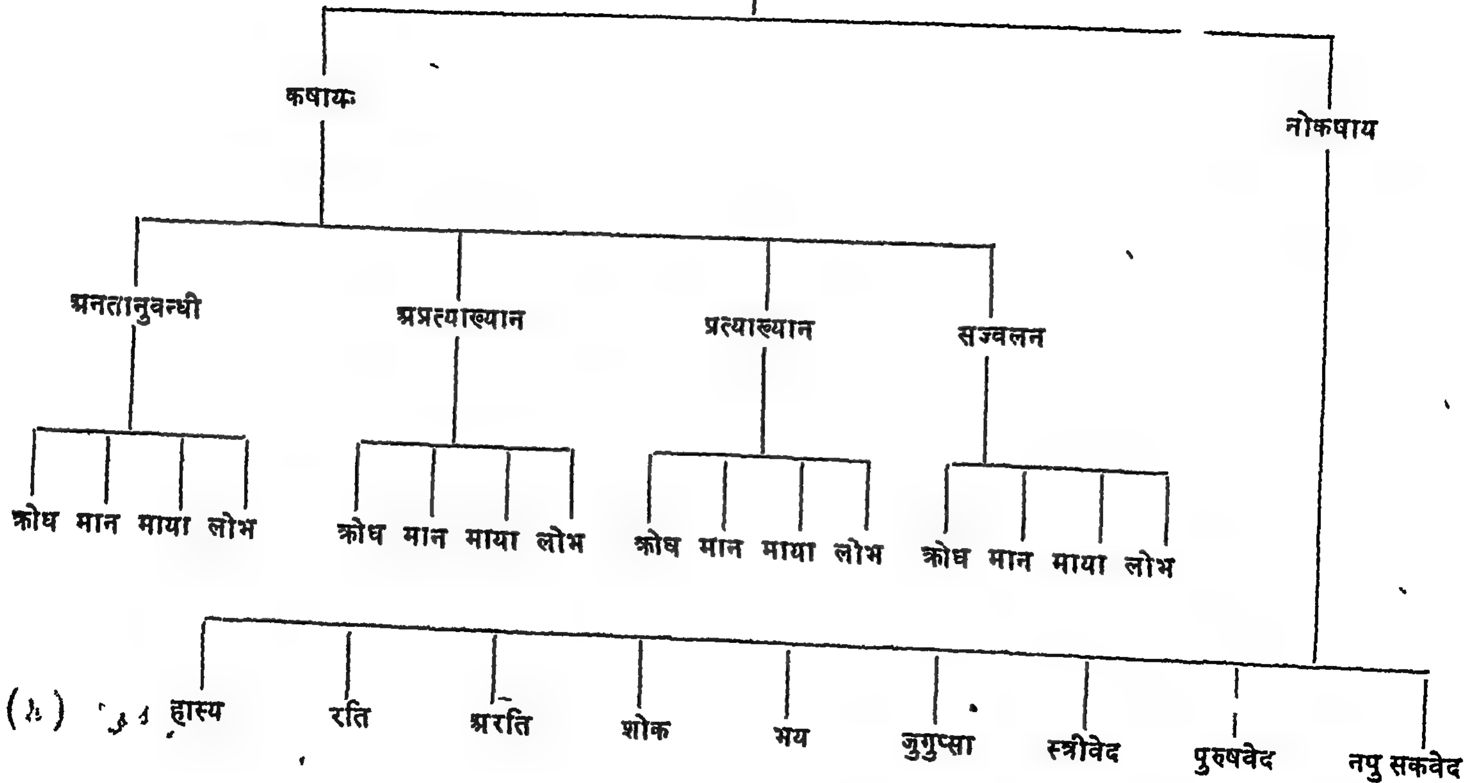
१ ओला, २ द्विदल, ३. रात्रिभोजन, ४. बहुबीजा, ५ बैंगन, ६ अथाना – मुरब्बा, ७. पीपरफल, ८. बडफल, ९. ऊमरफल, १० कठूमर, ११ पाकरफल, १२ अजानफल, १३ कदमूल, १४ माटी, १५ विष, १६ मास, १७. शहद, १८ मक्खन, १९. शराब, २०. अतिसूक्ष्म फल, २१ वर्फ, २२ चलित रस । ये वाईस अभक्ष्य हैं ।

(४) पच्चीस कषायें

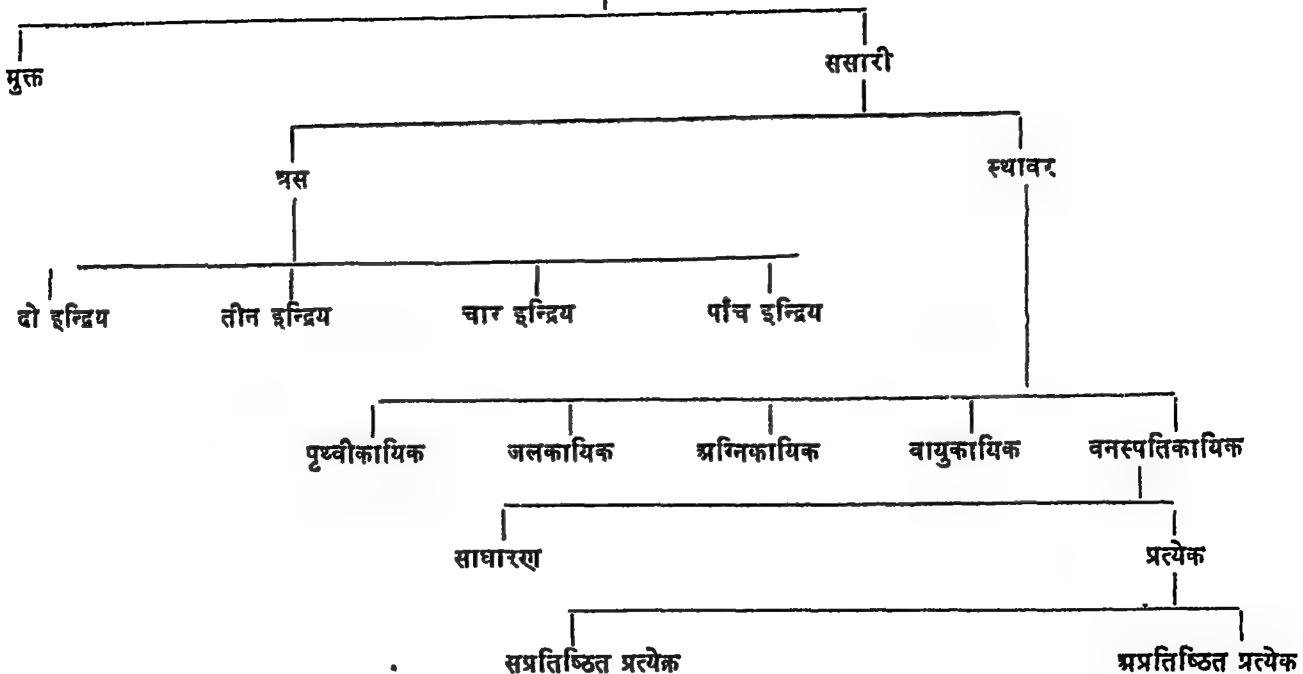
१ से ४. अनन्तानुवधी क्रोध-मान-माया-लोभ,
५ से ८. अप्रत्याख्यान क्रोध-मान-माया-लोभ,
९ से १२ प्रत्याख्यान क्रोध-मान-माया-लोभ,
१३ से १६ सज्वलन क्रोध-मान-माया-लोभ,
१७ से २५ हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुपवेद, नपुसकवेद । ये पच्चीस कपायें है ।

उक्त हास्य आदि ९ कपायो को 'नोकपाय' भी कहते हैं ।

इनको अगले पृष्ठ पर दिये गये चार्ट द्वारा भली-भाति समझा जा सकता है ।


कषाय
कषायः
नोकषाय
अनतानुबन्धी
अप्रत्याख्यान
प्रत्याख्यान
सज्वलन
क्रोध मान माया लोभ
क्रोध मान माया लोभ
क्रोध मान माया लोभ
क्रोध मान माया लोभ
हास्य
रति
अरति
शोक
भय
जुगुप्सा
स्त्रीवेद
पुरुषवेद
नपु सकवेद

(५) जीव के भेद



जीव
मुक्त
ससारी
त्रस
स्थावर
दो इन्द्रिय
तीन इन्द्रिय
चार इन्द्रिय
पाँच इन्द्रिय
पृथ्वीकायिक
जलकायिक
अग्निकायिक
वायुकायिक
वनस्पतिकायिक
साधारण
प्रत्येक
सप्रतिष्ठित प्रत्येक
अप्रतिष्ठित प्रत्येक

(६) पंचपरमेष्ठी के मूलगुण

(क) अरहन्त परमेष्ठी :–

चौंतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ।
अनंत चतुष्टय गुण सहित, छीयालीसों पाठ॥

३४ अतिशय, ८ प्रातिहार्य और ४ अनतचतुष्टय, ये अरहन्त परमेष्ठी के ४६ गुण हैं। ३४ अतिशयो मे से १० अतिशय जन्म के होते है, १० केवलज्ञान के होते है और १४ देवकृत होते हैं।

जन्म के दश अतिशय

अतिशय रूप सुगन्ध तन, नाहिं पसेव निहार।
प्रियहितवचन अतुल्यबल, रुधिर श्वेत आकार॥
लच्छन सहसरु आठ तन, समचतुष्क संठान।
वज्रवृषभनाराचजुत, ये जनमत दश जान॥

१. अत्यन्त सुन्दर शरीर, २. अति सुगन्धमय शरीर, ३. पसेव रहित शरीर, ४. मल-मूत्र रहित शरीर, ५. हितमितप्रिय वचन बोलना, ६. अतुल्य बल, ७ दूध के समान सफेद खून, ८. शरीर मे एक हजार आठ लक्षण, ९. समचतुरस्रसंस्थान, १०. वज्रवृषभ नारच सहनन; ये दश अतिशय अरहन्त भगवान के जन्म से ही होते हैं।

केवलज्ञान के दश अतिशय

योजन शत इक मे सुभिख, गगन-गमन मुख चार।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाही कवलाहार॥
सबविद्या-ईश्वरपनो, नाहिं बढे नख केश।
अनिमिष दृग छायारहित, दश केवल के वेश॥

१. एकसौ योजन मे सुभिक्षता, २. आकाश मे गमन, ३. चारो ओर मुखो का दिखना, ४. अदया का अभाव, ५. उपसर्ग का न होना, ६. कवलाहार का नही होना, ७. समस्त विद्याओ का स्वामीपना, ८. नख-केशो का न बढना, ९. नेत्रों की पलके न झपकना, १०. शरीर की छाया न पडना; ये दश अतिशय केवलज्ञान होने के समय प्रकट होते हैं।

देवकृत चौदह अतिशय

देवरचित है चारदश, अर्द्धमागधी भाष।
आपसमाही मित्रता, निर्मलदिश आकाश ।।
होत फूल फल ऋतु सबै, पृथिवी काचसमान।
चरण कमल तल कमल है, नभ तैं जय जय बान ।।
मन्द सुगन्ध बयारि पुनि, गन्दोधक की वृष्टि।
भूमिविषै कण्टक नहीं, हर्षमयी सब सृष्टि ।।
धर्मचक्र आगे रहे, पुनि वसु मगल सार।
अतिशय श्री अरहन्त के, ये चौतीस प्रकार ।।

१. भगवान की अर्द्धमागधी भाषा का होना, २ समस्त जीवो मे परस्पर मित्रता का होना, ३. दिशाओ का निर्मल होना, ४ आकाश का निर्मल होना ५. सब ऋतु के फल-फूल का एक ही समय फलना, ६. एक योजन तक की पृथ्वी का दर्पण की तरह निर्मल होना, ७. चलते समय भगवान के चरण-कमलो के तले स्वर्ण-कमलो का होना, ८ आकाश मे जय-जय ध्वनि का होना, ९ मद सुगधित पवन का चलना, १० सुगधमय जल की वृष्टि होना, ११. पवनकुमार देवो के द्वारा भूमि का कण्टकरहित होना, १२. समस्त जीवो का आनदमय होना, १३ भगवान के आगे धर्मचक्र का चलना, १४. छत्र चमर ध्वजा घटा आदि आठ मगल द्रव्यो का साथ रहना। ये चौदह अतिशय देवकृत होते हैं।

आठ प्रातिहार्य

तरु अशोक के निकट मे, सिंहासन छविदार।
तीन छत्र सिरपै लसै, भामण्डल पिछवार ।।
दिव्यध्वनि मुखतै खिरै, पुष्पवृष्टि सुर होय।
ढोरै चौसठि चमर जख, बाजे दुन्दुभि जोय ।।

१. अशोकवृक्ष का होना, २. रत्नमय सिंहासन, ३ भगवान के सिर पर तीन छत्र का होना, ४ भगवान की पीठ के पीछे भामण्डल का होना, ५ भगवान के मुख से निरक्षरी दिव्यध्वनि का होना, ६. देवो के द्वारा फूलो की वर्षा होना, ७ यक्ष देवो द्वारा चौसठ चमरो का ढुरना, ८ दुन्दुभि बाजो का बजना, ये आठ प्रातिहार्य हैं।

अनन्त चतुष्टय

ज्ञान अनन्त अनन्तसुख, दरस अनन्त प्रमान।
बल अनन्त अरहंत सो, इष्टदेव पहिचान।।

१. अनंतदर्शन, २. अनंतज्ञान, ३. अनतसुख, ४. अनतवीर्य, ये चार अनंतचतुष्टय हैं।

(ख) सिद्धपरमेष्ठी :—

समकित दर्शन ज्ञान, अगुरुलघु अवगाहना।
सूच्छम वीरजवान, निराबाध गुण सिद्ध के।।

१. क्षायिक सम्यक्त्व, २. अनंतदर्शन, ३. अनंतज्ञान, ४. अगुरुलघुत्व, ५. अवगाहनत्व, ६. सूक्ष्मत्व, ७. अनन्तवीर्य, ८. अव्याबाध; ये सिद्धों के ८ मूलगुण होते हैं।

(ग) आचार्य परमेष्ठी —

द्वादश तप दश धर्मजुत, पालै पंचाचार।
षट आवशि त्रयगुप्ति गुन, आचरज पद सार।।

१२. तप, १० धर्म, ५ आचार, ६ आवश्यक, ३ गुप्ति; ये आचार्य परमेष्ठी के ३६ मूलगुण होते हैं।

बारह तप

अनशन ऊनोदर करे, व्रत संख्या रस छोर।
विविक्त शयनासन धरै, काय कलेश सुठोर।।
प्रायश्चित धर विनयजुत, वैयाव्रत स्वाध्याय।
पुनि उत्सर्ग विचारकै, धरै ध्यान मन लाय।।

१. अनशन, २. ऊनोदर, ३. व्रतपरिसंख्यान, ४. रसपरित्याग, ५. विविक्तशय्यासन, ६. कायक्लेश, ७. प्रायश्चित, ८. विनय, ९. वैयावृत, १०. स्वाध्याय, ११. व्युत्सर्ग, १२. ध्यान, ये बारह प्रकार के तप हैं।

दस धर्म

छिमा मारदव आरजव, सत्यवचन चितपाग ।
संजम तप त्यागी सरव, आकिञ्चन तियत्याग ।।

१ उत्तम क्षमा, २ उत्तम मार्दव, ३. उत्तम आर्जव, ४. उत्तम सत्य, ५. उत्तम शौच, ६ उत्तम सयम, ७ उत्तम तप, ८ उत्तम त्याग, ९ उत्तम आकिंचन, १० उत्तम ब्रह्मचर्य, ये दश धर्म हैं ।

छह आवश्यक

समता धर वदन करैं, नाना थुती बनाय ।
प्रतिक्रमण स्वाध्याय जुत, कायोत्सर्ग लगाय ।।

१ समता, २. वंदना, ३. स्तवन, ४. प्रतिक्रमण, ५ स्वाध्याय ६ कायोत्सर्ग, ये छह आवश्यक हैं ।

पञ्च आचार और तीन गुप्ति

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, वीरज पंचाचार ।
गोपैं मन वच काय को, गिन छतीस गुणसार ।।

१ दर्शनाचार, २. ज्ञानाचार, ३ चारित्राचार, ४. तपाचार, ५. वीर्याचार; ये पाच आचार हैं ।

१. मनोगुप्ति, २. वचनगुप्ति, ३ कायगुप्ति; ये तीन गुप्तियाँ हैं ।

(घ) उपाध्याय परमेष्ठी :—

११ अंग और १४ पूर्व, उपाध्याय परमेष्ठी के ये २५ मूलगुण है ।

ग्यारह अग

प्रथमहि आचाराग गनि, दूजौ सूत्रकृताग ।
ठाणअग तीजौ सुभग, चौथौ समवायाग ।।
व्याख्यापण्णति पाचमौ, ज्ञातृकथा षट्जान ।
पुनि उपासकाध्ययन है, अत कृतदश ठान ।।
अनुत्तरण उत्पाद दश, सूत्रविपाक पिछान ।
बहुरि प्रश्नव्याकरण जुत, ग्यारह अग प्रमान ।।

१. आचारांग, २. सूत्रकृताग, ३. स्थानांग ४. समवायाग, ५. व्याख्याप्रज्ञति अंग ६. ज्ञातृकथांग, ७. उपासकाध्ययनांग ८. अंत.कृतदशांग, ९. अनुत्तरोत्पादकदशाग, १०. प्रश्नव्याकरणाग, ११. विपाक सूत्राग; ये ग्यारह अंग हैं।

चौदह पूर्व

उत्पादपूर्व अग्रायणी, तीजो वीरजवाद।
अस्तिनास्तिपरवाद पुनि, पचम ज्ञानप्रवाद।।
छट्ठो कर्मप्रवाद है, सतप्रवाद पहिचान।
अष्टम आतमप्रवाद पुनि, नवमों प्रत्याख्यान।।
विद्यानुवाद पूरव दशम, पूर्वकल्याण महन्त।
प्राणवाद किरिया वहुल, लोकविन्दु है अन्त।।

१. उत्पादपूर्व, २. अग्रायणीपूर्व, ३. वीर्यानुवादपूर्व, ४ अस्तिनास्तिप्रवादपूर्व, ५. ज्ञानप्रवादपूर्व, ६. कर्मप्रवादपूर्व ७. सत्यप्रवादपूर्व, ८. आत्मप्रवादपूर्व, ९. प्रत्याख्यानपूर्व, १०. विद्यानुवादपूर्व, ११. कल्याणवादपूर्व, १२. प्राणानुवादपूर्व, १३. क्रियाविशालपूर्व, १४. लोकविन्दुपूर्व, ये चौदह पूर्व हैं।

(ङ) साधु परमेष्ठी :—

५ महाव्रत, ५ समिति, ५ इन्द्रियविजय, ६ आवश्यक, ७ शेष गुण, ये साधु परमेष्ठी के २८ मूलगुण है।

पाच महाव्रत

१. अहिंसा महाव्रत, २. सत्य महाव्रत, ३. अचौर्य महाव्रत, ४ ब्रह्मचर्य महाव्रत, ५. परिग्रहत्याग महाव्रत; ये ५ महाव्रत हैं।

पाच समिति

१. ईर्या समिति, २. भाषा समिति, ३. एषणा समिति, ४. आदाननिक्षेपण समिति, ५ प्रतिष्ठापन समिति; ये ५ समिति है।

पाच इन्द्रियविजय

१. स्पर्श इन्द्रियविजय, २ रसना इन्द्रियविजय, ३. घ्राण इन्द्रियविजय, ४. चक्षु इन्द्रियविजय, ५. कर्ण इन्द्रियविजय, ये पाच इन्द्रियविजय हैं।

छह आवश्यक

१. समता, २ वंदना, ३. स्तवन, ४. प्रतिक्रमण, ५. स्वाध्याय, ६. कायोत्सर्ग; ये छह आवश्यक हैं।

सात शेष गुण

१. अस्नान, २. भूमि पर सोना, ३. वस्त्र-त्याग, ४. केश-लुंचन, ५. दिन मे एक बार अल्प आहार करना, ६. अदन्तधोवन, ७. खडे-खड़े आहार लेना; ये सात शेष गुण हैं।

उक्त २८ मूलगुण आचार्य और उपाध्याय परमेष्ठी मे भी पाये जाते हैं, क्योकि वे सामान्य साधु तो हैं ही।



अध्याय | तृतीय

प्रवेशिका प्रशिक्षण



प्रवेशिका प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की प्रवेशिका परीक्षा मे निर्धारित वीतराग-वज्ञान पाठमालाओ मे अध्यापन की पद्धति मे अध्यापक बन्धुओ को प्रशिक्षित करना एव उनमे प्रतिपादित प्रमुख तात्त्विक सिद्धान्तो की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

प्रवेशिका प्रशिक्षण सबधी उद्देश्य दो भागो मे विभाजित किये जा सकते हैं :–

(क) सामान्य उद्देश्य

(ख) विशेष उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य–सामान्य उद्देश्य वे है जो प्रवेशिका मे पढाये जाने वाले सभी पाठो मे सामान्य रूप से रहते है। वे मुख्यत निम्नानुसार हैं –

(i) छात्रो मे आत्महितकारी शास्त्रो के पढने की रुचि जागृत करना।

(ii) चारो अनुयोगो का समन्वित ज्ञान देना।

(iii) तत्त्वज्ञान और सदाचार सबधी ज्ञान देना।

(iv) अपने पूर्वजो के सबध मे सामान्य जानकारी देना।

(v) जैन साहित्य-निर्माता आचार्यों एव विद्वानों का सामान्य परिचय कराना।

(vi) जैन तीर्थों एव पर्वों का सामान्य ज्ञान देना।

(vii) शास्त्रो के मर्म को समझने की पद्धति से परिचित कराना।

(viii) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूपी मोक्षमार्ग को जीवन मे प्राप्त करने की प्रेरणा देना।

(ix) सच्चे देव शास्त्र गुरू के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न कराना।

(x) प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दो मे व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न कराना।

(ख) विशेष उद्देश्य—विशेष उद्देश्य पढाये जाने वाले पाठ से सबधित होते है। अत ये प्रत्येक पाठ के अलग-अलग होते है तथा पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं। इन्हे यथास्थान स्पष्ट किया जावेगा।

वीतराग-विज्ञान पाठमालाओ के पाठ पद्य, गद्य एव सवाद के रूप मे हैं। प्रत्येक प्रकार की एक-एक आदर्श पाठ-योजना यहाँ दी जा रही है। वीतराग-विज्ञान पाठमालाओ के तीनो भागो का प्रतिनिधित्व रहे—इस बात को भी ध्यान मे रखकर प्रत्येक भाग मे से एक-एक पाठ चुना गया है।

इस प्रकार इस अध्याय मे निम्न तीन पाठो की आदर्श पाठ-योजनायें प्रस्तुत है :—

(१) देव-स्तुति
(२) देव शास्त्र गुरु
(३) मैं कौन हूँ ?

शेष पाठो के पाठ-निर्देश दिये गये हैं।

आदर्श पाठ-योजना १

स्थान–श्री एस. एल. जैन उ. मा. विद्यालय, विदिशा (म.प्र)

कक्षा–प्रवेशिका प्रथम खण्ड

प्रकरण–"देव-स्तुति"

"सकल ज्ञेय · ·········· ·· ·········स्तुति के आरंभ के १० छंद।"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य–सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एव बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(ख) विशेष उद्देश्य–'देव-स्तुति' का भाव-ज्ञान छात्रो को देना एवं स्तुति याद कराना।

पूर्व-ज्ञान

छात्र देव के सामान्य स्वरूप और देव-दर्शन की विधि से परिचित है। वे बालबोध पाठमाला भाग १ के 'देव-दर्शन', बालबोध पाठमाला भाग २ के 'देव-स्तुति' एव बालबोध पाठमाला भाग ३ के 'देव-दर्शन' नामक पाठो मे उक्त विषय के सबध मे पढ चुके हैं।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि उपलब्ध हो तो तीर्थंकर भगवान का एक कैलेण्डर-साइज चित्र।

उद्देश्य कथन

आज हम आध्यात्मिक कविवर पं० दौलतरामजी द्वारा रचित 'देव-स्तुति' का भाव समझेंगे। यह भी जानेंगे कि भगवान के गुण स्तवन से क्या लाभ है एव हम संसार मे क्यो भटक रहे है ?

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन में पढ़ाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियो मे विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे :–

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) सामान्यार्थ विवेचन
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) साराश कथन

नोट –अन्विति आरम्भ होने के पूर्व लेखक-परिचय नाम का एक सोपान और होगा।

प्रथम दिन

लेखक-परिचय

अध्यापक 'देव-स्तुति' के लेखक पं० दौलतरामजी का सक्षिप्त परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से निम्नानुसार देंगे :–

अध्यापक कथन–जो स्तुति आज हम पढने जा रहे हैं वह अध्यात्मप्रेमी कविवर प० दौलतरामजी ने लिखी है। आपके द्वारा लिखा गया छहढाला नामक ग्रन्थ जैन समाज मे बहुत आदर के साथ पढा जाता है। जैन समाज मे ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो छहढाला से परिचित न हो ? आपने बहुत सुन्दर आध्यात्मिक पद भी लिखे हैं जो सारे भारतवर्ष की शास्त्रसभाओ मे प्रतिदिन गाये जाते है। हम देखेंगे कि उन्होने इस स्तुति मे भी अपूर्व भाव भरे है।

प्रथम अन्विति

"सकल ज्ञेय.... . . . . अछीन।"

आदर्श वाचन

भक्ति का वातावरण उत्पन्न करने के लिये अध्यापक सुर और लय के साथ आदर्श वाचन करेगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक एक-दो छात्रो से इसका सस्वर वाचन करावेंगे और उसमे आवश्यक सुधार स्वय करेंगे या अन्य छात्रो से करावेंगे।

सामान्यार्थ विवेचन

इसमे अध्यापक छन्दो का निम्नानुसार सामान्यार्थ बतावेंगे। साथ ही आवश्यक कठिन शब्दो का अर्थ भी बताते जावेंगे।

अध्यापक कथन—सच्चे देव की स्तुति आरम्भ करते हुये पं० दौलतरामजी कहते हैं कि हे जिनेन्द्र ! आप लोकालोक के ज्ञाता होने पर भी आत्मानन्द मे मग्न हो। घाति कर्मों से रहित प्रभो ! आपकी जय हो।

(अरि=मोहनीय, रज=ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, रहस=अंतराय)।

हे प्रभो ! आप मोहान्धकार को नाश करने वाले वीतरागी विज्ञान के सूर्य हो। अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्तसुख और अनन्तवीर्य से सुशोभित आपकी जय हो।

आपकी शान्तमुद्रा भव्य जीवो को आत्मानुभूति की ओर लक्ष्य ले जाने मे निमित्त होती है। भव्य जीवो के भाग्य से खिरने वाली आपकी दिव्य ध्वनि को सुनकर उनका भ्रम नष्ट हो जाता है।

हे प्रभो ! आपके गुणो का चिन्तवन करने से अपनी और पराये की पहिचान हो जाती है और अनेक आपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। आप समस्त दोषो से रहित और सब विकल्पो से मुक्त हो, सब महिमाओ से युक्त जग के भूषण हो। हे भगवान् ! आप समस्त विरोधो से रहित परम पवित्र शुद्ध ज्ञानमय और अनुपम हो। आप शुभ-अशुभ भावो का अभाव कर स्वभाव परिणति मे विराजमान हो।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

अध्यापक छन्दो मे आई महत्त्वपूर्ण वस्तु का ज्ञान कराने के लिये निम्न प्रश्न स्वय करेगे एव छन्दों के आधार पर उत्तर देंगे :—

प्रश्न	उत्तर
१ भगवान कौन हैं ? (द्वितीय छद के आधार पर)	१. अनन्त चतुष्टय से युक्त वीतरागी परमात्मा ही भगवान है।
२. भगवान की स्तुति से क्या लाभ हैं ? (चतुर्थ छद के आधार पर)	२. (क) अपनी और पराये की पहिचान (भेद-विज्ञान) हो जाती है। (ख) अनेक आपत्तियां (मोह-राग-द्वेष) नष्ट हो जाती हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नोत्तर वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा छात्रों को नियमानुसार तैयार कराये जावेंगे —

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान (भेद-विज्ञान) हो जाती है।	१ भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान होती है या नही ?	१. होती है।
	२. भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान होती है या केवल पराये की ?	२ अपनी और पराये की पहिचान होती है।
	३ भगवान की स्तुति से किस-किसकी पहिचान होती है ?	३. अपनी और पराये की।
	४. अपनी और पराये की पहिचान किससे होती है ?	४. भगवान की स्तुति से।

सारांश कथन—

पठितांश का सारांश निम्नानुसार बताया जायगा :—

अध्यापक कथन—बालको ! आज के पाठ मे भगवान की स्तुति करते हुये बताया गया है कि भगवान चार घाति कर्मों से रहित एव अनन्त-चतुष्टय से युक्त हैं। उनके गुणों के स्मरण से स्वपर भेद-विज्ञान प्रकट होता है और अनेक आपत्तियों का नाश होता है। शुभ-अशुभ भावो का नाश किये विना कोई भगवान नहीं बन सकता है। अतः हमे उनका स्वरूप समझकर उनका ध्यान करना चाहिये। हम भी इस प्रकार भगवान बन सकते हैं।

द्वितीय अन्विति

"अष्टादश दोष ··· ·········· ·····स्वपद सार।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन— पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन—हे भगवान् ! आप १८ दोषों से रहित अनंत चतुष्टय सहित हैं, मुनिराज और गणधर देव आपकी स्तुति करते हैं। आप केवलज्ञान आदि नौ लब्धियो से युक्त हैं। आपके बताये मार्ग पर चलकर अनन्त जीव मोक्ष गये हैं, जा रहे हैं और जावेंगे। संसार समुद्र से तारने मे, भयकर दुःख दूर करने में आप ही निमित्त कारण हो; अत. मैं आपकी शरण में आया हूँ और अपना चिरकालीन दुखड़ा सुना रहा हूँ।

मैं स्वयं अपने को भूलकर, कर्मों के फल पुण्य-पाप को अपनाकर अपने को पर का व पर को अपना कर्त्ता मानकर और पर-पदार्थों मे इष्ट-अनिष्ट कल्पना करके आज तक संसार में घूमा हूँ।

हम स्वयं अपने अज्ञान के कारण दुःखी हैं। हमने शरीर को आत्मा मानकर कभी भी आत्मानुभव की ओर ध्यान नहीं दिया।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ यह जीव ससार मे क्यो घूमा ? (९वें छंद के आधार पर)	१. (क) अपने को भूल कर। (ख) पुण्य-पाप को अपनाकर। (ग) पर के साथ कर्त्ता-कर्म भाव मानकर। (घ) पर मे इष्ट-अनिष्ट कल्पना करके।
२. यह जीव दु.खी क्यो हुआ ? (१०वें छंद के आधार-पर)	२. (क) अज्ञान के कारण। (ख) शरीर में आत्मबुद्धि के कारण। (ग) आत्मानुभव न होने के कारण।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
जीव अपने को भूलकर ससार मे घूमता है ।	१ जीव अपने को भूलकर ससार मे घूमता है या नही ?	१ घूमता है ।
	२ जीव अपने को भूलकर ससार मे घूमता है या अपने को जानकर ?	२. अपने को भूलकर ।
	३ जीव ससार मे क्यो घूमता है ?	३. अपने को भूलकर ।
	४ अपने को भूल जाने से जीव का क्या होता है ?	४. जीव ससार मे घूमता है ।

नोट —इसी प्रकार सभी तथ्य-वाक्यो को तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

पठिताश का साराश निम्नानुसार बताया जायगा

अध्यापक,कथन—अभी हमने भगवान की स्तुति मे यह समझा कि भगवान १८ दोषो से रहित, केवलज्ञानी व नौ लब्धियो से युक्त होते हैं। उनके बताये मार्ग पर चलकर हम भी भगवान बन सकते हैं। हम आज तक ससार मे अपनी स्वय की भूल से ही घूम रहे है और स्वय के अज्ञान के कारण ही दुःखी हैं।

समापन

पठित वस्तु को छात्रो ने कितना हृदयंगम किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न किये जावेंगे —

(१) अपने को भूलकर इस जीव की क्या दशा हुई ?
(२) अठारह दोषो से रहित कौन होते हैं ?
(३) हम दु खी क्यो है ?

गृहकार्य

अध्यापक निम्नानुसार कार्य अगले दिन करके लाने के लिये देंगे —

अध्यापक कथन—कल तुम्हे स्तुति के आज पढे छन्द याद करके लाने हैं तथा चौथे और नवें छन्द के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखकर व याद करके लाने हैं —

(१) भगवानके गुणोका चिनवन करने से क्या लाभ होते है ?
(२) अनादि से यह जीव ससार मे क्यो घूमा ?

द्वितीय दिन

स्थान—श्री एस. एल. जैन उ. मा. विद्यालय, विदिशा (म प्र.)
कक्षा—प्रवेशिका प्रथम खण्ड
प्रकरण—"देव-स्तुति"
"सकल ज्ञेय······ ···· ·········स्तुति के ११वें छंद से अंत तक

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य**— पूर्ववत् ।
(ख) **विशेष उद्देश्य**— पूर्ववत् ।

सहायक सामग्री— पूर्ववत् ।

उद्देश्य कथन

आज हम देव-स्तुति के माध्यम से यह समझेंगे कि भगवान को नही पहिचानने से क्या-क्या दुःख होते हैं और आत्मा का अहित क्यो हो रहा है ?

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ दो अन्वितियो मे समाप्त होगा। द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से प्रथम अन्विति से पूर्व आने वाला लेखक-परिचय नामक सोपान नही होगा एव उसके स्थान पर प्रथम अन्विति के पहले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नामक एक सोपान और होगा ।

द्वितीय अन्विति मे लेखक-परिचय एव पूर्व-पाठ मूल्याकन नामक सोपान को छोडकर बाकी सब सोपान रहेगे ।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

पूर्वपठित पाठ को छात्रो ने तैयार किया है या नहीं जानने के लिए निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न किये जावेंगे :—

(१) यह जीव ससार मे क्यो घूमा ?
(२) देव-स्तुति का पहला छन्द सुनाइये ।
(३) "आकुलित भयो अज्ञान धारि"······ आदि छ सामान्यार्थ बताइये ।

भम अन्विति

"तुमको बिन जाने ....ज्यो निजाधीन ।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत् ।

सामान्यार्थ विवेचन— पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन—भक्त भगवान से कहता है कि हे भगवन् ! आपको पहिचाने बिना मैंने जो भी कष्ट पाये हैं उन्हे आप केवलज्ञानी होने से जानते ही हैं । मैंने तिर्यंच, नरक, मनुष्य और देव गति मे अनन्त बार जन्म-मरण किया है ।

अब काललब्धि आने से आपके दर्शन प्राप्त हुये और मेरा मन शान्त हो गया है । मैं चाहता हूँ कि आपके चरणो की शरण सदा प्राप्त रहे । आप मे अनन्त गुण हैं । भक्त गण आपको पार उतारने वाला कहते हैं ।

आत्मा का अहित करने वाले पचेन्द्रियो के विषयो और कषायो मे मेरा परिणाम न लगे । मैं तो बस अपने मे ही लीन रहना चाहता हूँ ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ भगवान को पहिचाने बिना इस जीव की क्या दशा हुई ? (११वें छन्द के आधार पर)	१ चारो गतियो में जन्म-मरण के दु ख उठाता रहा ।
२. आत्मा का अहित करने वाले कौन हैं ? (१४वें छन्द के आधार पर)	२ पचेन्द्रियों के विषय और क्रोधादि कषाएँ ।
३. ज्ञानी भक्त क्या चाहता है ? (१४वें-१५वें छन्द के आधार पर)	३ (क) आत्मा मे लीन होना । (ख) पूर्ण स्वतन्त्र होना ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान को जाने बिना जीव चारो गतियो में जन्म-मरण के दुःख पाता है।	१ भगवान को जाने बिना जीव चारो गतियो मे जन्म-मरण के दुःख पाता है या नहीं ?	१. पाता है।
	२. भगवान को जाने बिना जीव चारों गतियो मे जन्म-मरण के दुःख पाता है या सुख ?	२. जन्म-मरण के दुःख ।
	३. भगवाम को जाने बिना जीव चारो गतियो में क्या पाता है ?	३. जन्म-मरण के दुःख ।
	४. जीव चारो गतियो मे जन्म-मरण के दुःख क्यो पाता है ?	४. भगवान को जाने बिना।

सारांश कथन

अध्यापक कथन—आज के पाठ मे हमने तीन बातें सीखी —

(१) भगवान को पहिचाने बिना चतुर्गति भ्रमण नही मिटता।

(२) आत्मा का अहित करने वाले—पचेन्द्रियो के विषयों की लालसा और कषाएँ हैं।

(३) ज्ञानी भक्त आत्मा में लीन रहना और पूर्ण स्वतंत्र होना चाहता है।

द्वितीय अन्विति

"मेरे न चाह कछु ·· ·· ····· · · त्रियोग सभार।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन— पूर्ववत्।

अध्यापक कथन—ज्ञानी भक्त भगवान से कह रहा है कि हे भगवन्! मुझे रत्नत्रय के अलावा और कुछ नही चाहिये। जिस प्रकार चन्द्रमा स्वभाव से ही गर्मी को दूर करता है और ठडक लाता है, उसी प्रकार आपकी स्तुति से भी आनन्द प्राप्त होता है। जिस प्रकार अमृत पीने से रोग चला जाता , उसी प्रकार आपके अनुभव से भव का अभाव होता है।

मेरे हृदय मे तो यह विश्वास हो गया है कि आप ससार-समुद्र से पार उतारने वाले जहाज हो तथा तीन लोक और तीन काल मे आपके समान सुखदायक कोई नही है ।

आपके गुण रूपी अनन्त मणियो के गिनने मे गणधर देव भी समर्थ नही है तो अल्पबुद्धि वाला दौलतराम क्या कह सकता है । अत मैं दौलतराम तो मन-वचन-काय सँभालकर नमस्कार करता हूँ ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ ज्ञानी भक्त की क्या इच्छा है ? (१५वें छद के आधार पर)	१ (क) रत्नत्रय निधि पाने की । (ख) मोह-ताप हरने की ।
२. क्या भगवान कुछ देते है ? (१६वें छद के आधार पर)	२ नही—पर जैसे चन्द्रमा शीतलता देता नही—उसकी उपस्थिति मे वातावरण स्वय शीतल हो जाता है, उसी प्रकार भगवान कुछ देते नही, पर उनका स्मरण करने से सहज शान्ति प्राप्त होती है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
ज्ञानी भक्त भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश चाहता है ।	१. ज्ञानी भक्त भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश चाहता है या नही ?	१. चाहता है ।
	२ भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश कौन चाहता है ? ज्ञानी भक्त या अज्ञानी भक्त ?	२ ज्ञानी भक्त ।
	३. भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश कौन चाहता है ?	३. ज्ञानी भक्त ।
	४ ज्ञानी भक्त क्या चाहता है ?	४ रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश ।

सारांश कथन

अध्यापक कथन— बालको ! अभी पढे छन्दो मे हमने निम्न दो बातें जानी :—

(१) ज्ञानी भक्त पूर्ण स्वतन्त्रता चाहता है और उसकी प्राप्ति का मार्ग रत्नत्रय को मानता है, अतः उसे ही चाहता है।

(२) भगवान कुछ देते नही, पर भगवान के स्वरूप का चिन्तवन करने वाले को सहज ही शान्ति प्राप्त होती है।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेंगे :—

(१) रत्नत्रय निधि कौन चाहता है ?

(२) आत्मा के अहित करने वाले कौन हैं ?

गृहकार्य

पठितांश मे अध्यापक अगले दिन करके लाने के लिये निम्नानुसार कार्य देंगे :—

अध्यापक कथन—कल तुम्हे सम्पूर्ण स्तुति याद करके लाना है तथा बोधगम्य प्रश्नोत्तरो के उत्तर स्तुति के आधार पर लिखकर व याद करके लाना है।

आदर्श पाठ-योजना २

(देव शास्त्र गुरु)

स्थान—श्री तिलोकचद जैन उ० मा० विद्यालय, इन्दौर

कक्षा—प्रवेशिका द्वितीय खण्ड

प्रकरण—"सच्चा देव"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य**—देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एव बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(ख) **विशेष उद्देश्य**—सच्चे देव का स्वरूप समझाना।

पूर्व-ज्ञान

देव के सबध मे छात्रो को वालवोध पाठमाला भाग २-३, वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १ मे आगत स्तुतियो एव वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २ मे आगत देव-शास्त्र-गुरु पूजन के आधार पर सामान्य जानकारी है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि संभव हो तो जिनेन्द्र भगवान का कैलेन्डर-साइज चित्र।

उद्देश्य कथन

आज हम जिनका प्रतिदिन पूजन करते है, उन सच्चे देव के स्वरूप पर विचार करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनो मे पढाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियो मे विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे —

आदर्श वाचन
अनुकरण वाचन
विचार-विश्लेषण
बोधगम्य प्रश्नोत्तर
वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
साराश कथन

नोट :—प्रथम दिन की प्रथम अन्विति आरभ होने के पूर्व एक सोपान आधार-परिचय नाम का और होगा।

प्रथम दिन

आधार-परिचय

यह पाठ रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार पर लिखा गया है। अतः अध्यापक छात्रों को आचार्य समन्तभद्र और उनके द्वारा रचित ग्रथ रत्नकरण्डश्रावकाचार का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से निम्नानुसार देंगे :—

अध्यापक कथन—यह देव-शास्त्र-गुरु नामक पाठ विक्रम की द्वितीय शती के दिग्गज आचार्य समन्तभद्र के रत्नकरण्डश्रावकाचार नामक ग्रथ के आधार पर लिखा गया है। आप कदव राजवश के क्षत्रिय राजकुमार थे। आपके बाल्यकाल का नाम शान्ति वर्मा था। आप छन्द, अलकार, काव्य, कोष, तर्क और न्याय आदि के अद्वितीय विद्वान् थे। आप मे बेजोड वाद-शक्ति थी। आपने कई बार घूम-घूम कर कुवादियों का गर्व खण्डित किया था। आपने स्वय ः ः :—

"वादार्थी विचराम्यहं नरपते शार्दूलविक्रीडितम्"
"हे राजन्! मैं वाद के लिए सिंह की तरह विचरण करता हूँ।"

आपने आप्तमीसासा, तत्त्वानुशासन, स्वयभूस्तोत्र, गंधहस्ति महाभाष्य आदि अनेक महाग्रंथ लिखे हैं।

प्रथम अन्विति

"सुबोध—क्यों भाई··· ··· ··· ···· ······ विजय पा ली ।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वय संवाद पद्धति मे एकपात्रीय अभिनय ' क उचित आरोह-अवरोह के साथ प्रस्तुत पाठ का वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा सवाद पद्धति मे अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र सुबोध वाले व दूसरा छात्र प्रबोध वाले अश का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करेंगे। अध्यापक स्वय या अन्य छात्र द्वारा अनुकरण वाचन मे आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

अनुकरण वाचन के पश्चात् अध्यापक प्रस्तुत अन्वितियो मे आगत विचारो, सिद्धातो और परिभाषाओ को विश्लेषण करके निम्नानुसार समझावेंगे –

अध्यापक कथन—देखो भाई ! अभी हमने जो अश पढा है, उसमे निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :—

(१) जैन धर्म मे व्यक्ति को महत्त्व न देकर गुणो को महत्त्व दिया जाता है। जिस व्यक्ति मे पूज्य गुण पाये जावे, वह पूज्य होता है।

(२) वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो, वही सच्चा देव है।

(३) जन्म-मरण, राग-द्वेषादि १८ दोषों से रहित हो, वे वीतरागी हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. पूजन किसकी की जाती है ?	१ देव-शास्त्र-गुरु की।
२. जैन धर्म मे व्यक्ति की मुख्यता है या गुणो की ?	२. गुणों की।
३. सच्चा देव किसे कहते हैं ?	३. जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो, उसे सच्चा देव कहते हैं।
४ वीतरागी किसे कहते हैं ?	४ जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषों से रहित हो; वे वीतरागी हैं।
५. अरहत सिद्ध सच्चे देव हैं या नही ?	५ हैं, क्योंकि वे वीतरागी सर्वज्ञ हैं।
६ देव गति के देव सच्चे देव हैं या नहीं ?	६ नहीं, क्योंकि वे वीतरागी सर्वज्ञ नहीं हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के निम्नानुसार चार सोपानो द्वारा तैयार कराया जायगा :-

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो, उन्हें वीतरागी कहते हैं।	१ जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो; उन्हे वीतरागी कहते हैं या नही ? २. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषों से रहित हो, उन्हे वीतरागी कहते हैं या रागी ? ३. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो, उन्हें क्या कहते हैं ? ४ वीतरागी किन्हे कहते हैं ?	१. कहते हैं। २. वीतरागी। ३ वीतरागी। ४. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो, उन्हे वीतरागी कहते हैं।

नोटः—इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ, सिद्धान्त-वाक्यो तथा तथ्य-वाक्यों को समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे सारांश कथन मे परिभाषाओ और सिद्धांत-वाक्यो को सक्षेप मे सरल भाषा में निम्नानुसार दुहरा दिया जावेगा :—

अध्यापक कथन—अभी हमने तीन बातें सीखी :—

(१) जैन धर्म मे व्यक्ति की मुख्यता नही, वह व्यक्ति के स्थान पर गुणो मे विश्वास रखता है।

(२) सच्चा देव वही है जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितापदेशी हो

(३) जिनमे राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोष न हो, वे वीतरागी हैं।

द्वितीय अन्विति

"सुबोध—वीतरागी तो…… ………… "अच्छा भी होगा।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण

अध्यापक कथन—अभी हमने पढ़ा कि जो तीन लोक और तीन काल सम्बन्धी सभी बातो को एक साथ जानता है, वही सर्वज्ञ है तथा जो वीतराग और सर्वज्ञ हो—वही सच्चा देव है। उसका उपदेश आत्महितकारी होता है, अतः वह हितोपदेशी भी कहा जाता है। उसका उपदेश सच्चा होता है, क्योकि वह पूर्ण ज्ञानी है और उसका उपदेश अच्छा (आत्महितकारी) होता है, क्योकि वह वीतरागी है।

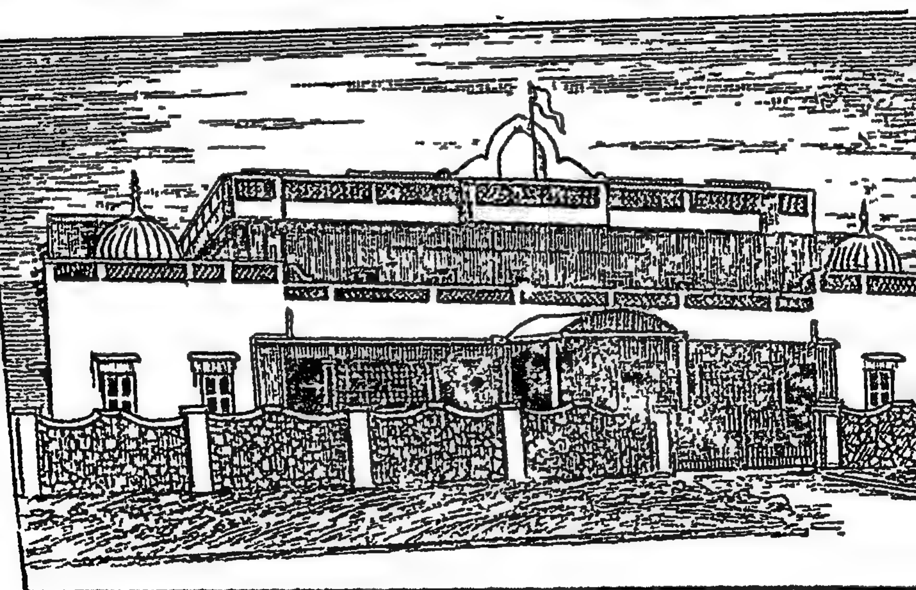
अत सच्चे देव की सच्चाई का आधार सर्वज्ञता और अच्छाई का आधार वीतरागता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सर्वज्ञ किसे कहते हैं ?	१. जो तीन लोक और तीन काल की सब बातें एक साथ जानता हो।
२ सच्चे देव को हितोपदेशी क्यो कहा जाता है ?	२. क्योकि उसकी वाणी में आत्म-हितकारी उपदेश निकलता है।
३. सच्चे देव की वाणी सच्ची क्यों होती है ?	३ झूठ तो अज्ञानता से बोला जाता है, वे सर्वज्ञ हैं,; अतः उनकी वाणी सच्ची ही होती है।
४. उनकी वाणी अच्छी क्यो होती है ?	४. राग-द्वेष (पक्षपात) के कारण बुरी बात कही जाती है। वीत-रागी होने से उनकी बात अच्छी (आत्महितकारी) होती है।

वीतराग-विज्ञान

प्रशिक्षण निर्देशिका



श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर

विचार-विश्लेषण—

पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन—अभी हमने पढा कि वीतरागता की पोषक सच्चे देव की वाणी मे जो तत्त्वोपदेश होता है उसे ही शास्त्र कहते है। उसमे कही भी पूर्वापर विरोध नही होता। इसके अध्ययन से सन्मार्ग का पता चल जाता है, अत जीव खोटे रास्ते पर जाने से बच जाता है।

देव-शास्त्र-गुरु वाले गुरु, विद्या-गुरुओ से भिन्न होते है। भगवान की वाणी के मर्म को जानने वाले वे दिगम्बर होते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ शास्त्र किसे कहते हैं ?	१. पूर्वापर विरोध से रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं।
२ इसके पढने से क्या लाभ है ?	२ जीव कुमार्ग से हटकर सन्मार्ग पर लग जाता है।
३ सच्चे गुरु कैसे होते हैं ?	३ जिनवाणी के मर्म को जानने वाले नग्न दिगम्बर।
४ क्या विद्या-गुरु—गुरु नही हैं ?	४. विद्या-गुरु अष्ट द्रव्य से पूजने योग्य देव-शास्त्र-गुरु वाले गुरु नही हैं। सच्चे गुरु तो नग्न दिगम्बर आत्मज्ञानी, वीतरागी सन्त होते हैं।
५ क्या नग्नता बिना कोई गुरु नही हो सकता ?	५ देव-शास्त्र-गुरु वाले [illegible] नही हो सकते।
६ नग्न होने मात्र से कोई गुरु हो जाता है क्या ?	६ नही आत्मज्ञान [illegible] कोई सच्चा गुरु नही हो सकता।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नोत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के निम्नानुसार चार सोपानो द्वारा तैयार कराया जायेगा —

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते है।	१ पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं या नही ?	१. कहते हैं।
	२ पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं या कुशास्त्र ?	२ शास्त्र।
	३ पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को क्या कहते हैं ?	३. शास्त्र।
	४ शास्त्र किसे कहते हैं ?	४ पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते है।

नोट —इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ, सिद्धान्तो और तथ्यो को समझाया जावेगा।

साराश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे परिभाषाओ व सिद्धान्त-सूत्रो को सक्षेप मे सरल भाषा मे निम्नानुसार दुहरा दिया जायगा —

अध्यापक कथन—अभी हमने दो बाते सीखी —

(१) पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक तत्त्वोपदेश करने वाली सच्चे देव की वाणी ही शास्त्र है।

(२) क्रिया-कर्मों [illegible] सच्चे [illegible] के [illegible]

[illegible]

द्वितीय अन्विति

सुबोध—अच्छा और .... हमे भी ले चलना ।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण—

अध्यापक कथन—अभी हमने पढा कि आत्मज्ञानी सच्चे गुरु निरन्तर आत्मध्यान और स्वाध्याय मे लीन रहते है, सर्व आरभ और परिग्रह से रहित होते हैं और विषय-भोगो की लालसा भी उनमे नही पायी जाती है । रत्नत्रय से युक्त उन मुनियो का बाह्याचार भी शास्त्रानुकूल होता है ।

देव शास्त्र गुरु की पूजा के बदले मे उनसे कुछ मागना मूर्खता है, क्योकि जो सब कुछ छोड चुके हो उनसे कुछ मागना ठीक नही । उनकी पूजा तो उन जैसा बनने के भाव से की जाती है ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ सच्चे गुरु कैसे होते हैं ?	१ (क) आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले । (ख) विषय-भोगो से विरक्त । (ग) रत्नत्रय से युक्त । (घ) आगमानुकूल बाह्याचार से युक्त । (ङ) समस्त आरभ-परिग्रह से रहित ।
२ क्या भगवान से कुछ माँगना ठीक है ?	२ नही, जो सब कुछ त्याग चुके, उनसे कुछ माँगना ठीक नहीं ।
३ तो पूजा क्यो की जाती है ?	३ उन जैसा बनने के भाव से पूजा की जाती है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते हैं ।	१ आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते हैं या नही ? २ आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते है या विद्या-गुरु ? ३ आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को क्या कहते हैं ? ४ सच्चा गुरु किसे कहते है ?	१ कहते हैं । २ सच्चा गुरु । ३ सच्चा गुरु । ४ आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते हैं ।

नोट —(१) इसी प्रकार सच्चे गुरु के पाचो लक्षणो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराया जायगा । तदुपरान्त सच्चे गुरु के पाचो लक्षणो को एकसाथ स्पष्ट कर दिया जायगा ।

(२) शेष प्रश्नो को भी वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराया जायगा ।

साराश कथन

अध्यापक कथन—अभी हमने निम्नलिखित बाते सीखी :—

(१) सच्चे गुरु आत्मज्ञानी, आत्मध्यानी, रत्नत्रयधारी, विषय-भोगो की इच्छा से रहित, आरभ-परिग्रह से रहित तपस्वी होते हैं ।

(२) उन जैसे बनने की भावना से ही उनकी पूजा की जाती है। लौकिक भोगो की इच्छा से नही ।

समापन

अध्यापक कथन—आज का पाठ तुम्हारी समझ मे आ गया होगा ? अच्छा बताओ —

(१) विद्या-गुरु सच्चे गुरु हैं या नही ?

(२) सच्चे शास्त्र वीतरागता के पोषक होते है या राग के ?

गृहकार्य

अध्यापक कथन—कल तुम्हे आज बताये गये प्रश्नोत्तर लिख कर व याद करके लाना है ।

आदर्श पाठ-योजना 3

(मै कौन हूं ?)

स्थान —श्री जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ

कक्षा—प्रवेशिक तृतीय खण्ड

प्रकरण—"मैं कौन हूँ ?"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य—आत्मज्ञान संबंधी जानकारी देना।

(ख) विशेष उद्देश्य—अपनी आत्मा के सम्बन्ध मे विशेष जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करना एव "मैं" के सबध मे प्रचलित गलत धारणाओ का निराकरण करना।

पूर्व-ज्ञान

छात्रों को जीव तत्त्व की सामान्य जानकारी है। वे बालबोध पाठमाला भाग १ मे 'जीव-अजीव', बालबोध पाठमाला भाग २ मे 'षट्-द्रव्य', वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १ मे 'सात तत्त्व' एव वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २ मे 'सात तत्त्वो सबधी भूल' नामक पाठो मे जीव तत्त्व के सबध मे बहुत कुछ सीख चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक।

उद्देश्य कथन

आज हम वस्तुत "मैं कौन हूँ" अर्थात् आत्मा क्या है ? यह समझने का प्रयत्न करेगे।

प्रस्तुतीकरण

इस पाठ मे 'स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर' वाले सिद्धान्त का विशेष ध्यान रखा जायगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनो मे पढाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियो मे विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे :—

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) साराश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"'मैं' शब्द का प्रयोग · ···· · ··पडित भी नही है।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वय गद्य वाचन विधि से अर्द्धविराम पूर्णविराम का ध्यान रखते हुए स्पष्ट आदर्श वाचन करेगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक सुविधानुसार एकाधिक छात्रो से अनुकरण वाचन करावेगे तथा स्वय या अन्य छात्रो से उसमे सुधार करावेगे।

विचार-विश्लेषण

अन्विति मे आये विचारो का विश्लेषण निम्नानुसार करेगे –

अध्यापक कथन—अभी हमने पढा कि प्राय सभी सामान्य जन 'मैं' शब्द का प्रयोग तो करते है पर उसका सही अर्थ नही जानते। वाह्य वालकपन आदि सयोगी पर्यायो को ही 'मैं' मान लेते है।

जव हम विचार करते है तो पता चलता है कि 'मैं'—वालक, वृद्ध, पडित, सेठ कुछ भी नही हूँ। एक वात सोचिये—यदि ऐसा मान लिया जाय कि 'मैं' वालक हूँ, तो वताइये वालक आप कव तक रहेगे ? दस-वीस वर्ष तक ही, उसके वाद आप वालक तो रहेगे नही। तो क्या फिर आप नही रहेगे ? रहेगे। अवश्य रहेगे। इसी प्रकार कोई कहे कि 'मैं' जवान हूँ, तो क्या दस-वीस वर्ष पहले भी वे जवान थे ? यदि नही तो वे तो थे। अत यह स्पष्ट है कि वालकपन और जवानी तो शरीर से सम्बन्धित है और 'मैं' आत्मा को कहते है। आत्मा वालक, जवान और वुड्ढा नही होता। अत. 'मैं' वालक हूँ, वृद्ध हूँ, यह मानना कल्पना ही है।

कुछ लोग कहते हैं कि 'मैं' सेठ हूँ या पंडित हूँ और भी कई प्रकार की कल्पनाएँ करते है। पर जरा सोचिए—सेठ तो पैसे के सयोग से कहे जाते हैं, पैसा नही रहेगा तो आप सेठ तो नहीं रहेगे पर आप तो रहेंगे न। फिर आप सेठ कैसे हो सकते है ? इसी प्रकार शास्त्रो का विशेष ज्ञान होने से लोग पडित कहलाते है पर जब वे बालक थे, शास्त्र ज्ञान नही था, तब क्या वे नही थे ? थे। अत आत्मा को सेठ या पंडित कहना भी उपचार ही है। वस्तुत आत्मा न सेठ है, न पडित।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ "मैं बालक या जवान हू"—क्या यह मानना ठीक है ?	१ नही, क्योकि बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाएँ हैं और 'मैं' आत्मा हू।
२ "मैं सेठ हू"—इस मान्यता मे क्या भूल है ?	२ सेठ तो धन के सयोग से कहा जाता है। धन के बिना भी तो आत्मा रहता है, अत आत्मा सेठ नही।
३ "मैं पडित हू"—यह तो ठीक है न ?	३ नही। पडिताइ तो शास्त्र ज्ञान का नाम है। शास्त्र ज्ञान के बिना भी आत्मा की सत्ता देखी जाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाएँ हैं।	१ बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाएँ है या नही ?	१. हैं।
	२ बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाएँ हैं या आत्मा की ?	२ शरीर की।
	३ बालकपन और जवानी किसकी अवस्थाएँ है ?	३ शरीर की।
	४ शरीर की अवस्थाएँ क्या है ?	४. बालकपन और जवानी।

निष्कर्ष–बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाएँ हैं और "मैं" आत्मा हूँ, अत "मैं" बालक और जवान नही हो सकता।

नोट–इसी प्रकार सेठ और पडित वाला प्रश्न भी समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन–अभी हमने यह निर्णय किया कि –

(१) "मैं" बालक, जवान और वृद्ध नही, क्योकि ये शरीर के धर्म हैं और "मैं" शरीर से भिन्न चेतन आत्मा हूँ।

(२) "मैं" सेठ भी नही हूँ, क्योकि सेठ तो धन के सयोग से कहा जाता है। "मै" तो असयोगी आत्मा हूँ।

(३) "मैं" पडित भी नही हूँ, क्योकि पडित तो शास्त्रो सबंधी क्षयोपशम ज्ञान के कारण कहा जाता है। "मैं" तो निगोद जैसी अल्पज्ञान वाली दशा और सिद्ध जैसी पूर्ण ज्ञान वाली दशा मे रहने वाला हूँ।

द्वितीय अन्विति

"तब प्रश्न उठता है कि ... यह अति आवश्यक है।"

आदर्श वाचन– पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन– पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण– पूर्ववत्।

अध्यापक कथन–अभी हमने पढा कि आत्मा क्या है–इस विषय पर हमने कभी गभीरता से सोचा नहीं। यही कारण है कि "मैं कौन हूँ" का उत्तर हमे प्राप्त नही हो सका है। हम 'पर' की खोज मे अपने को भूल रहे हैं। कैसी विचित्र बात है कि खोजने वाला खोजने वाले को खोज रहा है और खोजने वाले को खोजने वाला नही मिल रहा है।

आत्मा तो मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष, परोन्मुखी बुद्धि से अलग तीन काल रहने वाला शुद्ध ज्ञानानन्द स्वभावी स्थायी वस्तु है।

जब आदमी के दिल मे संकुचित भावनाएँ आ जाती हैं तो वह विशालता को भूलने लगता है। जिस प्रकार प्रान्त मे अपनत्व की तीव्रता आते ही देश का अपनत्व कम हो जाता है या दब जाता है, उसी प्रकार जब तक आत्मा की पर्याय मे एकत्व बुद्धि रहती है तब

तक आत्मा द्रव्य-दृष्टि से ओझल रहता है। जैसे देश के प्रति अगाध राष्ट्रीयता के लिए "मैं भारतीय हूँ"—यह अनुभूति प्रबल होना जरूरी है, उसी प्रकार आत्मानुभूति के लिए "मैं आत्म-द्रव्य हूँ"—यह दृढ धारणा होना बहुत जरूरी है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ आत्मा कैसा है ?	१ (क) आत्मा मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष, परलक्षी बुद्धि से भिन्न है। (ख) त्रैकालिक अनादि, अनन्त ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुव तत्त्व है।
२ "मैं कौन हूँ" का सही उत्तर क्यो प्राप्त नहीं होता ?	२. हम गभीरता से विचार नही करते।
३ "मैं कौन हूँ" का सही उत्तर पाने के लिए क्या आवश्यक है ?	३. "मैं आत्मा हूँ"—यह अनुभूति प्रबल होना आवश्यक है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मा मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एव परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न है।	१ आत्मा मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एव परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न है या नही ?	१. है।
	२. मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एव परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न आत्मा है या शरीर ?	२. आत्मा।
	३. मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एव परलक्ष्यी बुद्धि से कौन भिन्न है ?	३. आत्मा।
	४. आत्मा किस-किस से भिन्न है ?	४ मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एव परलक्ष्यी बुद्धि से।

नोट :—इसी प्रकार आगत अन्य तथ्यो को भ

सारांश कथन

अध्यापक कथन—अभी हमने यह समझा कि आत्मा तो शरीर, मन, वाणी, मोह, राग-द्वेष, पर लक्ष्यी ज्ञान से भिन्न एक त्रैकालिक शुद्ध ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुव तत्त्व है तथा उसकी प्राप्ति "मैं कौन हूँ" की प्रबल जिज्ञासा हो तभी संभव है।

समापन

अध्यापक कथन—अभी हमने जो पाठ पढा वह आप लोगो की समझ मे आ ही गया होगा। अच्छा बताओ :—

(१) "मैं बालक हूँ" ऐसा मानने मे क्या आपत्ति है ?

(२) "मैं" मन वचन काय से भिन्न हूँ या अभिन्न ?

गृहकार्य

अध्यापक कथन—आज समझाये गये प्रश्नोत्तरो को कल तैयार करके लाना है तथा पठित पाठ का भावार्थ लिख कर लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान—श्री जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ

कक्षा—प्रवेशिका तृतीय खण्ड

प्रकरण— 'मैं कौन हूँ"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य**— पूर्ववत्।

(ख) **विशेष-उद्देश्य**—आत्मज्ञान की दिशा की ओर संकेत करना।

पूर्व-ज्ञान— पूर्ववत्।

सहायक सामग्री— पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

आज हम यह समझेंगे कि आत्मानुभव कैसे किया जा सकता है ?

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियो मे समाप्त होगा। द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से 'पूर्व-पाठ मूल्यांकन' नामक एक सोपान और होगा। बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेगे। द्वितीय अन्विति मे पूर्व-पाठ मूल्यांकन नामक सोपान को छोडकर बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेगे।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

पूर्वपठित पाठ ...ा ने तैयार किया या नही, यह जानने के लिए अध्यापक निम्नलि... ...त मूल्यांकन प्रश्न करेगे .

(१) "मै कौन हूँ" या "आत्मा कैसा है" ?

(२) "मै पंडित हूँ"—यह मानना ठीक है या नही ?

(३) आत्मा को समझने के लिए क्या आवश्यक है ?

प्रथम अन्विति

"हा ! तो स्त्री पुत्र ... भी नही हो सकती है ।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत् ।

विचार विश्लेषण—

अध्यापक कथन—अभी हमने पढा, उसमे निम्न चार बाते स्पष्ट हुई :—

(१) आत्मा स्पष्ट पर-सयोगी पदार्थों—जैसे स्त्री, पुत्र, मकान, रुपया-पैसा और शरीर से भिन्न है ।

(२) आत्मा मे उत्पन्न होने वाले मोह, राग-द्वेष आदि विकारी भाव भी आत्मा की सीमा मे नही आते ।

(३) परलक्ष्यी क्षयोपशम ज्ञान भी पूर्ण ज्ञानस्वभावी आत्मा नही है ।

(४) ज्ञान की पूर्ण विकसित केवलज्ञान पर्याय भी पर्याय होने से त्रिकाली ध्रुव रूप आत्मतत्त्व नही हो सकती ।

वस्तुत आत्मा तो अन्तरोन्मुखी दृष्टि का विषय है । वह तो अनुभवगम्य है । उसे विकल्पो मे नही बांधा जा सकता है । उसमे स्पर्श, रस, गध, वर्णादि न होने से उसे इन्द्रियो से भी नही जाना जा सकता ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ आत्मतत्त्व किस-किस मे भिन्न है ?	१ (क) स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि संयोगी पदार्थों से । (ख) आत्मा मे उत्पन्न होने वाले मोह, राग-द्वेष आदि विकारी भावों से । (ग) परलक्ष्यी क्षयोपशम ज्ञान से । (घ) एक समय वाली केवलज्ञान पर्याय से ।
२ यह आत्मा कैसे जाना जा सकता है ?	२. (क) अन्तर्गोन्मुखी दृष्टि से । (ख) आत्मानुभव से ।
३ यह आत्मा कैसे प्राप्त नही किया जा सकता ?	३ (क) बहिर्लक्ष्यी दौड-धूप से । (ख) मानसिक विकल्पों से । (ग) पचेन्द्रियो से ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थों से भिन्न है ।	१ आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि पदार्थों से भिन्न है या नही ?	१ है ।
	२ आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थों से भिन्न है या अभिन्न ?	२ भिन्न ।
	३ आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थों से कैसा है ?	३ भिन्न ।
	४ आत्मतत्त्व कैसा है ?	४ आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थों से भिन्न है ।

नोट :—इसी प्रकार सभी सिद्धात-वाक्यो को समझाया जायगा ।

सारांश कथन

अध्यापक कथन—अब हम इस निर्णय पर पहुँचे कि आत्मा शरीरादि पर-सयोगो से, मोहादि सयोगी भावो से, क्षयोपशम ज्ञानादि से एव क्षायिक भाव रूप पर्यायो से भी भिन्न त्रैकालिक वस्तु है तथा उसे बाहरी क्रियाकाण्ड से, इन्द्रियो एव मानसिक विकल्पो से नही पाया जा सकता है।

द्वितीय अन्विति

"यह अनुभवगम्य ·· ·· ····दशा नही ला सकती है।"

आदर्श वाचन— पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन— पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण—

अध्यापक कथन—अभी हमने जो पढा, उसमे निम्नलिखित तथ्य निरूपित हैं —

(१) पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।

(२) अनादि अनन्त गुणो की अखण्डता ही आत्मा की एकता है।

(३) पर से कुछ चाहिये नही और न पर को कुछ देने लायक इसमे है, यही आत्मा की पूर्णता है।

(४) आत्मानुभूति को प्राप्त करने का प्रारम्भिक उपाय तत्त्वविचार है।

(५) वह आत्मानुभूति अपनी प्रारम्भिक भूमिका तत्त्वविचार का अभाव करती हुई प्रकट होती है।

(६) आत्मा ज्ञान का विषय है, वाणी और लेखनी की पकड से परे है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ आत्मा की शुद्धता क्या है ?	१. पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।
२ आत्मा की एकता क्या है ?	२. अनादि अनन्त गुणो की अखण्डता ही आत्मा की एकता है।
३ आत्मा की पूर्णता क्या है ?	३ पर से कुछ चाहिये नही और न पर को कुछ देने लायक इसमे है, यही आत्मा की पूर्णता है।
४ आत्मानुभूति प्राप्त करने का प्रारम्भिक उपाय क्या है ?	४ आत्मानुभूति प्राप्त करने का प्रारम्भिक उपाय तत्वविचार है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।	१. पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है या नही ?	१. है।
	२ पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है या अशुद्धता या एकता ?	२ शुद्धता।
	३ आत्मा को पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता क्या है ?	३. शुद्धता।
	४ आत्मा की शुद्धता क्या है ?	४ पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।

नोट —इसी प्रकार आगम सभी सिद्धान्त-वाक्यो को समझाया जायगा।

सारांश कथन

साराश कथन मे उक्त तथ्यो को सक्षेप मे दुहरा दिया जायेगा।

समापन

अध्यापक कथन--अभी हमने जो पढा वह आप लोगो की समझ मे आ गया होगा। अच्छा बताइये —

(१) क्या आत्मा को वाणी से कहा जा सकता है?

(२) क्या आत्मा इन्द्रियो से जाना जा सकता है? यदि नही, तो क्यो?

गृहकार्य

अध्यापक कथन—आज समझाये गये सभी प्रश्नोत्तर तैयार करके लाना है। साथ ही "मैं कौन हूँ?" इस विषय पर एक निबन्ध लिख कर लाना है और ध्यान रखो कि आगे वाले शनिवार को अपनी छात्र-हितकारिणी सभा मे "मैं कौन हूँ?" इस विषय पर ही भाषण व कवितायें होगी। जो भी छात्र बोलना चाहे—मत्री, छात्र-हितकारिणी सभा को अपना नाम लिखवा देवें।



पाठ-निर्देश

वीतराग-विज्ञान पाठमालाओ मे आये हुये तीन पाठो की आदर्श पाठ-योजनाये प्रस्तुत की । आगे शेष पाठो के पाठ-निर्देश दिये जा रहे हैं । पाठ-निर्देशो का ध्यान रखते हुये अध्यापक बन्धुओ को प्रत्येक पाठ पढाने के पूर्व उपरोक्त पाठ-योजनाओ के अनुरूप पाठ-योजना तैयार करनी है । ध्यान रहे, किसी भी पाठ की पाठ-योजना तैयार करते समय तत्सबंधित पाठ-निर्देश मे दिये निर्देशो की अवहेलना नही की जानी चाहिये ।

पाठ-निर्देश १

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ २)

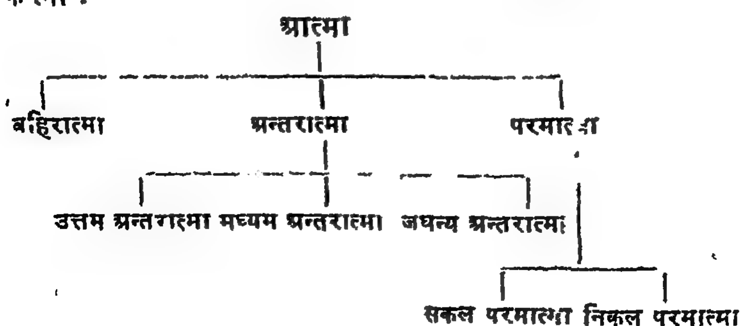
"आत्मा और परमात्मा"

आवश्यक निर्देश :—

(१) मुनिराज योगीन्दु का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढ़ग से देना । परमात्मप्रकाश और योगसार मूल ग्रन्थो को पढने की प्रेरणा देना, जिनके आधार पर यह पाठ लिखा गया है ।

(२) संवाद काल्पनिक है, यह स्पष्ट करना ।

(३) आत्मा के भेद-प्रभेदों को निम्नलिखित चार्ट से स्पष्ट करना :—



(४) आत्मा और आत्मा के समस्त भेद-प्रभेदों की परिभाषाएँ वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराना।

(५) लम्बी परिभाषाओं को टुकड़ों में तैयार करावें। जैसे :—

प्रश्न—शरीर को आत्मा मानने वाला कौन है?

उत्तर—बहिरात्मा।

प्रश्न—पर-पदार्थ मे अपनापन मानने वाला कौन है?

उत्तर—बहिरात्मा।

प्रश्न—रागादि मे अपनापन मानने वाला कौन है?

उत्तर—बहिरात्मा।

प्रश्न—आत्मा को न जानने वाला कौन है?

उत्तर—बहिरात्मा।

नोट—चारो परिभाषायें पृथक्-पृथक् वस्तुनिष्ठ पद्धति के चारो सोपानो द्वारा तैयार कराके उन्हे एकत्र करके पूरी परिभाषा स्पष्ट कर दें। इस प्रकार बहिरात्मा की परिभाषा निम्नानुसार हुई :—

"शरीर को आत्मा तथा अन्य पदार्थों और रागादि मे अपनापन मानने वाला या आत्मा का स्वभाव न जानने वाला मिथ्यादृष्टि जीव बहिरात्मा है।"

पाठ-निर्देश २

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ ३)

"सात तत्त्व"

आवश्यक निर्देश:—

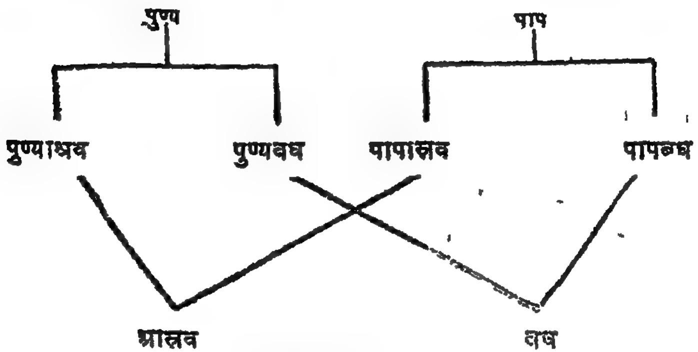
(१) आचार्य उमास्वामी का जिज्ञासोत्पादक ढंग से परिचय देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र पढने की प्रेरणा देना जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) पाठ मे आगत सभी परिभाषाओ को वस्तुनिष्ठ पद्धति द्वारा तैयार कराया जावे।

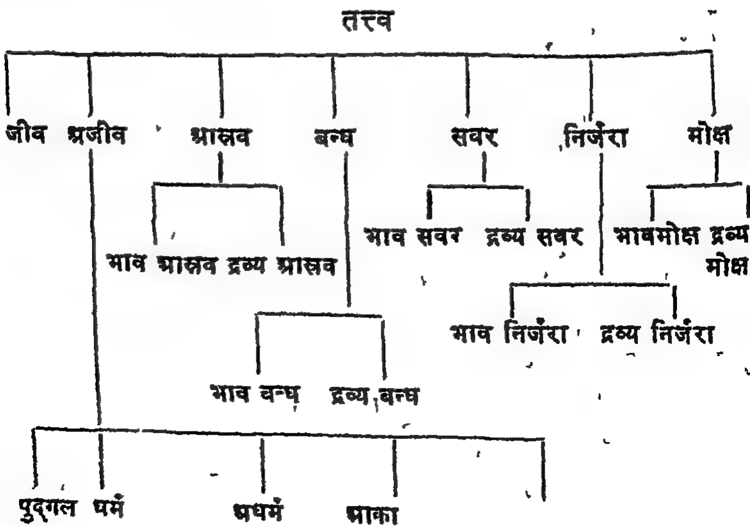
(३) "प्रयोजनभूत तत्त्व" और "द्रव्य दृष्टि" को विशेष स्पष्ट करना एवं वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(४) आस्रवादि तत्त्वों को द्रव्य और भाव के भेद से स्पष्ट करना चाहिये।

(५) पुण्य और पाप का अन्तर्भाव आस्रव और बन्ध मे होता है। इस तथ्य को निम्न चार्ट द्वारा समझाया जाना चाहिये :—



(६) तत्त्व के भेद-प्रभेद स्पष्ट करने के लिये निम्न चार्ट का प्रयोग करना चाहिये :—



पाठ-निर्देश ३

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ ४)

"षट् आवश्यक"

आवश्यक निर्देश :—

(१) निश्चय आवश्यक और व्यवहार आवश्यक की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना तथा प्रत्येक आवश्यक मे निश्चय व्यवहार का भेद स्पष्ट करना।

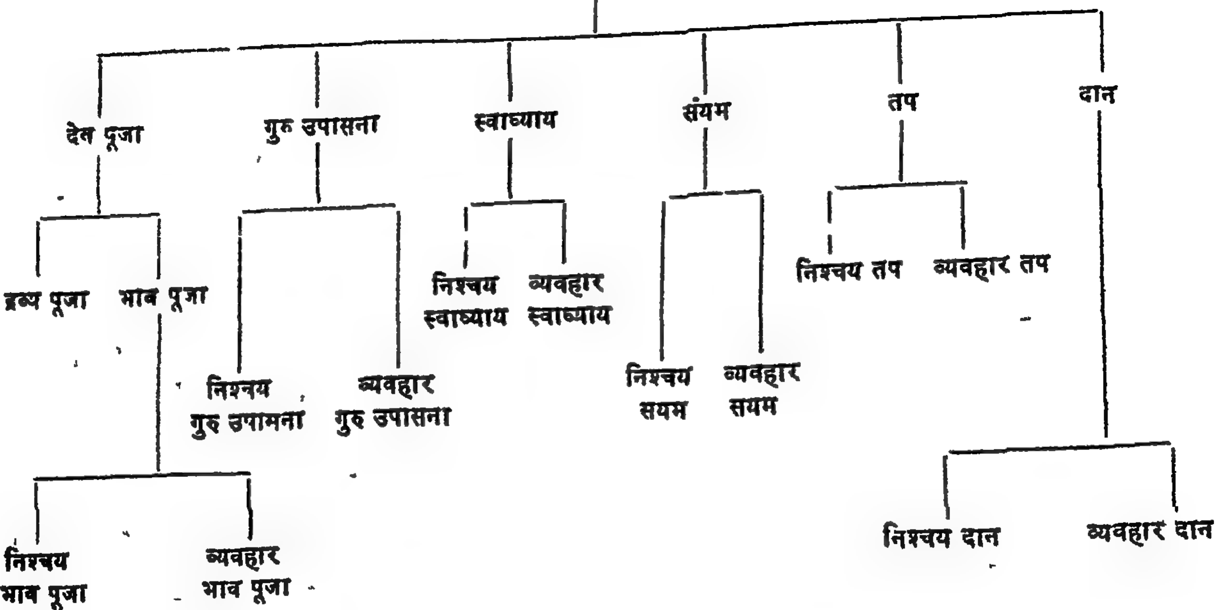
(२) निश्चय और व्यवहार आवश्यको का भेद स्पष्ट करते समय निम्नानुसार ध्यान दिया जाना चाहिये :—

	निश्चय आवश्यक	व्यवहार आवश्यक
(क)	शुद्धभाव	शुभ भाव
(ख)	वन्ध का अभाव	पुण्य वन्ध
(ग)	ज्ञानी के ही होते है।	ज्ञानी के तो होते ही है, पर अज्ञानी के भी देवपूजादि के शुभ भाव होते है।

(३) व्यवहार आवश्यक को पुण्य वन्ध का कारण कहने से प्राय लोग यह आशका व्यक्त करते हैं कि ऐसा कहोगे तो लोग देवपूजनादि छोड देगे। अत इस प्रश्न को स्वयं उठाकर समुचित समाधान निम्नानुसार करना चाहिये —

उपदेश तो ऊँचा चढने को दिया जाता है, नीचे गिरने को नही। अत: जो जीव देवपूजनादि के शुभ भाव छोडकर विषय कषायादिक अशुभ भावो मे प्रवर्तेंगे, उनका तो और भी बुरा होगा अर्थात् पाप वन्ध होगा। अत. देवपूजनादि शुभ भावो को छोड़कर अशुभ भावो मे जाना ठीक नही है। यदि देवपूजनादि के शुभ भाव छोड़कर शुद्ध भाव मे रह सके तो वहुत ठीक अन्यथा अशुभ भाव मे जावेंगे तो पाप वध करेंगे। यहा शुभ भाव को पुण्य वध का कारण कहा है वह तो सत्य का ज्ञान कराने के लिये कहा है—अशुभ भाव मे जाने के लिये नही।

(४) आवश्यक के भेदो-प्रभेदो को स्पष्ट करने के लिये अगले पृष्ठ पर दिये गये चार्ट को प्रयोग मे लाना चाहिये।



नोट —ध्यान रहे देव पूजा को छोडकर अन्य आवश्यकों मे द्रव्य और भाव का भेद नही किया गया है।

पाठ-निर्देश ४

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ ५)

"कर्म"

आवश्यक निर्देश :—

(१) सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना। सिद्धान्त चक्रवर्ती शब्द का अर्थ स्पष्ट करना तथा गोम्मटसार कर्मकाण्ड पढने की प्रेरणा देना—जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) संवाद काल्पनिक है—यह स्पष्ट करना।

(३) "कर्म आत्मा को वलात् विकार नही कराते, किन्तु जब आत्मा स्वय विकार रूप परिणमे तव कर्म का उदय उसमे निमित्त कहा जाता है।" उक्त तथ्य भली-भाँति स्पष्ट करना।

(४) निमित्त कारण की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराना।

(५) निमित्त और उपादान की स्थिति को निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :—

(क) कोई कार्य होता है तो उसका कारण अवश्य होता है। जो द्रव्य स्वयं कार्यरूप परिणमे—उसे उपादान (असली) कारण कहते हैं। पर जो पदार्थ स्वयं कार्यरूप तो परिणमे नही, किन्तु कार्य की उत्पत्ति मे अनुकूल होने का जिस पर आरोप आ सके—उसे निमित्त कारण कहते हैं। जैसे—घडा एक कार्य है। मिट्टी घड़े रूप स्वय परिणमित होती है—अत. वह मिट्टी घडे रूपी कार्य की उपादान कारण हुई और कुम्हार चक्र दण्ड आदि घडे रूपी कार्य के अनुकूल परद्रव्य है—अत. उन्हे निमित्त कारण कहा जाता है।

(ख) घडे के उदाहरण के वाद स्थूलता से सूक्ष्मता को ओर के सिद्धान्तानुसार आत्मा सम्बन्धी उदाहरण से निमित्त उपादान को स्पष्ट करना चाहिये। जैसे—आत्मा स्वयं मोह-राग-द्वेष रूप परिणमित होता है, अत. आत्मा मोह-राग-द्वेष रूप कार्य का उपादान कारण हुआ और कर्म का उदय उसमे अनुकूल परद्रव्य है, अतः वह निमित्त कारण हुआ।

(६) उक्त तत्त्व को वस्तुनिष्ठ पद्धति से स्पष्ट करना चाहिये, जिससे छात्रों को स्पष्ट हो जाय। जैसे :—

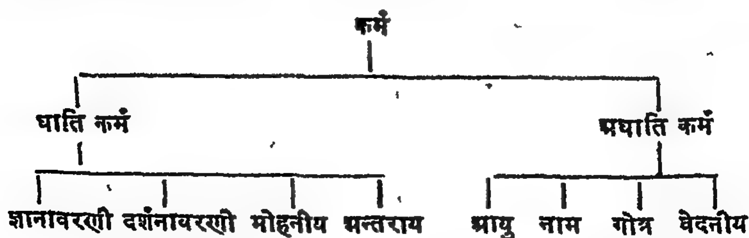
प्रश्न	उत्तर
१ आत्मा दुःखी क्यों है? कर्म के कारण या स्वयं की भूल से?	१ स्वयं की भूल से।
२. घड़े का निमित्त कारण कौन है? मिट्टी या कुम्हार?	२. कुम्हार।
३. कपड़े का उपादान कारण कौन है? सूत या बुनकर?	३. सूत।
४ राग का उपादान कारण क्या है? कर्म या आत्मा?	४ आत्मा।

(७) द्रव्य कर्म और भाव कर्म के लक्षण वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों से तैयार कराने के बाद निम्नानुसार मूल्यांकन प्रश्नों से वस्तु को स्पष्ट करना चाहिये :—

(क) "मेरी बात सुनकर उसे क्रोध आ गया।" इस वाक्य में क्रोध द्रव्य कर्म है या भाव कर्म? (भाव कर्म)

(ख) "जो दूसरों के अध्ययन में बाधा पहुँचाते हैं, उन्हें ज्ञानावरणी कर्म का बन्ध होता है।" उक्त वाक्य में प्रयुक्त ज्ञानावरणी कर्म द्रव्य कर्म है या भाव कर्म? (द्रव्य कर्म)

(८) आठ कर्मों में घाति-अघाति का विभाग निम्नानुसार चार्ट द्वारा समझाया जाय :—



(९) आठ कर्मों की परिभाषायें भी वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराई जावें।

पाठ-निर्देश ५

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ ६)

"रक्षाबन्धन"

आवश्यक निर्देश :—

(१) रक्षाबन्धन कथा छात्रों के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत की जावे—जिससे छात्रो मे कथानक संबंधी जिज्ञासा अन्त तक बनी रहे।

(२) कथा में आगत निम्न प्रसगों पर विशेष बल व ध्यान दिया जाना चाहिये :—

(क) जिस प्रकार साप को दूध पिलाने से विष ही बनता है, उसी प्रकार तीव्र कषायी अज्ञानी जीवो से की गई तत्त्वचर्चा उनके क्रोध को ही बढाती है।

(ख) प्रत्येक आत्मा को चाहिये कि वह जगत के प्रपंचो से दूर रह कर तत्त्वाभ्यास मे ही प्रयत्नशील रहे। यही ससार बन्धन से रक्षा का उपाय है।

(३) निम्न प्रश्नोत्तर को विशेष स्पष्ट किया जावे :—

प्रश्न :—"विष्णुकुमार ने बावनिया का भेष बनाया और श्रुत-सागर ने मुनियो से विवाद किया।" क्या उक्त क्रियायें मुनि की भूमिका मे होना ठीक है ?

उत्तर :—नही। यदि ठीक होती तो उन्हे मुनिपद छोड़ना एवं प्रायश्चित जैसे दण्ड क्यो लेने पडते ?

"विष्णुकुमार मुनि ने मुनि पद मे बावनिया वेष नही बनाया किन्तु मुनिपद छोडकर ऐसा वेष बनाया।" इस तथ्य की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

(४) रक्षाबन्धन कथा को अपने शब्दो मे लिखने एवं अपनी भाषा मे आकर्षक ढग से बोलने का अभ्यास कराना।

पाठ-निर्देश ६

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ ७)

"जम्बूस्वामी"

आवश्यक निर्देश :—

(१) कविवर प० राजमलजी पाण्डे का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से दें तथा "जम्बूस्वामी चरित्र" को जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है—पढने की प्रेरणा दें।

(२) जम्बूस्वामी की कथा इस प्रकार प्रस्तुत करना जिससे छात्रो मे अन्त तक उत्सुकता बनी रहे।

(३) पाठ पढाते समय निम्नलिखित अंश पर विशेष ध्यान आकर्षित करना —

"रागियो का राग ज्ञानियो को क्या प्रभावित करेगा ? ज्ञान और वैराग्य की किरणें तो अज्ञान और राग का नाश करने मे समर्थ होती हैं।'

(४) जम्बूस्वामी की कहानी अपने शब्दो मे लिखने और आकर्षक ढग से बोलने का अभ्यास कराना।

(५) उक्त पाठ से मिलने वाली शिक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करना।

पाठ-निर्देश ७

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ ८)

"बारह भावना"

आवश्यक निर्देश :—

(१) प्रस्तुत बारह भावनाओ के लेखक प० जयचन्दजी छाबडा का जिज्ञासोत्पादक ढग से परिचय देना।

(२) बारह भावना नाम से प्रचलित वैराग्योत्पादक एव तत्वज्ञानमय विशाल जैन साहित्य का सामान्य परिचय देना एव अन्य कवियो द्वारा लिखित बारह भावनाओ को पढने की प्रेरणा देना। जैसे—छहढाला की पाँचवी ढाल मे वर्णित बारह भावनाएँ आदि।

(३) निम्नलिखित भावनाओं का अर्थ समझाते समय विशेष सावधान रहना चाहिये :—

अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, संवर, बोधिदुर्लभ।

(४) प्रत्येक भावना में आये भाव को स्पष्ट करना चाहिये। शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ या केन्द्रीय भाव पर विशेष ध्यान देना है।

(५) भावनाओं के विशिष्ट अर्थ को प्रश्नोत्तर मे तैयार कर वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासम्भव रूपो से तैयार कराया जावेगा। जैसे:—

प्रश्न	उत्तर
१ द्रव्य दृष्टि से सर्व पदार्थ कैसे हैं ?	१. स्थिर।
२. पर्याय दृष्टि से पदार्थ कैसे हैं ?	२. अस्थिर।
३ उक्त चिन्तवन किस भावना मे किया जाता है ?	३. अनित्य भावना मे।
४. निश्चय से शरण कौन है ?	४. शुद्धात्मा।
५ व्यवहार से शरण कौन है ?	५. पच परमेष्ठी।
६ उक्त चिन्तवन किस भावना मे किया जाता है ?	६. अशरण भावना मे।

नोट .—इसी प्रकार आगे की भावनाओ को भी स्पष्ट करना चाहिये।

पाठ-निर्देश ८

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ १)

"उपासना"

आवश्यक निर्देश :—

(१) पूजन के छन्दों व जयमाला का सामान्यार्थ बताते समय शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ और केन्द्रीय भाव पर ध्यान देना चाहिये।

(२) पूजन मे आये विशिष्ट भावों को प्रश्नोत्तरों मे तैयार कराकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना। जैसे :—

प्रश्न—स्थापना मे किसको नमस्कार किया गया है ?
उत्तर—सच्चे देव-शास्त्र-गुरु को।

प्रश्न—यह जीव पर की ममता मे क्यों अटका है ?

उत्तर—आत्मा मे विद्यमान अनन्त गुणो के वैभव को भूलकर।

प्रश्न—मन की झूठी वृत्ति क्या है ?

उत्तर—पर-पदार्थों को अनुकूल व प्रतिकूल मानना ही मन की झूठी वृत्ति है।

नोट :—इसी प्रकार के प्रश्नोत्तर प्रत्येक छन्द मे से व जयमाला मे से तैयार करके समझाना चाहिये।

(३) निम्न छन्दो पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये :—
चन्दन, नैवेद्य, दीप, धूप, अर्घ्यं।

(४) जयमाला मे वर्णित बारह भावनाओ मे से निम्नलिखित भावनाओ पर विशेष ध्यान दिया जाय :—
अनित्य, ससार, अन्यत्व, अशुचि, सवर और बोधिदुर्लभ।

(५) पूजन कंठस्थ करने एवं प्रतिदिन करने की प्रेरणा देना।

पाठ-निर्देश ६

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ ३)

"सात तत्त्वो सम्बन्धी भूल"

आवश्यक निर्देश :—

(१) यह पाठ प० दौलतरामजी द्वारा लिखित छहढाला की दूसरी ढाल के आधार पर लिखा गया है। अध्यापक को प० दौलतरामजी और उनकी कृति छहढाला का सामान्य परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना है एव छहढाला के अध्ययन की प्रेरणा देनी है।

(२) सात तत्त्वो के सम्बन्ध मे हुई भूलों के संदर्भ मे इस प्रकार भी प्राय: प्रयोग किया जाता है कि 'आश्रव की भूल' बताइये। भूल तो जीव ही करता है पर जिस तत्त्व के सम्बन्ध मे भूल करता है, व्यावहारिक भाषा मे उसे तत्त्व सम्बन्धी भूल कही जाती है। इस तथ्य को छात्रों के सामने स्पष्ट कर देना चाहिये।

(३) सातो तत्त्वो सम्बन्धी भूलो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(४) जीव और अजीव तत्त्व के सम्बन्ध में की गई भूलों को समझाते समय निम्न सूत्र-वाक्य को ध्यान मे रखना चाहिये :—

जीव को अजीव मानना जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है और अजीव को जीव मानना अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है। जैसे—नीबू को आम माना तो हमने नीबू के सम्बन्ध में गलती की क्योंकि आम तो वहा है ही नही, नीबू को ही गलत समझ लिया गया है। इसी प्रकार आम को नीबू माना तो आम के सम्बन्ध में गलती हुई।

इसी प्रकार जीव और अजीव के सम्बन्ध मे भी जानना चाहिये जैसे—"मैं काला हूँ" यह मानना जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है, क्योकि "मैं" आत्मा का वाचक है और "काला" शरीर का रंग है। "मैं" (जीव) को काला (अजीव) माना। अतः जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल हुई।

इसी प्रकार—"आँख देखती है"—ऐसा मानना अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है, क्योंकि "आँख" अजीव है और "देखना" जीव की क्रिया है। यहाँ अजीव को जीव माना—अतः अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल हुई।

नोट :—इसी प्रकार के कई उदाहरणो से प्रश्नोत्तर करके जीव और अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल का ज्ञान कराना चाहिये।

(५) निम्नानुसार मूल्यांकन प्रश्नोत्तरों द्वारा छात्रो के ज्ञान की परीक्षा की जानी चाहिये :—

प्रश्न—शुभाशुभ राग को सुखकर मानना कौन-से तत्त्व सम्बन्धी भूल है ?

✓	×	×
आस्रव,	बन्ध,	संवर

प्रश्न—शुभ बन्ध को अच्छा और अशुभ बन्ध को बुरा मानना कौन-से तत्त्व सम्बन्धी भुल है ?

×	✓	×
आस्रव,	बन्ध,	सवर

प्रश्न—आस्रव और बन्ध तत्त्व के सम्बन्ध मे हुई भूलो मे आपस मे क्या अन्तर रहा ?

उत्तर—बन्ध के कारण को अच्छा मानना आस्रव तत्त्व सम्बन्धी भूल है और शुभ बन्ध और उसके फल को अच्छा मानना बन्ध तत्त्व सम्बन्धी भूल है।

प्रश्न—आत्मज्ञान और वैराग्य को दुखकर मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है ?

√ × ×
सवर तत्त्व, बन्ध तत्त्व, आस्रव तत्त्व

प्रश्न—इच्छाओ की पूर्ति मे सुख मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है ?

√ × ×
निर्जरा, बन्ध, आस्रव

प्रश्न—ससार मे सुख मानना कौन से तत्त्व सबंधी भूल है ?

× √ ×
बन्ध, मोक्ष, निर्जरा

नोट :—उक्त समस्त प्रश्नोत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा तैयार कराया जाय।

पाठ-निर्देश १०

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ ४)

"चार अनुयोग"

आवश्यक निर्देश :—

(१) यह पाठ पं० टोडरमलजी कृत मोक्षमार्ग प्रकाशक के अष्टम अध्याय के आधार पर लिखा गया है। अतः उनका परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से दिया जाय तथा मोक्षमार्ग प्रकाशक का परिचय देकर उसके स्वाध्याय की प्रेरणा दी जावे.

(२) अनुयोग और चारो अनुयोगों की परिभाषायें वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराई जावें।

(३) किस अनुयोग में किस बात की मुख्यता रहती है—इसे प्रश्नोत्तर के माध्यम से तैयार कराया जाय जैसे :—

(क) प्रथमानुयोग में—कथाओं की।

(ख) करणानुयोग में—गणित की।

(ग) द्रव्यानुयोग में—अध्यात्म एवं न्याय शास्त्र की।

(घ) चरणानुयोग में—बाह्य क्रिया, सुभाषित और नीतिशास्त्र की।

(४) अनुयोगों के परस्पर अन्तर को भी इसी प्रकार प्रश्नत्तरो के माध्यम से स्पष्ट किया जाना चाहिये।

(५) चारों अनुयोगों का ज्ञान–परिभाषाओं के अतिरिक्त इनकी वर्णन-पद्धति, प्रमुख-उद्देश्य, वर्णन की मुख्यता आदि से कराया जावेगा।

(६) गृहस्थों को समयसारादि अध्यात्म शास्त्र पढ़ने के निषेध की चर्चा चलती है। उस प्रकरण मे उठने वाली शंकाओं का निम्नलिखित तर्क देकर समुचित समाधान करना चाहिये और अध्यात्म शास्त्र पढ़ने की विशेष प्रेरणा दी जानी चाहिये :—

(क) यदि गृहस्थो को समयसारादि पढने की अनुमति नही है तो फिर पं० जयचन्दजी, पं० टोडरमलजी आदि विद्वानों ने समयसारादि ग्रन्थों की टीकायें की व उनके उद्धहरणो के उल्लेख अपने मौलिक ग्रन्थो में किये। क्या यह सब बिना पढ़े सम्भव है ?

(ख) उनमे सम्यग्दर्शन (आत्मानुभूति) प्राप्त करने का उपदेश है तो मुख्यतया गृहस्थो को ही है, क्योंकि सम्यग्दर्शन के बिना मुनि पद तो होता ही नही।

(७) कुछ लोग अध्यात्म शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन से ही आचरण भ्रष्ट होने की आशका व्यक्त करते हैं। अतः तत्सम्बन्धी शंकाओ का निम्नानुसार समुचित समाधान किया जाना आवश्यक है:—

(क) द्रव्यानुयोग मे आत्मज्ञान शून्य बाह्याचार का निषेध अवश्य किया है, पर साथ ही सर्वत्र स्वछन्द होने का निषेध भी किया है। अतः भ्रष्ट होने की शका निर्मूल है, किन्तु सही बात जानने से सच्चा व्रती बनने की,ही सम्भावना है।

(ख) यदि कोई अज्ञानी भ्रष्ट भी हो जाय तो यदि गधा मिश्री खाने से मर जाय तो सज्जन तो मिश्री खाना छोडे नही, उसी

प्रकार कोई अज्ञानी अध्यात्म शास्त्र सुनकर भ्रष्ट हो जावे तो सभी मुमुक्षु तो अध्यात्म चर्चा बन्द करेंगे नहीं।

(ग) यदि कुछ अज्ञानियों की भ्रष्टता के डर से अध्यात्म शास्त्रो के अध्ययन-अध्यापन का निषेध करेंगे तो मूल मोक्षमार्ग का ही निषेध हो जावेगा।

पाठ-निर्देश ११

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ ५)

"तीन लोक"

आवश्यक निर्देश :—

(१) यह पाठ आचार्य उमास्वामी द्वारा लिखित महाग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र के आधार पर लिखा गया है। अत उनका परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र का परिचय देकर उसे पढने की प्रेरणा करना।

(२) तीन लोक और जम्बू द्वीप की स्थिति नक्शे के माध्यम से समझाना चाहिये। बड़ा नक्शा उपलब्ध न हो तो बोर्ड पर आवश्यक रेखाये बनाकर प्रत्येक क्षेत्र, पर्वत, नदी आदि स्थानो एवं नरक-स्वर्ग की भी स्थिति स्पष्ट करना चाहिये।

(३) छात्रो से पर्वत, नदी आदि की जानकारी नक्शा या बोर्ड के माध्यम से मूल्याकन प्रश्नोत्तरों मे ज्ञात करना चाहिये :—

(क) गगा नदी कहाँ है ?

(ख) नील पर्वत कौन-सा है ? आदि।

(४) जैन भूगोल और आधुनिक विज्ञान के खोजो के तुलनात्मक प्रश्नो मे नही उलझना चाहिये।

(५) इस पाठ का उद्देश्य जैन भूगोल का सामान्य ज्ञान देना है। अत इस पाठ पर विशेष बल देने की आवश्यकता नही। विशेष बल देने पर व्यर्थ के प्रश्न उठ खडे होते हैं।

पाठ-निर्देश १२

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ ६)

"सप्त व्यसन"

आवश्यक निर्देश :—

(१) यह पाठ कविवर पं० बनारसीदासजी रचित समयसार नाटक के आधार पर लिखा गया है। अतः कविवर बनारसीदासजी का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना तथा समयसार नाटक का सामान्य परिचय देकर पढने की प्रेरणा देना।

(२) सामान्य व्यसन की परिभाषा समझाकर फिर उसमे द्रव्य और भाव व्यसन ऐसे दो भेद करके समझाना एवं उन्हे वस्तु-निष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(३) "द्रव्य व्यसन को व्यवहार व्यसन और भाव व्यसन को निश्चय व्यसन कहते है"। इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहिए।

(४) प्रत्येक भाव व्यसन की परिभाषा समझाते समय प० बनारसीदास द्वारा लिखित छन्द की सम्बन्धित पंक्ति की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

(५) विषय को स्पष्ट करने के वाद तथा परिभाषा को तैयार करा देने के उपरान्त निम्नानुसार कुछ प्रश्नोत्तर करके विषय को हृदयंगम कराया जाय .—

प्रश्न—देह मे मगन रहना कौन-सा व्यसन है ?

उत्तर—भाव मांस खाना।

प्रश्न—दूसरों की ही बुद्धि की जाँच मे लगे रहना कौन-सा व्यसन है ?

उत्तर—भाव पर-स्त्री रमण।

प्रश्न—जंगल मे शेर आदि मारना कौन-सा व्यसन है ?

उत्तर—द्रव्य शिकार व्यसन।

प्रश्न—मोह मे पड़े रहकर आत्म-स्वरूप से अनजान बने रहना कौन-सा व्यसन है ?

उत्तर—भाव मदिरापान।

पाठ-निर्देश १६

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ १०)

"देव-शास्त्र-गुरु स्तुति"

आवश्यक निर्देश :—

(१) देव-स्तुति का अर्थ बताते समय उसमे निर्दिष्ट भ्रान्तियो के सम्बन्ध मे बोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये और उन्हे वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये। जैसे —

प्रश्न—आत्मा को चौरासी लाख योनियो मे चक्कर क्यो काटने पडते है ?

उत्तर—वीतरागी सर्वज्ञ परमात्मा की सही पहिचान न होने के कारण।

प्रश्न—भगवान की वीतरागता नही पहिचान पाने के कारण क्या गलतियाँ हुई ?

उत्तर—(क) भगवान को करुणानिधि मानकर उनके भरोसे ही पडा रहा—स्वय कुछ भी पुरुषार्थ नही किया।

(ख) यह नही जाना कि वे तो इच्छारहित स्वय मे लीन और कृतकृत्य हैं। वे किसी के भले बुरे के कर्त्ता-धर्त्ता नही है।

प्रश्न—सर्वज्ञता को नही पहिचान पाने से क्या-क्या गलतियाँ हुई ?

उत्तर—सर्वज्ञ भगवान ने बताया कि यह जगत स्वय परिणमनशील है। इसका कर्त्ता-धर्त्ता कोई नही। इस पर विश्वास नही किया और पर का कर्त्ता-धर्त्ता स्वय को मानता रहा और अपना कर्त्ता-धर्त्ता दूसरो को।

(२) जिनवाणी स्तुति का अर्थ बताते समय बोधगम्य और वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरो से यह बतलाना चाहिये कि जिन[illegible]ी के मर्म को समझने मे क्या-क्या गलतियाँ हुई ? जैसे —

(क) जिनवाणी मे अनेकान्तात्मक शुद्धात्मा क[illegible]ाद पद्धति से कथन है। उस पर तो ध्यान नही दिया और सारा समय विकथाओ मे गंवाया।

(ख) यह भी नही समझ पाये कि जिनवाणी किसे कहते है और उसमे किस बात का वर्णन है।

(ग) अभी तक राग को धर्म और धर्म को रागमय मानते रहे है और शुभ करते-करते धर्म होगा, यह जानते रहे हैं।

(३) जिनवाणी के मर्म को समझने से क्या-क्या लाभ हैं? इस प्रश्न के उत्तर मे बताना चाहिये कि जिनवाणी के मर्म को जानने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं :—

(क) धर्म राग मे नही, वीतरागता मे है।
राग मे धर्म मानना महा अधर्म है।

(ख) जिनवाणी वीतरागता की ही पोषक होती है—राग की नही।

(४) गुरु स्तुति का अर्थ समझाते समय गुरुओ मे विशेषतायें स्पष्ट करनी चाहिये। जैसे :—

सच्चे गुरु जिनवाणी के रहस्य को जानने वाले, दिन-रात आत्म-चितनरत, मृदुभाषी, निर्विकारी नग्न दिगम्बर होते हैं।

(५) उक्त सभी तथ्यो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा अच्छी तरह तैयार कराना चाहिये।

(६) "देव-शास्त्र-गुरु स्तुति" कठस्थ कराना चाहिये एव उसके सामान्यार्थ को अपने शब्दो मे व्यक्त करने की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ-निर्देश १७

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ १)

"सिद्ध पूजा"

आवश्यक निर्देश :—

(१) पूजन के छन्दो व जयमाला का अर्थ बताते समय शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ और केन्द्रीय भाव पर ध्यान दिया जाना चाहिये।

(२) पूजन मे आये विशिष्ट भावो को प्रश्नोत्तरो मे तैयार करके वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये। जैसे :—

प्रश्न—भक्त सिद्धों की शरण में क्यो आया है ?

उत्तर—सुख की चाह मे सारे जग मे घूमा पर सुख कही नही मिला, अतः अनन्त सुख प्राप्त करने वाले सिद्ध भगवान की शरण मे आया है।

प्रश्न—"भोजन से जीवन चलता है"—क्या यह मान्यता ठीक है ?

उत्तर—नही, क्योकि नरको मे भोजन विना जीवन चलता है और खाते-खाते भी मानव मरते देखे जाते हैं।

प्रश्न—"भोजन से सुख प्राप्त होता है"—क्या यह मान्यता ठीक है ?

उत्तर—नहीं, क्योकि भोजन करते हुये भी मानव दु खी देखे जाते है और सिद्ध भगवान भोजन विना भी अनत सुखी हैं।

नोट —इसी प्रकार पूजन के प्रत्येक छन्द मे से आवश्यक बोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये एव छात्रो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(३) निम्नलिखित छदो पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये –
चन्दन, अक्षत, नैवेद्य, दीप, धूप, फल।

(४) जयमाला मे वर्णित सप्त तत्त्व सम्बन्धी भूलो के बोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये और छात्रो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

पाठ-निर्देश १८

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ २)

"पूजा-विधि और फल"

आवश्यक निर्देश :—

(१) पाठ पढाते समय निम्नलिखित अशो पर विशेष ध्यान देना चाहिये तथा इनमे आगत परिभाषाओ, सिद्धान्तो और निष्कर्षों को बोधगम्य प्रश्नोत्तरो मे घर से तैयार करके लाना चाहिये तथा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये :—

(क) इष्ट देव-शास्त्र-गुरु का गुण स्तवन ही पूजा है।

(ख) अष्ट द्रव्य से पूजनीक तो वीतरागी सर्वज्ञदेव, वीतरागी मार्ग के निरूपक शास्त्र और नग्न दिगम्बर भावलिंगी गुरु ही हैं।

(ग) मिथ्यात्व राग-द्वेष आदि का अभाव करके पूर्ण ज्ञानी और सुखी होना ही इष्ट है। उसकी प्राप्ति जिसे हो गई वही इष्ट देव है।

(घ) ज्ञानी जीव लौकिक लाभ की दृष्टि से भगवान की आराधना नही करता—उसे तो सहज ही भगवान के प्रति भक्ति का भाव आता है।

(ङ) पूजा भक्ति का सच्चा लाभ तो विषय कषाय से बचना है।

(२) पूजन की विधि छात्रो को एक दिन का मन्दिर मे पूजन का कार्यक्रम रखकर प्रायोगिक रूप से बताना चाहिये।

(३) पूजन की विधियाँ देश-देश मे, प्रान्त-प्रान्त मे, यहाँ तक कि गाव-गाव मे, कुछ अलग-अलग होती हैं। अत जहा जो पद्धति प्रचलित हो, उसके विरुद्ध अध्यापक का उलझना ठीक नही है। हा, इतना ध्यान रखना चाहिये कि सचित्तादि वस्तुओ से पूजन न की जावे। पूजन की विधि शुद्धाम्नायानुसार ही हो।

(४) ज्ञानी और अज्ञानी के पूजन करने के भाव मे निम्न. अन्तर होता है :—

ज्ञानी	अज्ञानी
१ ज्ञानी विषय-कषाय से बचने के लिये पूजन करता है।	१ अज्ञानी विषय-कषाय की चाह से पूजन करता है।
२. ज्ञानी को पूजा-भक्ति का भाव सहज ही आता है।	२ अज्ञानी को पूजा-भक्ति का भाव विषय-सामग्री की प्राप्ति की कामना से आता है।

पाठ-निर्देश १६

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ ३)

"उपयोग"

आवश्यक निर्देश :—

(१) आचार्य उमास्वामी एवं उनके द्वारा रचित महाग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र के पढने की प्रेरणा देना, क्योकि यह पाठ तत्त्वार्थ सूत्र के द्वितीय अध्याय के आधार पर लिखा गया है ।

(२) उपयोग के भेद-प्रभेदो को पाठ्यपुस्तक मे पृष्ठ स० १३ पर अंकित चार्ट के अनुसार स्पष्ट करना ।

(३) उपयोग व उसके भेद-प्रभेदो की परिभाषाओ का भाव अच्छी तरह समझाने के उपरान्त उन्हें वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना ।

(४) मतिज्ञान की परिभाषा दो अपेक्षा से समझाना चाहिये.—

(क) अपने आत्मा को जानने की अपेक्षा—"पराश्रय बुद्धि को छोडकर दर्शनोपयोगपूर्वक स्वसन्मुखता से प्रगट होने वाले निज आत्मा के ज्ञान को मतिज्ञान कहते है ।"

(ख) पर पदार्थों को जानने की अपेक्षा—"इन्द्रियाँ और मन हैं निमित्त जिसमे, उस ज्ञान को मतिज्ञान कहते है ।"

(५) सुज्ञान और कुज्ञान का भेद मिथ्यात्व के कारण तथा प्रयोजनभूतता के कारण होता है—यह स्पष्ट करना चाहिये, क्योकि सम्यग्दृष्टि का सभी ज्ञान सुज्ञान है और मिथ्यादृष्टि का सभी ज्ञान कुज्ञान है । लौकिक ज्ञान कैसा भी हो, पर प्रयोजनभूत जीवादिक का सही ज्ञान हो तो ज्ञान सच्चा ही है । लौकिक ज्ञान सही होने पर भी यदि प्रयोजनभूत तत्त्वो का ज्ञान नही हो या गलत ज्ञान हो तो वह अज्ञान ही है । इस तथ्य को अच्छी तरह स्पष्ट कर देना चाहिये ।

पाठ-निर्देश २०

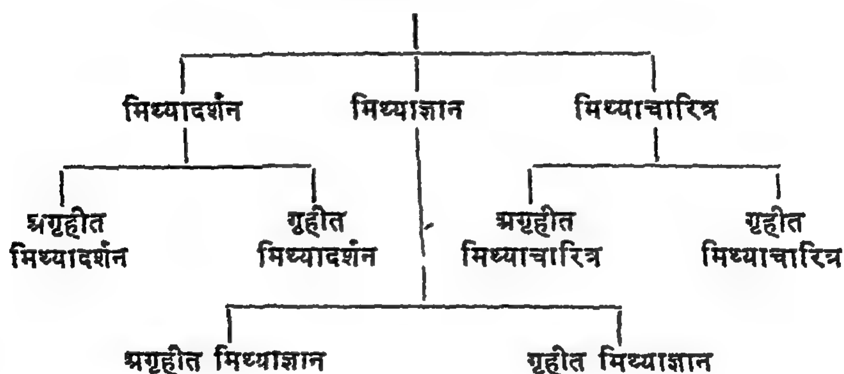
(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ ४)

"गृहीत और अगृहीत मिथ्यात्व"

आवश्यक निदश :—

(१) छहढाला और छहढालाकार पडित दौलतरामजी का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना तथा छहढाला पढने की प्रेरणा देना, क्योकि यह पाठ छहढाला की द्वितीय ढाल के आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ की स्थिति निम्नलिखित चार्ट द्वारा स्पष्ट करना :—



(३) पाठ मे आगत समस्त परिभाषाओ, सिद्धान्तो और तथ्यो को बोधगम्य प्रश्नोत्तरो मे तैयार कर लेना चाहिये और वस्तुनिष्ठ पद्धति से प्रश्नोत्तर करके छात्रो को तैयार कराना चाहिये।

(४) गृहीत और अगृहीत का भेद समझाने के लिये घी मे छाछ और घी मे डालडा आदि के उदाहरण से स्पष्ट करना चाहिये। जैसे :—

घी मे छाछ तो उसके आरम्भ काल से ही है, क्योकि घी और छाछ का तो जन्मजात सम्बन्ध है, किन्तु घी मे डालडा आदि पदार्थ बाद मे मिलाये जाते हैं, उसी प्रकार आत्मा मे अगृहीत मिथ्यात्वादि तो अनादि काल से ही हैं, किन्तु गृहीत मिथ्यात्वादि कुगुरु आदि के सयोग से यह बुद्धिपूर्वक ग्रहण करता है।

पाठ-निर्देश २१

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ ६)

"ज्ञानी श्रावक के बारह व्रत"

आवश्यक निर्देश :

(१) बारह व्रतों की स्थिति पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ नं० २६ पर अंकित चार्ट द्वारा स्पष्ट करनी चाहिये।

(२) पाठ में आगत सभी परिभाषाओ, सिद्धान्तो और तथ्यों को बोधगम्य प्रश्नोत्तरो मे तैयार कर लेना चाहिये और वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(३) निम्नलिखित व्रतो की परिभाषा समझाते समय विशेष ध्यान रखना चाहिये :—

अहिंसाणुव्रत, परिग्रह परिमाणव्रत और सामायिक शिक्षाव्रत।

क्योकि इनके समझाने मे प्राय भूल हो जाती है। जैसे—परिग्रह परिमाणव्रत समझाते समय प्राय कह देते है कि चौबीस प्रकार के परिग्रह का परिमाण कर लेना परिग्रह परिमाणव्रत है, परन्तु यह ध्यान नही रखते कि मिथ्यात्व नामक परिग्रह का परिमाण नही होता—उसका तो सर्वथा त्याग होता है।

(४) हिंसा के सकल्पी आदि चार भेद, असत्य के सत् का अपलाप आदि चार भेद भी अच्छी तरह स्पष्ट करना चाहिये।

(५) निम्नलिखित व्रतो मे परस्पर अन्तर भी बहुत सावधानीपूर्वक स्पष्ट करना चाहिये :—

(क) दिग्व्रत और देशव्रत।

(ख) परिग्रह परिमाणव्रत और भोगोपभोग परिमाणव्रत।

पाठ-निर्देश २२

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ ७)

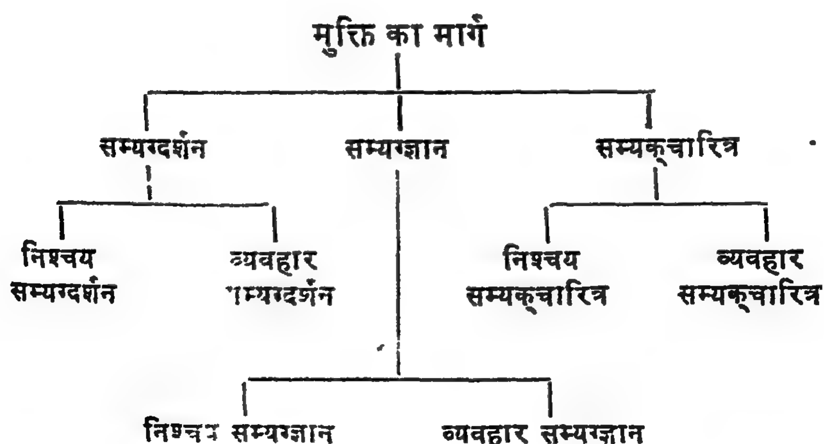
"मुक्ति का मार्ग"

आवश्यक निर्देश :—

(१) आचार्य अमृतचन्द्र और उनके द्वारा लिखित महान् ग्रन्थ पुरुषार्थसिद्ध्युपाय का परिचय छात्रो को जिज्ञासोत्पादक ढग से देना व पुरुषार्थसिद्ध्युपाय पढने की प्रेरणा देना, क्योकि यह पाठ उसके आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ मे आगत सभी परिभाषाओ, सिद्धान्तो एव विचारो को वोधगम्य प्रश्नोत्तरो मे तैयार कर लेना चाहिये एव उन्हे वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(३) मुक्तिमार्ग के भेद-प्रभेदो को निम्न चार्ट के आधार से स्पष्ट करना चाहिये :—



(४) "रत्नत्रय ही मुक्ति का मार्ग है" और "रत्नत्रय मुक्ति का ही मार्ग है"—उक्त दोनो तथ्यो पर छात्रो का ध्यान विशेष आकर्षित किया जाय।

(५) उक्त तथ्यो की स्थापना मे उत्पन्न होने वाली शंकाओ समुचित समाधान करना। जैसे :—

प्रश्न—यदि रत्नत्रय मुक्ति का ही मार्ग है तो रत्नत्रयधारी मुनिवर स्वर्ग क्यो जाते हैं ?

उत्तर—रत्नत्रय तो मुक्ति का ही कारण है, पर रत्नत्रयधारी मुनिवर शुभभाव रूप राग (अपराध) के फल से ही स्वर्ग जाते है।

प्रश्न—शुभोपयोग को अपराध क्यो कहा है ?

उत्तर—जो बन्ध का कारण हो, वह अपराध ही है।

प्रश्न—रत्नत्रय को ही मुक्ति का मार्ग क्यों कहते हैं ? रत्नत्रय के साथ होने वाले शुभराग को भी मुक्ति का मार्ग क्यो न कहे ?

उत्तर—जो बन्ध का कारण हो, वही मुक्ति का कारण कैसे हो सकता है ?

पाठ-निर्देश २३

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ ८)

"निश्चय और व्यवहार"

आवश्यक निर्देश :—

(१) आचार्यकल्प प० टोडरमलजी और उनके द्वारा लिखित ग्रन्थ मोक्षमार्ग प्रकाशक का परिचय देकर मोक्षमार्ग प्रकाशक के पढने की प्रेरणा देना चाहिये, क्योकि यह पाठ मोक्षमार्ग प्रकाशक के आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ मे आगत निश्चय और व्यवहार की निम्नलिखित तीनो परिभाषाये वस्तुनिष्ठ पद्धति से बहुत अच्छी तरह तैयार कराना चाहिये तथा अनेक उदाहरणो द्वारा उन्हे अच्छी तरह स्पष्ट करके समझाना चाहिये —

(क) सच्चे निरूपण को निश्चय कहते है और उपचरित निरूपण को व्यवहार।

(ख) एक ही द्रव्य के भाव को उस स्वरूप मे ही वर्णन करना निश्चय नय है और उपचार से उस द्रव्य के भाव को अन्य द्रव्य के भाव स्वरूप वर्णन करना व्यवहार है।

(ग) जिस द्रव्य की परिणति हो, उसको उसी की कहने वाला निश्चय नय है और उसे ही अन्य द्रव्य की कहने वाला व्यवहार नय है।

(3) "मोक्ष मार्ग दो नही है—मोक्षमार्ग का कथन दो प्रकार से है"—उक्त कथन को भली-भाति स्पष्ट करना।

(4) पाठ मे आगत निम्नलिखित अशो को विशेष स्पष्ट करना —

(क) निश्चय नय से जो निरूपण किया हो उसे सच्चा (सत्यार्थ) मानकर उसका श्रद्धान करना और व्यवहार नय से जो निरूपण किया हो उसे असत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान छोडना।

(ख) व्यवहार नय स्वद्रव्य परद्रव्य को व उनके भावो को व कारण कार्यादिक को किसी को किसी मे मिलाकर निरूपण करता है—इस प्रकार के श्रद्धान से मिथ्यात्व होता है, अत. व्यवहार नय त्याग करने योग्य है। तथा निश्चय नय उन्ही को यथावत् निरूपण करता है, किसी को किसी मे नही मिलता है—ऐसे श्रद्धान से सम्यक्त्व होता है, अत उसका श्रद्धान करना।

(5) निश्चय व्यवहार के सम्बन्ध मे उत्पन्न होने वाली निम्न शकाओ का समुचित सतोपजनक उत्तर देना —

(क) शास्त्रो मे दोनो नयो का ग्रहण करना क्यो लिखा है ?

(ख) व्यवहार को हेय कहोगे तो लोग व्रत-शील-सयमादि करना छोड देंगे ?

(ग) जिनवाणी मे व्यवहार का कथन ही क्यो किया है ?

(घ) व्यवहार निश्चय का प्रतिपादक कैसे है ?

नोट—उक्त पश्नो के सरल, सक्षिप्त व समुचित उत्तर वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३ के पृष्ठ ३८—३९ पर दिये हुये हैं तथा अध्यापको को इस सदर्भ मे मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवे अध्याय से विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहिये तथा छात्रो को उक्त प्रकरण पढने की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ-निर्देश २४

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ ६

"दशलक्षण महापर्व"

आवश्यक निर्देश –

(१) लौकिक और धार्मिक पर्वों का अन्तर पाठ-निर्देश १४ मे दिये गये चार्ट के अनुसार करना चाहिये और उसमे दशलक्षण पर्व का स्थान निर्धारित करके समझाना चाहिये।

(२) सामान्य रूप से दशलक्षण पर्व की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराके धर्म के दश भेदो के नाम तैयार कराना चाहिये।

(3) उत्तम क्षमादि प्रत्येक धर्म की परिभाषाएँ निश्चय व्यवहार की सधिपूर्वक समझाकर वस्तुनिष्ठ पद्धति मे तैयार कराना चाहिये।

(4) अनन्तानुबन्धी आदि कषायो का सामान्य परिचय छात्रो को करा देना चाहिये, क्योकि उनका प्रयोग इस पाठ मे बार-बार हुआ है। उनका भाव स्पष्ट किए बिना पाठ का भाव समझ पाना कठिन है।

(५) प्रत्येक धर्म के आगे "उत्तम" शब्द का प्रयोग होता है। "उत्तम" शब्द का अर्थ निश्चयपूर्वक है। इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये इसे बोर्ड पर लिख देना चाहिये और इसकी ओर प्रश्नोत्तरो के बीच बार-बार ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

"उत्तम—निश्चय सम्यग्दर्शनपूर्वक"

(६) "सत्य वचन बोलना सत्य धर्म नही, क्योंकि सत्य धर्म तो आत्मा का धर्म है और वचन तो पुद्गल की पर्याय है।" इस तथ्य की ओर छात्रो का ध्यान विशेष आकर्षित करना चाहिये।

(७) निश्चय धर्म और व्यवहार धर्म मे अन्तर निम्नानुसार बताना चाहिये —

निश्चय धर्म	व्यवहार धर्म
१ शुद्ध भाव।	१. शुभ भाव।
२ सवर, निर्जरा और मोक्ष का कारण।	२ पुण्याश्रव और पुण्यबध का कारण।
३. वास्तविक धर्म।	३ उपचरित धर्म।

(८) मुनियो और गृहस्थो के उत्तम क्षमादि धर्मों के बीच अन्तर निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :—

मुनियो के उत्तम क्षमादि धर्म	ज्ञानी गृहस्थो के उत्तम क्षमादि धर्म
१ अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान एव प्रत्याख्यान क्रोधादि के अभावरूप उत्तम क्षमादि धर्म।	१ अनन्तानुबन्धी क्रोधादि के अभाव-रूप या अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यान कषायादि सबधी क्रोधादि के अभाव रूप उत्तम क्षमादि धर्म।

पाठ-निर्देश २५

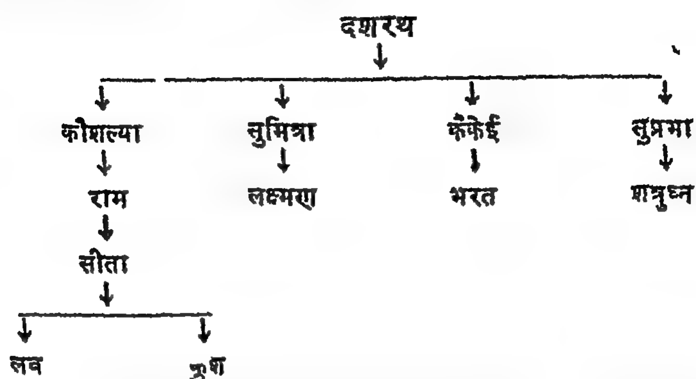
(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ १०)

"बलभद्र राम"

आवश्यक निदश :—

(१) रामकथा अति प्रसिद्ध है। छात्रो मे उसके सम्बन्ध मे पूर्वाग्रह हो सकते है। अत रामकथा बताते समय विशेष सावधानी रखनी चाहिये।

(२) पाठ मे आगत राम के पारिवारिक परिचय को निम्न चार्टानुसार स्पष्ट कर देना चाहिये .—



(३) हनुमान और रावण आदि के सबध मे प्रचलित लोक-धारणाओ का बडी ही सावधानी से सतर्क समाधान करना चाहिये। जैसे —

प्रश्न—क्या हनुमान वन्दर थे ?

उत्तर—नही, हनुमानादिक वन्दर न थे, किन्तु वानरवंशी सर्वांग सुन्दर महापुरुप थे जो आत्मोन्मुखी वृत्ति का महान पुरुषार्थ करके वीतरागी सर्वज्ञ परमात्मा वने ।

प्रश्न—हनुमानादिक को वानर क्यो कहा जाता है ?

उत्तर—वानरवशी होने से उन्हे वानर कहा जाने लगा । आज भी कई लोगो के [illegible] है, जो पशु के वाचक है। जैसे—भैसा आदि ।

प्रश्न—क्या रावण के दशमुख थे ? यदि नही, तो उसे दशमुख क्यो कहा जाता है ?

उत्तर—उसके दशमुख नही थे । एक वार-वाल्य रावण पालने मे लेटा था । उसके गले मे एक नौ मणियो का हार पडा था । उसमे उसका प्रतिविम्व पडने से उसके दशमुख दिखाई दे हे थे । उस दिन से उसे लोग दशमुख कहने लगे ।

(४) रामकथा मे जो लोक-अपरिचित व्यक्तियो के उल्लेख हुए हैं, उनके परिचय की ओर छात्रो का ध्यान प्रश्नोत्तर द्वारा विशेष

आकर्षित करना चाहिये, क्योकि लोक-परिचित प्रसिद्ध व्यक्तियो से तो प्राय: छात्र परिचित रहते ही है। जैसे :--

प्रश्न—वज्रजघ कौन थे ?

उत्तर—पुण्डरीकपुर के राजा, जिन्होंने राम के द्वारा निर्वासित गर्भवती सीता को धर्म बहिन बनाकर आश्रय दिया था।

(५) रामकथा को अपने शब्दों मे लिखने और बोलने का अभ्यास कराना।

पाठ-निर्देश २६

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३—पाठ ११)

"समयसार स्तुति"

आवश्यक निर्देश :—

(१) समयसार ग्रन्थ व उसके कर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द का परिचय छात्रों को इस प्रकार देना कि जिससे उन्हें समयसार ग्रन्थ पढने की जिज्ञासा जगे।

(२) स्तुति में आगत सिद्धान्तो, तथ्यो एव महत्त्वपूर्ण विचारो को बोधगम्य प्रश्नोत्तरो मे तैयार करके वस्तुनिष्ठ पद्धति से छात्रो को तैयार कराना जैसे :—

प्रश्न—समयसार रूपी बर्तन मे कुन्दकुन्दाचार्य ने क्या भरा ?

उत्तर—भगवान महावीर की अमृतवाणी रूपी गगा-जल।

प्रश्न—समयसार के सदुपदेश रूपी अमृतपान से क्या लाभ है ?

उत्तर—विभावो में रुकी आत्म-परिणति स्वभाव की ओर दौड पडती है।

प्रश्न—समयसार सुनने से क्या लाभ है ?

उत्तर—कर्मों का रस ढीला पड जाता है।

प्रश्न—समयसार जान लेने से क्या लाभ है ?

उत्तर—ज्ञानी का हृदय जान लिया जाता है।

प्रश्न—समयसार की रुचि करने पर क्या होता है ?

उत्तर—ससार और विषय-कषाय से रुचि हट जाती है।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर ३०२००४ (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन शिविर परीक्षा, १६७५

प्रवेशिका-प्रशिक्षण परीक्षा

प्रथम प्रश्न-पत्र (सैद्धान्तिक ज्ञान)

समय . १ घण्टा पूर्णांक : २५

१. निम्नलिखित में से किन्ही ८ की परिभाषा लिखिए :—

मोक्षतत्व, बहिरात्मा, मोहनीय कर्म, आवश्यक, सच्चा देव, जुआ व्यसन, केवलदर्शन, मतिज्ञान, सम्यग्दर्शन, निश्चयनय, परिग्रहपरिमाणव्रत।

२. निम्नलिखित में से किन्हीं ६ में अन्तर स्पष्ट कीजिए :—

(१) मध्यम अन्तरात्मा और उत्तम अन्तरात्मा।
(२) द्रव्य कर्म और भाव कर्म।
(३) सच्चा गुरु और विद्या गुरु।
(४) आस्रव और बंध तत्त्व संबंधी भूल।
(५) संवर और निर्जरा तत्त्व।
(६) द्रव्य मदिरापान और भाव मदिरापान व्यसन।
(७) ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग।
(८) दिग्व्रत और देशव्रत।

३. निम्नलिखित में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए :—

(१) रक्षाबन्धन कथा पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए।
(२) 'मैं कौन हूँ' नामक पाठ के आधार पर आत्मा का स्वरूप संक्षेप में समझाइए।
(३) "रत्नत्रय मुक्ति का ही मार्ग है" और "रत्नत्रय ही मुक्ति का मार्ग है"—स्पष्ट कीजिये।
(४) निश्चय-व्यवहार की परिभाषाएँ लिखकर उन्हें सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर ३०२००४ (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन शिविर परीक्षा, १९७५

प्रवेशिका–प्रशिक्षण परीक्षा

द्वितीय प्रश्न-पत्र (शिक्षण पद्धति)

समय . २ घण्टे पूर्णांक : २५

(१) निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए :—

(क) सामान्य उद्देश्य किसे कहते है ? वे कितने होते हैं और कौन-कौन ? ३

(ख) किन्ही तीन की परिभाषा लिखिए :—
प्रस्तुतीकरण, उद्देश्य कथन, बोधगम्य प्रश्नोत्तर, आधार परिचय। ३

(ग) किन्ही दो मे अन्तर बताइए :—

१. सामान्यार्थ विवेचन और विचार विश्लेषण।

२. समापन मूल्याकन प्रश्नोत्तर और पूर्व-पाठ मूल्याकन प्रश्नोत्तर।

३. सामान्य उद्देश्य और विशेष उद्देश्य। ४

(२) 'देव-शास्त्र-गुरु स्तुति', 'चार अनुयोग' अथवा 'अहिंसा: एक विवेचन' नामक पाठो मे से किसी एक पाठ की पाठ-योजना प्रस्तुत कीजिए। १०

(३) 'देव-स्तुति' अथवा 'मैं कौन हू ?' नामक पाठ मे से किसी एक पाठ का पाठ-निर्देश तैयार कीजिए। ५

परिशिष्ट २

(१) वीतराग में नहीं पाये जाने वाले अठारह दोष

जन्म जरा तिरखा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिन्ता स्वेद॥
रागद्वेष अरु मरणजुत, ये अष्टादश दोष।
नाहिं होत अरहन्त के, सो छवि लायक मोष॥

१. जन्म, २ जरा, ३. तृषा, ४. क्षुधा, ५. विस्मय, ६ अरति, ७ खेद, ८ रोग, ९ शोक, १०. मद, ११. मोह, १२. भय, १३ निद्रा, १४ चिन्ता, १५. स्वेद, १६. राग, १७ द्वेष, १८ मरण—ये १८ दोष वीतरागी सर्वज्ञ अरहन्त भगवान मे नही होते है।

(२) कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ

ज्ञानावरण की ५, दर्शनावरण की ९, वेदनीय की २, मोहनीय की २८, आयु की ४, नाम की ९३, गोत्र की २ और अन्तराय की ५, इस प्रकार कुल मिलाकर आठ कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ हैं—जिनका विवरण इस प्रकार है :—

ज्ञानावरण[1]

१. मतिज्ञानावरण, २ श्रुतज्ञानावरण, ३ अवधिज्ञानावरण, ४ मन.पर्ययज्ञानावरण, ५ केवलज्ञानावरण।

दर्शनावरण[2]

१. चक्षुदर्शनावरण, २. अचक्षुदर्शनावरण, ३. अवधिदर्शनावरण, ४ केवलदर्शनावरण, ५. निद्रा, ६ निद्रानिद्रा, ७. प्रचला, ८ प्रचलाप्रचला, ९ स्त्यानगृद्धि।

---

१. मतिश्रुतावधिमन पर्ययकेवलानाम्।

—तत्त्वार्थसूत्र, अ० ८ सूत्र ६

२ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च।

—तत्त्वार्थसूत्र, अ० ८ सूत्र ७

वेदनीय[1]

१. साता वेदनीय २. असाता वेदनीय ।

मोहनीय[2]

मोहनीय कर्म के मुख्य दो भेद है। १. दर्शन मोहनीय और २. चारित्र मोहनीय। उनमे दर्शन मोहनीय के ३ और चारित्र मोहनीय के २५—कुल मिलाकर २८ भेद होते हैं, जो इस प्रकार हैं :—

दर्शन मोहनीय—१. मिथ्यात्व, २. सम्यग्मिथ्यात्व, ३. सम्यक्-प्रकृति मिथ्यात्व

चारित्र मोहनीय—४. हास्य, ५ रति, ६ अरति, ७. शोक, ८ भय, ९. जुगुप्सा, १० स्त्रीवेद, ११. पुरुषवेद, १२. नपुंसकवेद, १३ से १६. अनन्तानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ, १७ से २०. प्रत्याख्यानावरण क्रोध-मान-माया-लोभ, २१ से २४. अप्रत्याख्याना-वरण क्रोध-मान-माया-लोभ, २५ से २८. संज्वलन क्रोध-मान-माया-लोभ।

आयु[3]

१. नरक आयु, २. तिर्यंच आयु, ३. मनुष्य आयु, ५. देव आयु।

नाम[4]

१ से ४. गति—नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति;

---

३. सदसद्वेद्ये ।

—तत्त्वार्थसूत्र, अ० ८ सूत्र ८

४. दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदा सम्यक्त्व मिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुं नपुंसक-वेदा अनतानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकश. क्रोधमान-मायालोभा ।

—तत्त्वार्थसूत्र, अ० ८ सूत्र ९

1 नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥ —तत्त्वार्थसूत्र, अ० ८ सूत्र १०

2 गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णा नुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतय प्रत्येकशरीर-त्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययश कीर्तिसेतराणि तीर्थंकरत्वं च ।

—तत्त्वार्थसूत्र, अ०८ सूत्र ११

५ से ९. जाति–एकेन्द्रियजाति, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रियजाति, चतुरिन्द्रियजाति, पञ्चेन्द्रिय जाति,

१० से १४. शरीर–औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण;

१५ से १७. आगोपाग–औदारिक, वैक्रियिक, तैजस,

१८. निर्माण,

१९ से २३. बन्धन–औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण;

२४ से २८ सघात–औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण,

२९ से ३४. सस्थान–समचतुरस्र सस्थान, न्यग्रोधपरिमडल सस्थान, स्वाति सस्थान, कुब्जक सस्थान, वामन सस्थान, हुण्डक सस्थान,

३५ से ४०. संहनन–वज्रवृषभनाराज संहनन, वज्रनाराच संहनन, नाराच सहनन, अर्द्धनाराच सहनन, कीलक सहनन, असप्राप्तसृपाटिका सहनन,

४१ से ४८. स्पर्श–कोमल, कठोर, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष,

४९ से ५३. रस–खट्टा, मीठा, कडुआ, कषायला, चरपरा,

५४ से ५५ गध–सुगंध, दुर्गंध,

५६ से ६०. वर्ण–काला, पीला, नीला, लाल, सफेद,

६१ से ६४. आनुपूर्व्य–नरकगत्यानुपूर्व्य तिर्यग्गत्यानुपूर्व्य, मनुष्यगत्यानुपूर्व्य, देवगत्यानुपूर्व्य,

६५. अगुरुलघु, ६६ उपघात, ६७ परघात, ६८. आतप, ६९. उद्योत, ७० उच्छ्वास, ७१ प्रशस्त विहायोगति, ७२ अप्रशस्त विहायोगति, ७३ प्रत्येक शरीर, ७४ साधारण शरीर ७५ त्रस, ७६ स्थावर, ७७ सुभग, ७८ दुर्भग, ७९ सुस्वर, ८० दुस्वर, ८१ शुभ, ८२ अशुभ, ८३. सूक्ष्म,

८४ वादर (स्थूल), ८५ पर्याप्ति, ८६ अपर्याप्ति ८७. स्थिर, ८८. अस्थिर, ८९. आदेय, ९० अनादेय, ९१. यश कीर्ति, ९२. अयशःकीर्ति, ९३ तीर्थंकर।

गोत्र[1]

१ उच्च गोत्र, २. नीच गोत्र।

अन्तराय[2]

१ दान अन्तराय, २. लाभ अन्तराय, ३. भोग अन्तराय, ४. उपभोग अन्तराय, ५. वीर्य अन्तराय।

---

1 उच्चैर्नीचैश्च ॥ —तत्त्वार्थसूत्र, अ० ८ सूत्र १२

2 दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ॥ —तत्त्वार्थसूत्र, अ० ८ सूत्र १३